पंच विधान संग्रह

लेखक व संग्रह

अष्टांग निमित्तज्ञ, मंत्र विद्या चक्रवर्ती, अभिनव पूज्यपाद

गणाधिपती गणधराचार्य कुन्थुसागरजी

श्री कलिकुण्ड चिंतामणी पार्श्वनाथ भगवान
श्री अतिशय क्षेत्र कुंथुगिरि

– ॐ ऱ्हीं नमः –

ॐ पार्श्वनाथाय नमः

सर्वे शासन देवता ये नमः

❖ पंच-विधान संग्रह ❖

-: लेखक व संग्रह :-

अष्टांग निमित्तज्ञ, मंत्र विद्या चक्रवर्ती, अभिनव पुज्यपाद

गणाधिपती गणधराचार्य कुन्थुसागरजी

विधानो के नाम

शांतिचक्र विधान, याग मंडल विधान,

नवग्रह विधान, वास्तु विधान,

गणधर वलय विधान,

गणधर वलय विधान के रचेता

आ. गुप्तिनंदीजी गुरूदेव

-: प्रकाशक :-

श्री क्षेत्र कुन्थुगिरी (आनन्द वन)

आलते जि.कोल्हापूर (महाराष्ट्र)

–:– दो शब्द –:–

ये पांच विधान पूर्वोचार्य कृत है उसमें शान्तिचक्र विधान, याग मंडल विधान, नवग्रह विधान, वास्तु विधान. ये चार विधान संस्कृत में मुर्ति प्रतिष्ठा ग्रंथो में है । गणधर वलय विधान वो भी संस्कृत और प्राकृत में है । लोगो को पढने मे विधान करने में संस्कृत होने के कारण असुविधा होती है । उच्चारण शुद्ध नही होता ।

संस्कृत में संगीत से विधान नही कर सकते, भक्तों की सुविधा के लिये चार विधान गणधराचार्य कुन्थुसागर गुरुदेवजीने हिन्दी में रचना कि है । गणधर वलय विधान की रचना आ.गुप्तिनंदीजी ने की है । ये पाचो विधान को एक जगह संग्रह रूप में किया है । भक्तो को एक ही पुस्तक में मिल जायेगा । और सुविधा हो जायेगी ।

धर्मात्मा लोग अपने स्वयं के उपर आनेवाले कष्ट के निवारण के लिए ये विधान करना चाहिए । प्रतिष्ठाचार्य विधानाचार्य इन विधानो को अवश्य उपयोग में लेवे, ताकी भक्तो का कष्ट उपद्रव मिटे । जीवन मे शान्ति आवे, सुखसमृद्धि बढे, व्यापर वृद्धी होवे. इन कारणो के लिए अवश्य लाभ उठावे । घर शुद्धी के लिये वास्तु विधान करे. दीक्षा धारण करने के पहेले गणधरवलय विधान करे ।

ये पांचो विधान आपके हाथ में है । पांचो विधानो को छपाने के लिए खर्च श्री क्षेत्र कुन्थुगिरी का है

–बा.ब्र. जयू दीदी

विधान करने की विधि

यह विधान पूर्वाचार्यों द्वारा प्रतिपादित है। इस विधान का उपदेश आशाधर जी ने अपने प्रतिष्ठा पाठ में किया है। नेमिदत्त ब्रह्चारी जी ने भी नेमिचन्द्र प्रतिष्ठा पाठ में इसे शामिल किया है। अकलंक प्रतिष्ठा पाठ, इन्द्रनन्दी प्रतिष्ठा पाठ आदि में यह विधान है। यह विधान समस्त उपद्रवों की शान्ति के लिये किसी भी दिन किया जा सकता है। विशेषतः जब वेदी प्रतिष्ठा या मन्दिर शुद्धि हो या ध्वजारोहण हो अथवा यक्ष और यक्षियों की प्रतिष्ठा करनी हो तो यह विधान करते हैं। इस विधान का नाम शान्ति चक्र विधान हैं। जब इस विधान के मूल मंत्र का, यंत्र के सामने १५० माला अर्थात् साढ़े बारह हजार जाप किया जाता है तो मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र सिद्ध होने पर पल्लवादि बदलकर शान्तिकर्म, वशीकरण आदि सभी षट्कर्म कर सकते हैं। प्रथम, मंत्र का जाप करें, इस विधान को माँडले पर माँडकर इन्द्र, इन्द्राणी व प्रतिष्ठाचार्य स्नानादिक से निवृत्त हो शुद्ध वस्त्र पहनें, मन्दिर जी में ईयापथ शुद्धि करके भगवान के दर्शन करें। सभी इन्द्र-इन्द्राणी मिलकर सकलीकरण, इन्द्रप्रतिष्ठा, मण्डल शुद्धि, पंचामृत अभिषेक, मंगलाष्टक करके जिन भगवान को मण्डल पर विराजमान करें। पूजा प्रारम्भ करें। देव शास्त्र गुरु पूजा, विधिनायक की पूजा, अन्य अर्घ्य, शान्ति चक्र विधान प्रारम्भ करें।

फिर हवन कुण्ड में जाप्य मंत्र की दशांस आहुति दें। अन्त में विसर्जन कर दें। यह विधान बहुत प्रभावी है। तत्काल कार्य सिद्ध करता है। यह विधान एक दिन में समाप्त किया जाता है। यह विधान मनोकामना को पूर्ण करता है।

शान्ति चक्र विधान मण्डल चित्र

समीर जैन 'विद्यार्थी'

शान्ति चक्र विधान पूजा

चिद्रूपं परमात्मा अरिहन्तादि देव।
मण्डल मध्य पूजिये, धर्म सदा सुख देव।।

ॐ ह्रीं परमब्रह्म यक्ष प्रतिज्ञा नायक कर्णिकान्तः। (पुष्पांजलि)

शान्ति चक्र मंडल में आओ, हे अरिहन्तादिदेव।
चतुर्णिकाय देवादि आओ, हे पूज्य हमारे देव।
आह्वान तुम्हारा हम करते जिनमन्दिर आओ आज।
सुन्दर मंडल रचना करके, हम पूजें तुमको आज।।

ॐ ह्रीं अर्हतादिक पंचपरमेष्ठी तथा चतुर्णिकाय देव शान्ति चक्र मध्यगत समस्त देवादिकेभ्यो, अत्रावतर-२ संवोषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं अर्हन्तादिक पंचपरमेष्ठी तथा चतुर्णिकाय देव शान्ति चक्र मध्यगत समस्त देवादिकेभ्यो, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अर्हन्तादिक पंचपरमेष्ठी तथा चतुर्णिकाय देव शान्ति चक्र मध्यगत समस्त देवादिकेभ्यो, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

कंचन झारी निर्मल नीर, लेकर आए प्रभु के तीर।
करें शान्ति चक्र पूजा आज, करें सब मिलकर पूजा आज।।

ॐ ह्रीं अर्हन्तादिक पंचपरमेष्ठिभ्यो चतुर्णिकाय देव शान्ति चक्र मध्यगत समस्त देवादिभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

चन्दन घिसा कपूर मिलाया, हमने प्रभु के चरण चढाया।
करें शान्ति चक्र पूजा आज, करें सब मिलकर पूजा आज।

ॐ ह्रीं अर्हन्तादिक पंचपरमेष्ठिभ्यो चतुर्णिकाय देव शान्ति चक्र मध्यगत समस्त देवादिभ्यो सुगन्धित देह प्राप्तये चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

गन्ध-सुवासित तन्दुल लाए, अक्षय सुख के हेतु आए।
करें शान्ति चक्र पूजा आज, करें सब मिलकर पूजा आज।

ॐ ह्रीं अर्हन्तादिक पंचपरमेष्ठिभ्यो चतुर्णिकाय देव शान्ति चक्र मध्यगत समस्त देवादिभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

नानाविधि है पुष्प मँगाए, प्रभु चरणों में आज चढ़ाए।
करें शान्ति चक्र पूजा आज, करें सब मिलकर पूजा आज।
ॐ ह्रीं अर्हन्तादिक पंचपरमेष्ठिभ्यो चतुर्णिकाय देव शान्ति चक्र मध्यगत समस्त देवादिभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।
लड्डू पेड़ा बर्फी लाए, क्षुधा वेदना तुरंत भगाए।
करें शान्ति चक्र पूजा आज, करें सब मिलकर पूजा आज।
ॐ ह्रीं अर्हन्तादिक पंचपरमेष्ठिभ्यो चतुर्णिकाय देव शान्ति चक्र मध्यगत समस्त देवादिभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।
दीप जलाकर लाए आज, मोह को छोड़े सर्व समाज।
करें शान्ति चक्र पूजा आज, करें सब मिलकर पूजा आज।
ॐ ह्रीं अर्हन्तादिक पंचपरमेष्ठिभ्यो चतुर्णिकाय देव शान्ति चक्र मध्यगत समस्त देवादिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।
धूप दशांगी खेओ सारे, अष्ट कर्म हों नष्ट हमारे।
करें शान्ति चक्र पूजा आज, करें सब मिलकर पूजा आज।
ॐ ह्रीं अर्हन्तादिक पंचपरमेष्ठिभ्यो चतुर्णिकाय देव शान्ति चक्र मध्यगत समस्त देवादिभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।
केला दाडिम फल हम लाए, कटे बन्ध हो मोक्ष उपाय।
करें शान्ति चक्र पूजा आज, करें सब मिलकर पूजा आज।
ॐ ह्रीं अर्हन्तादिक पंचपरमेष्ठिभ्यो चतुर्णिकाय देव शान्ति चक्र मध्यगत समस्त देवादिभ्यो महा मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।
जल चन्दन वसुद्रव्य मिलाकर, अर्घ से पूजें हृदय मिलाकर।
करें शान्ति चक्र पूजा आज, करें सब मिलकर पूजा आज।
ॐ ह्रीं अर्हन्तादिक पंचपरमेष्ठिभ्यो चतुर्णिकाय देव शान्ति चक्र मध्यगत समस्त देवादिभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

जयमाला

शान्ति चक्र मण्डल किया मन में बहु हर्षाय।
रोग शोक सब दूर करे शीघ्र शान्ति हो जाय।।
जय शान्ति चक्र मण्डल विधान, करते भविजन सब सुख गान।
यह कला महा अतिसुखकारी, करते साधन जन अधिकारी।।
देवी देव सभी सहकारी, पूर्ण करते इच्छा सारी।।
मन वांछित फल सब पाएँ, सबके दुःख दूर भगाएँ।।
भविजन सुवासित द्रव्य लाएँ, षोडश विद्या देवी आएँ।।
बत्तीस इन्द्र बनें सहारा, चौबीस यक्षों की यह धारा।।
दस दिशापाल नवग्रह आए, अनावृत पूजा हम कर पाए।।
फिर शान्तिधारा अन्त कराई, यह अन्तिम पूर्णाहुति बनाई।।
इस विधि पूजा करते जाएँ भजिवन सब सुख को पाएँ।।
अष्ट कर्म के बन्धन टूटें, जरा मरण के बन्धन छूटें।।
हों मन शान्त हमारे आज, शरण तुम्हारी आए आज।।
मन वच तन एकाग्र कर, वसुविधि अर्घ्य बनाय।
शान्ति चक्र पूजा करो, दुख सब का मिट जाए।।

ॐ ह्रीं अर्हन्तादि पंचपरमेष्ठिभ्यो चतुर्णिकाय देव शान्तिचक्र मध्यगत समस्त देवादिभ्यो जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(प्रथम कोष्ठ)

घाति कर्म का नाश कर पाया केवल ज्ञान।
हुए अर्हन्त परमात्मा, किया उपकार महान्।।
ॐ ह्रीं घाति चतुष्ट्य रहिताय अर्हन्त परमात्मने नमः, जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

अष्ट कर्म का नाश कर पाया अविचल स्थान।
हुए सिद्ध परमात्मा करें प्रणाम सुजान।।
ॐ ह्रीं अष्ट कर्म-रहिताय सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः, अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

छत्तीस मूल गुण धारकर सूरी हुए महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजते तिष्ठो प्रभुवर आन।।
ॐ ह्रीं छत्तीस मूलगुण धारक आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः, अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

द्वादशांग श्रुत के धनी, उपाध्याय ऋषिराज।
अध्ययन अध्यापन करें, हरें जीव अज्ञान।।
ॐ ह्रीं उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो नमः, जलादि अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

अट्ठाईस मूलगुण धरें सर्व साधु मुनिराज।
इनको ही शिव मिलत हैं पाएँ आतम ज्ञान।।
ॐ ह्रीं साधु परमेष्ठिभ्यो नमः, अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

मंगल है अरहंत प्रभु जग में मंगलकार।
भविजन इनको पूजते करे अमंगल हानि।।
ॐ ह्रीं अरहंत मंगलेभ्यो नमः, अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

अष्ट कर्म को चूर कर पंचमगति में जाय।
सिद्ध अब मंगल भये जग के मंगलकार।।
ॐ ह्रीं सिद्ध मंगलेभ्यो नमः, अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

साधु मंगल जगत में, करें तपस्या घोर।
अष्ट कर्म का नाश कर, जाएँ शिव की ओर।।
ॐ ह्रीं साधु मंगलेभ्यो नमः, अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

केवली से प्रतिपादित है जिन धर्म महान।
यही धर्म मंगल करो, हम सबका प्रभु आन।।

ॐ ह्रीं केवली प्रणीत धर्म मंगलेभ्यो नमः, अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।।९।।

लोकोत्तम हो जिन प्रभु, घाति किया चकचूर।
रुन्द्रादिक ने आयकर, अतिशय किया भरपूर।।

ॐ ह्रीं अर्हत लोकोत्तमेभ्यो नमः, अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।।१०।।

सिद्ध प्रभु जिनराज हैं लोक में उत्तम जान।
वसुविधि द्रव्य से पूंजते मिले मुक्ति का धाम।।

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमेभ्यो नमः, अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।।११।।

साधु जग में पूज्य हैं लोक में उत्तम जान।
अन्दर बाहर का तजे परिग्रह निश्चय जान।।

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमेभ्यो नमः, अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।।१२।।

धर्म कहा जिनराज का जग में उत्तम जान।
भविजन करें आराधन, पाएँ शान्ति महान।।

ॐ ह्रीं लोकोत्तम जिनधर्मेभ्यो नमः, अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।।१३।।

अरिहंत की शरण गहें शरण हे स्वीकार।
अन्य शरण किसकी गहें हे जग के आधार।।

ॐ ह्रीं अरहंतशरणेभ्यो नमः, अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।।१४।।

सिद्धों की जो शरण गहें सिद्ध सम बन जाएँ।
अक्षय सुख पाएँ सदा बन्धमुक्त हो जाएँ।।

ॐ ह्रीं सिद्धशरणेभ्यो नमः, अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।।१५।।

भविजन नित्य भक्ति करें, साधु शरण में जाय।
रत्नत्रय को धारकर जाएँ शिव के स्थान।।

ॐ ह्रीं साधुशरणेभ्यो नमः, अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।।१६।।

जिन धर्म ही शरण है, लाओ इसमें ध्यान।
और कोई शरण नहीं, जिनवर जग का प्राण।।

ॐ ह्रीं केवली प्रणीत धर्मशरणेभ्यो नमः, अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।।१७।।

अरिहंत आचार्य प्रभु, सूरी साधु महान।
मंगल लोकोत्तम बने, सब शरणा जान।।

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यो व मंगल लोकोत्तमादि शरणेभ्यो नमः, पूर्ण अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।।१८।। शान्तये-शान्तिधारा-परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

द्वितीय कोष्ठ

जयादि देवियों की पूजा

हे जयादि शुभ देवियो दर्शन दो आज।
मण्डल पर पूजा करें पूरण हों सब काज।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जया देवी दर्शन दो, दूर करो सब राग।
अष्ट द्रव्य से पूजकर आनन्दित हम आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे जयादेवी अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।१।।

जिनधर्म की पालक तुम, विजया है तव नाम।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, पाएँ सब सुख धाम।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे विजयादेवी अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।२।।

अजितादेवी का मनन, जीवन का आधार।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, हो भवसागर पार।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे अजितादेवी अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।३।।

तुम रक्षक अपराजिता, जिन मन्दिर तव स्थान
अष्ट द्रव्य से पूजकर, पाएँ सुख का भान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे अपराजितादेवी अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।४।।

जम्भेदेवी का यजन, करे सर्व कल्याण।
अष्ट द्रव्य से से पूजकर, करें धर्म सम्मान।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे जम्भेदेवी अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।५।।

मोहे देवी नाम को, वन्दन करते आज।
अष्ट द्रव्य से पूजकर पूरित करते काज।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे मोहेदेवी अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।६।।

स्तंभे देवी के नाम से, हो जग में प्रकाश।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, पाएँ जीवन हास।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे स्तंभे देवी अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।७।।

स्तंभिनी देवी शोभिनी, सबके पूरती काम।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, पाएँ सब सुख साम।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे स्तंभिनी देवी अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।८।।

जय विजयादि देवियाँ, अर्घ चढाएँ आज।
विघ्न हमारे शान्त हों, अर्घ चढाएँ आज।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे जयादि आठों देवियों अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

(शान्तये शान्तिधारा पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

तृतीय कोष्ठ

षोडश विद्या देवियों की पूजा

षोडश विद्या देवी को हम स्थापित करते आज यहाँ।
पुष्पांजलि समर्पण से हो जीवन निर्भय आज यहाँ।।

(मण्डलोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।)

पूजूँ रोहिणी देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।
वसुविधि द्रव्य सजाकर आए, उर में भक्ति धार के।
यह यजन हमारा कष्ट हरे, देखा मन में विचार के।
पूजूँ रोहिणी देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे रोहिणी देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।१।।

पूजूँ प्रज्ञप्ति देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।
वसुविधि द्रव्य सजाकर आए, उर में भक्ति धार के।
यह यजन हमारा कष्ट हरे, देखा मन में विचार के।
पूजूँ प्रज्ञप्ति देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे प्रज्ञप्ति देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।२।।

पूजूँ वज्रशृंखले माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।
वसुविधि द्रव्य सजाकर आए, उर में भक्ति धार के।
यह यजन हमारा कष्ट हरे, देखा मन में विचार के।
पूजूँ वज्रशृंखले माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे वज्रशृंखले देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं वलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।३।।

पूजूँ वज्रांकुशे माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।
वसुविधि द्रव्य सजाकर आए, उर में भक्ति धार के।
यह यजन हमारा कष्ट हरे, देखा मन में विचार के।
पूजूँ वज्रांकुशे माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे वज्रांकुशे देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।४।।

पूजूँ जाम्बुन देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।
वसुविधि द्रव्य सजाकर आए, उर में भक्ति धार के।
यह यजन हमारा कष्ट हरे, देखा मन में विचार के।
पूजूँ जाम्बुन देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे जाम्बुन देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।५।।

पूजूँ पुरुषदत्ते माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।
वसुविधि द्रव्य सजाकर आए, उर में भक्ति धार के।
यह यजन हमारा कष्ट हरे, देखा मन में विचार के।
पूजूँ पुरुषदत्ते माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पुरुषदते देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।६।।

पूजूँ काली देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।
वसुविधि द्रव्य सजाकर आए, उर में भक्ति धार के।
यह यजन हमारा कष्ट हरे, देखा मन में विचार के।
पूजूँ काली देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे काली देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।७।।

पूजूँ महाकाली देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।
वसुविधि द्रव्य सजाकर आए, उर में भक्ति धार के।
यह यजन हमारा कष्ट हरे, देखा मन में विचार के।
पूजूँ महाकाली देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे महाकाली देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।८।।

पूजूँ गौरी देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।
वसुविधि द्रव्य सजाकर आए, उर में भक्ति धार के।
यह यजन हमारा कष्ट हरे, देखा मन में विचार के।
पूजूँ गौरी देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे गौरी देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।६।।

पूजूँ गान्धारी देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।
वसुविधि द्रव्य सजाकर आए, उर में भक्ति धार के।
यह यजन हमारा कष्ट हरे, देखा मन में विचार के।
पूजूँ गान्धारी देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे गान्धारी देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।१०।।

पूजूँ ज्वालामालिनी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।
वसुविधि द्रव्य सजाकर आए, उर में भक्ति धार के।
यह यजन हमारा कष्ट हरे, देखा मन में विचार के।
पूजूँ ज्वालामालिनी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे ज्वालामालिनी देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।११।।

पूजूँ मानवी देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।
वसुविधि द्रव्य सजाकर आए, उर में भक्ति धार के।
यह यजन हमारा कष्ट हरे, देखा मन में विचार के।
पूजूँ मानवी देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे मानवी देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।१२।।

पूजूँ वैरोटी देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।
वसुविधि द्रव्य सजाकर आए, उर में भक्ति धार के।
यह यजन हमारा कष्ट हरे, देखा मन में विचार के।
पूजूँ वैरोटी देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे वैरोटी देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।१३।।

पूजूँ अच्युते देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।
वसुविधि द्रव्य सजाकर आए, उर में भक्ति धार के।
यह यजन हमारा कष्ट हरे, देखा मन में विचार के।
पूजूँ अच्युते देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे अच्युते देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।१४।।

पूजूँ मानसी देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।
वसुविधि द्रव्य सजाकर आए, उर में भक्ति धार के।
यह यजन हमारा कष्ट हरे, देखा मन में विचार के।
पूजूँ मानसी देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे मानसी देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।१५।।

पूजूँ महामानसी देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।
वसुविधि द्रव्य सजाकर आए, उर में भक्ति धार के।
यह यजन हमारा कष्ट हरे, देखा मन में विचार के।
पूजूँ महामानसी देवी माता, मैं पूजूँ निष्ठा भाव से।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे महामानसी देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहें, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।१६।।

षोडश विद्या देवी का अर्घ्यं करूँ मन लाकर।
रोग शोक सब दूर हों धर्म ध्यान बढ़ा कर।।

ॐ आं क्रों ह्रीं रोहिण्यादि षोडश विद्या देवीभ्यः पूर्ण अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

(शान्तये शान्तिधारा, परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चतुर्थ कोष्ठ

चौबीस शासन देवियों का पूजन

चौबीस शासन देवता किए स्थापित आज।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, क्षेम कुशल के काज।।

(चतुर्थकोष्टोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

आदि प्रभु जिन शासन की तुम यक्षी देवी हो महान्।
चक्रेश्वरी देवी कहलाती रक्षक जिन शासन की महान्।।
वसुविधि द्रव्य सजाकर लाये पूजा करने देखो आज।
रोग शोक सब मिट जाए शान्ति पाए भविजन आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे चक्रेश्वरी देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।१।।

अजितनाथ जिन शासन की तुम यक्षी देवी हो महान्।
रोहिणी देवी कहलाती रक्षक जिन शासन की महान्।।
वसुविधि द्रव्य सजाकर लाये पूजा करने देखो आज।
रोग शोक सब मिट जाए शान्ति पाए भविजन आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे रोहिणी देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।२।।

संभवनाथ जिन शासन की तुम यक्षी देवी हो महान्।
प्रज्ञप्ति देवी कहलाती रक्षक जिन शासन की महान्।।
वसुविधि द्रव्य सजाकर लाये पूजा करने देखो आज।
रोग शोक सब मिट जाए शान्ति पाए भविजन आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे प्रज्ञप्ति देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।३।।

अभिनन्दन जिन शासन की तुम यक्षी देवी हो महान्।
वज्रश्रृंखला देवी कहलाती रक्षक जिन शासन की महान्।।
वसुविधि द्रव्य सजाकर लाये पूजा करने देखो आज।
रोग शोक सब मिट जाए शान्ति पाए भविजन आज।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे वज्रश्रृंखला देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।४।।

सुमतिनाथ जिन शासन की तुम यक्षी देवी हो महान्।
पुरुषदत्ता देवी कहलाती रक्षक जिन शासन की महान्।।
वसुविधि द्रव्य सजाकर लाये पूजा करने देखो आज।
रोग शोक सब मिट जाए शान्ति पाए भविजन आज।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पुरुषदत्ता देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।५।।

पद्मप्रभु जिन शासन की तुम यक्षी देवी हो महान्।
मनोवेगा देवी कहलाती रक्षक जिन शासन की महान्।।
वसुविधि द्रव्य सजाकर लाये पूजा करने देखो आज।
रोग शोक सब मिट जाए शान्ति पाए भविजन आज।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे मनोवेगा देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।६।।

सुपार्श्वनाथ जिन शासन की तुम यक्षी देवी हो महान्।
काली देवी कहलाती रक्षक जिन शासन की महान्।।
वसुविधि द्रव्य सजाकर लाये पूजा करने देखो आज।
रोग शोक सब मिट जाए शान्ति पाए भविजन आज।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे काली देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।७।।

चन्द्रप्रभु जिन शासन की तुम यक्षी देवी हो महान्।
ज्वालामालिनी देवी कहलाती रक्षक जिन शासन की महान्।।
वसुविधि द्रव्य सजाकर लाये पूजा करने देखो आज।
रोग शोक सब मिट जाए शान्ति पाए भविजन आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे ज्वालामालिनी देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।८।।

सबके हृदय का भय हरो देवी। मनोहर अर्घ लेकर।
सुविधिनाथ की यक्षी महाकाली को पूजता हूँ अर्घ देकर।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे महाकाली देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।६।।

सबके हृदय का भय हरो देवी। मनोहर अर्घ लेकर।
शीतलनाथ की यक्षी मानवी को पूजता हूँ अर्घ देकर।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे मानवी देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।१०।।

सबके हृदय का भय हरो देवी। मनोहर अर्घ लेकर।
श्रेयांसनाथ की यक्षी गौरी को पूजता हूँ अर्घ देकर।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे गौरी देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।११।।

सबके हृदय का भय हरो देवी। मनोहर अर्घ लेकर।
वसुपूज्य की यक्षी गान्धारी को पूजता हूँ अर्घ देकर।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे गान्धारी देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।१२।।

सबके हृदय का भय हरो देवी। मनोहर अर्घ लेकर।
विमलनाथ की यक्षी वैरोटी को पूजता हूँ अर्घ देकर।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे वैरोटी देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा ।।१३।।

सबके हृदय का भय हरो देवी। मनोहर अर्घ लेकर।
अनन्तनाथ की यक्षी अनन्तमति को पूजता हूँ अर्घ देकर।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे अनन्तमति देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा ।।१४।।

सबके हृदय का भय हरो देवी। मनोहर अर्घ लेकर।
धर्मनाथ की यक्षी मानसी को पूजता हूँ अर्घ देकर।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे मानसी देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा ।।१५।।

सबके हृदय का भय हरो देवी। मनोहर अर्घ लेकर।
शान्तिनाथ की यक्षी महामानसी को पूजता हूँ अर्घ देकर।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे महामानसी देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा ।।१६।।

सबके हृदय का भय हरो देवी। मनोहर अर्घ लेकर।
कुन्थुनाथ की यक्षी जयादेवी को पूजता हूँ अर्घ देकर।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे जया देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा ।।१७।।

सबके हृदय का भय हरो देवी। मनोहर अर्घ लेकर।
अरहनाथ की यक्षी विजया को पूजता हूँ अर्घ देकर।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे विजया देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा ।।१८।।

सबके हृदय का भय हरो देवी। मनोहर अर्घ लेकर।
मल्लिनाथ की यक्षी अपराजिता को पूजता हूँ अर्घ देकर।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे अपराजिता देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा ।।१९।।

सबके हृदय का भय हरो देवी। मनोहर अर्घ लेकर।
मुनिसुव्रत की यक्षी बहुरूपिणी को पूजता हूँ अर्घ देकर।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे बहुरूपिणी देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा ।।२०।।

सबके हृदय का भय हरो देवी। मनोहर अर्घ लेकर।
नमिनाथ की यक्षी चामुण्डा को पूजता हूँ अर्घ देकर।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे चामुण्डा देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा ।।२१।।

सबके हृदय का भय हरो देवी। मनोहर अर्घ लेकर।
नेमिनाथ की यक्षी अम्बिका को पूजता हूँ अर्घ देकर।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे अम्बिका देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा ।।२२।।

सबके हृदय का भय हरो देवी। मनोहर अर्घ लेकर।
पारसनाथ की यक्षी पद्मावति को पूजता हूँ अर्घ देकर।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा ।।२३।।

सबके हृदय का भय हरो देवी। मनोहर अर्घ लेकर।
वर्द्धमान की यक्षी सिद्धायिनी को पूजता हूँ अर्घ देकर।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे सिद्धायिनी देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा ।।२४।।

चक्रेश्वरी देवियों को हम पूजते मन वचन से।
दुख दूर करते विश्व का, पूजन और मनन से।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे चक्रेश्वर्यादि चतुर्विंशति जिन शासन देवीभ्यो जलादि पूर्ण अर्घ समर्पयामि ।

(शान्तिधारा, पुष्पांजलिंक्षिपेत्)

पंचम कोष्ठ

बत्तीस इन्द्रों की पूजा

नानाविध सुमन ले कर, आये तेरे द्वार।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ जग के शान्ति काज।।

(पंचम कोष्टोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

असुरकुमार के इन्द्र सभी मिल परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से रचाऊँ पूजा मन वच तन हर्षाए!!
ॐ आं क्रों ह्रीं हे असुरकुमारेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा ।।१।।
नाग कुमार के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से रचाऊँ पूजा मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे नागकुमारेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा ।।२।।
सुपर्णकुमार के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से रचाऊँ पूजा मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे सुपर्णकुमारेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा ।।३।।
द्वीपकुमार के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से रचाऊँ पूजा मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे द्वीपेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा ।।४।।
उदधिकुमार के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से रचाऊँ पूजा मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे उदधिकुमारेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा ।।५।।
स्तनित कुमार के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से रचाऊँ पूजा मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे स्तनितकुमारेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा ।।६।।
विद्युतकुमार के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से रचाऊँ पूजा मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे विद्युतकुमारेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा ।।७।।

दिक्कुमार के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से रचाऊँ पूजा मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे दिक्कुमारेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।८।।
अग्निकुमार के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से रचाऊँ पूजा मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे अग्निकुमारेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।९।।
वातकुमार के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से रचाऊँ पूजा मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे वातकुमारेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।१०।।
किन्नर जाति के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे किन्नरेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।११।।
किम्पुरुष जाति के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे किम्पुरुषेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।१२।।
महोरग जाति के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे महोरगेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।१३।।
गंधर्व जाति के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे गंधर्वेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।१४।।
यक्ष जाति के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे यक्षेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।१५।।
राक्षस जाति के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे राक्षसेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।१६।।

भूत जाति के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे भूतेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।१७।।
पिशाच जाति के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पिशाचेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।१८।।
सोम जाति के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे सोमेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।१९।।
सूर्य जाति के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे सूर्येन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।२०।।
सोधर्म स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे सौधर्मेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।२१।।
ईशान स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे ईशानेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।२२।।
सनत स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे सनतेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।२३।।
माहेन्द्र स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे माहेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।२४।।
ब्रह्म स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे ब्रह्मेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।२५।।

आनत स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे आनतेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा ! ।२६।।
शुक्र स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे शुक्रेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा ।।२७।।
सतार स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे सतारेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा ।।२८।।
आनत स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे आनतेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा ।।२९।।
प्राणत स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे प्राणतेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा ।।३०।।
आरण स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे आरणेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा ।।३१।।
अच्युत स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे अच्युतेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा ।।३२।।
इन्द्र सभी बत्तीस की पूजा करूँ शुभ स्थान।
पूर्ण अर्घ्य अर्पित करूँ, पाऊँ सुख का स्थान।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे द्वात्रिंशत् इन्द्रसमूहेभ्य पूर्ण अर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा।

(शान्तये शान्तिधारा, परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

षष्ठ कोष्ठ

दश दिक्पाल पूजा

जूही चमेली आदि पुष्पों का मण्डल पर क्षेपण करता हूँ।
दिक्पालों का स्थापन करके शान्त उन्हें मैं करता हूँ।।
शान्तिचक्र पूजा विधान की पूजा कर हर्षित होता हूँ।
रोग शोक सब दूर रहें यह मन में इच्छा करता हूँ।।

(षष्ट वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।)

जल चन्दनादि वसुद्रव्य सजाकर पूजा करने आया आज।
इन्द्र देवता का अर्चन कर सुख शान्ति सब पालें आज।।
शान्तिचक्र पूजा विधान की पूजा कर हर्षित होता हूँ।
रोग शोक सब दूर रहें यह मन में इच्छा करता हूँ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे इन्द्रदेवता अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा ।।१।।

जल चन्दनादि वसुद्रव्य सजाकर पूजा करने आया आज।
अग्नि देवता का अर्चन कर सुख शान्ति सब पालें आज।।
शान्तिचक्र पूजा विधान की पूजा कर हर्षित होता हूँ।
रोग शोक सब दूर रहें यह मन में इच्छा करता हूँ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे अग्नये अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा ।।२।।

जल चन्दनादि वसुद्रव्य सजाकर पूजा करने आया आज।
यम देवता का अर्चन कर सुख शान्ति सब पालें आज।।
शान्तिचक्र पूजा विधान की पूजा कर हर्षित होता हूँ।
रोग शोक सब दूर रहें यह मन में इच्छा करता हूँ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे यमाय अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा ।।३।।

जल चन्दनादि वसुद्रव्य सजाकर पूजा करने आया आज।
नैऋत्य देवता का अर्चन कर सुख शान्ति सब पालें आज।।
शान्तिचक्र पूजा विधान की पूजा कर हर्षित होता हूँ।

रोग शोक सब दूर रहें यह मन में इच्छा करता हूँ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे नैऋत्य अत्रागच्छ, इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।४।।
जल चन्दनादि वसुद्रव्य सजाकर पूजा करने आया आज।
वरुण देवता का अर्चन कर सुख शान्ति सब पालें आज।।
शान्तिचक्र पूजा विधान की पूजा कर हर्षित होता हूँ।
रोग शोक सब दूर रहें यह मन में इच्छा करता हूँ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे वरुणदेवता अत्रागच्छ, इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।५।।
जल चन्दनादि वसुद्रव्य सजाकर पूजा करने आया आज।
अनिल देवता का अर्चन कर सुख शान्ति सब पालें आज।।
शान्तिचक्र पूजा विधान की पूजा कर हर्षित होता हूँ।
रोग शोक सब दूर रहें यह मन में इच्छा करता हूँ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे अनिल देवता अत्रागच्छ, इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।६।।
जल चन्दनादि वसुद्रव्य सजाकर पूजा करने आया आज।
कुबेर देवता का अर्चन कर सुख शान्ति सब पालें आज।।
शान्तिचक्र पूजा विधान की पूजा कर हर्षित होता हूँ।
रोग शोक सब दूर रहें यह मन में इच्छा करता हूँ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे कुबेराय अत्रागच्छ, इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।७।।
जल चन्दनादि वसुद्रव्य सजाकर पूजा करने आया आज।
ईशान देवता का अर्चन कर सुख शान्ति सब पालें आज।।
शान्तिचक्र पूजा विधान की पूजा कर हर्षित होता हूँ।
रोग शोक सब दूर रहें यह मन में इच्छा करता हूँ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे ईशान देवता अत्रागच्छ, इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।८।।
जल चन्दनादि वसुद्रव्य सजाकर पूजा करने आया आज।
धरणेन्द्र देवता का अर्चन कर सुख शान्ति सब पालें आज।।
शान्तिचक्र पूजा विधान की पूजा कर हर्षित होता हूँ।
रोग शोक सब दूर रहें यह मन में इच्छा करता हूँ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे धरणेन्द्र अत्रागच्छ, इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा।।९।।

जल चन्दनादि वसुद्रव्य सजाकर पूजा करने आया आज।
सोम देवता का अर्चन कर सुख शान्ति सब पालें आज।।
शान्तिचक्र पूजा विधान की पूजा कर हर्षित होता हूँ।
रोग शोक सब दूर रहें यह मन में इच्छा करता हूँ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे सोमदेव अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा।।१०।।

दश दिक्पालों हेतु यह पूर्ण अर्घ बनाऊँ।
इनकी पूंजा करके अमित शान्ति मन में पाऊँ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं, दशदिक्पाल समूहेभ्यो पूर्ण अर्घ समर्पयामि, स्वाहा।

(शान्तये शान्तिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्।)

सप्तम कोष्ठ

चौबीस यक्षों की पूजा

चौबीस तीर्थंकर के शासन में हुए यक्ष महान्।
सुमनों के अर्पण से पूजा करूँ यथा विधान।।

(सातवें वलय पर पुष्पांजलि क्षेपण करें)

आदिप्रभु के तीर्थकाल में गोमुख यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।
इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे गोमुख यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।१।।

अजित प्रभु के तीर्थकाल में महायक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।
इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे महायक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।२।।

सम्भवजिन के तीर्थकाल में त्रिमुख यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।
इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे त्रिमुखयक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा।।३।।

अभिनन्दन के तीर्थकाल में यक्षेश्वर हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।

इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे यक्षेश्वर अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा।।४।।

सुमतिनाथ के तीर्थकाल में तुम्बरु यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।
इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे तुम्बरु यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।५।।

पद्मप्रभु के तीर्थकाल में कुसुम यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।
इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे कुसुम यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।६।।

सुपार्श्वनाथ के तीर्थकाल में वरनन्दी हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।
इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे वरनन्दी यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।७।।

चन्द्रप्रभु के तीर्थकाल में श्याम यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।
इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे श्याम यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।८।।

पुष्पदंत के तीर्थकाल में अजित यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।
इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे अजित यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।६।।

शीतलनाथ के तीर्थकाल में ब्रह्मयक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।
इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे ब्रह्मयक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।१०।।

श्रेयांसनाथ के तीर्थकाल में ईश्वर यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।
इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे ईश्वर यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।११।।

वासुपूज्य के तीर्थकाल में कुमार यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।
इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे कुमार यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।१२।।

विमलनाथ के तीर्थकाल में चतुर्मुख हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।

इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे चतुर्मुख यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।१३।।

अनन्तनाथ के तीर्थकाल में पातालयक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।
इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पाताल यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।१४।।

धर्मनाथ के तीर्थकाल में किन्नर यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।
इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे किन्नर यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।१५।।

शान्तिनाथ के तीर्थकाल में गरुड यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।
इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे गुरुड यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।१६।।

कुन्थुनाथ के तीर्थकाल में गन्धर्व यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।
इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,

भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे गन्धर्व यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।१७।।

अरहनाथ के तीर्थकाल में खगेन्द्र यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।
इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे खगेन्द्र यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।१८।।

मल्लिनाथ के तीर्थकाल में कुबेर यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।
इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे कुबेर यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।१९।।

मुनिसुव्रत के तीर्थकाल में वरुण यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।
इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे वरुण यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।।२०।।

नेमिनाथ के तीर्थकाल में भृकुटी यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।
इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे भृकुटी यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा ।।२१।।

नेमीनाथ के तीर्थकाल में गोमेद यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।
इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे गोमेद यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा ।।२२।।

पार्श्वनाथ के तीर्थकाल में धरणेन्द्र यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।
इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे धरणेन्द्र यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा ।।२३।।

वर्धमान के तीर्थकाल में मातंग यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके तुमने की भक्ति महान्।
इसीलिये हम अर्घ्य सजाकर आये तव चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके सुख शान्ति सब पाएँ आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे मातंग यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा ।।२४।।

चौबीसों जिनदेव के चौबीस यक्ष हुए महान्।
पूर्ण अर्घ प्राप्त कर हरें जीव अज्ञान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं गोमुखादि चतुर्विंशति यक्षेभ्यः पूर्ण अर्घ समर्पयामि, स्वाहा।

(शान्तये शान्तिधारा, परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।)

अष्टम कोष्ठ

नवग्रह पूजा

कमल केतकी बेल चमेली श्री गुलाब के पुष्प मँगाय।
नवग्रह देवों को अर्पित करूँ, पुष्पांजलि हर्षाय।।
पुष्पांजलि समर्पण से मिटता तन मन का संताप।
मण्डल पर मिल पुष्पांजलि करो मिटे ग्रहों का ताप।।

(आठवें वलय पर पुष्पांजलि क्षेपण करें)

रविग्रह की पूजा करके तन मन में हर्षाओ रे।
पद्मप्रभु का स्मरण करके इसका कष्ट मिटाओ रे।।
वसुविधि द्रव्यों को लेकर मैं पूजा करने आया रे।
रोग शोक सब दूर हटें मन में इच्छा लाओ रे।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे रविग्रह अत्रागच्छ। इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।।१।।

सोमग्रह की पूजा करके तन मन में हर्षाओ रे।
चन्द्रप्रभु का स्मरण करके इसका कष्ट मिटाओ रे।।
वसुविधि द्रव्यों को लेकर मैं पूजा करने आया रे।
रोग शोक सब दूर हटें मन में इच्छा लाओ रे।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे सोमग्रह अत्रागच्छ। इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।।२।।

मंगलग्रह की पूजा करके तन मन में हर्षाओ रे।
वासुपूज्य का स्मरण करके इसका कष्ट मिटाओ रे।।
वसुविधि द्रव्यों को लेकर मैं पूजा करने आया रे।
रोग शोक सब दूर हटें मन में इच्छा लाओ रे।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे मंगलग्रह अत्रागच्छ। इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा।।३।।

बुद्ध की पूजा करके तन मन में हर्षाओ रे।
मल्लिनाथ का स्मरण करके इसका कष्ट मिटाओ रे।।
वसुविधि द्रव्यों को लेकर मैं पूजा करने आया रे।
रोग शोक सब दूर हटें मन में इच्छा लाओ रे।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे बुद्धग्रह अत्रागच्छ। इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।।४।।

गुरुग्रह की पूजा करके तन मन में हर्षाओ रे।
वर्द्धमान का स्मरण करके इसका कष्ट मिटाओ रे।।
वसुविधि द्रव्यों को लेकर मैं पूजा करने आया रे।
रोग शोक सब दूर हटें मन में इच्छा लाओ रे।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे गुरुग्रह अत्रागच्छ। इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।।५।।

शुक्रग्रह की पूजा करके तन मन में हर्षाओ रे।
पुष्पदन्त का स्मरण करके इसका कष्ट मिटाओ रे।।
वसुविधि द्रव्यों को लेकर मैं पूजा करने आया रे।
रोग शोक सब दूर हटें मन में इच्छा लाओ रे।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे शुक्रग्रह अत्रागच्छ। इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।।६।।

शनिग्रह की पूजा करके तन मन में हर्षाओ रे।
मुनिसुव्रत का स्मरण करके इसका कष्ट मिटाओ रे।।
वसुविधि द्रव्यों को लेकर मैं पूजा करने आया रे।
रोग शोक सब दूर हटें मन में इच्छा लाओ रे।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे शनिग्रह अत्रागच्छ। इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।।७।।

राहुग्रह की पूजा करके तन मन में हर्षाओ रे।
नेमिप्रभु का स्मरण करके इसका कष्ट मिटाओ रे।।
वसुविधि द्रव्यों को लेकर मैं पूजा करने आया रे।
रोग शोक सब दूर हटें मन में इच्छा लाओ रे।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे राहुग्रह अत्रागच्छ। इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।।८।।

केतुग्रह की पूजा करके तन मन में हर्षाओ रे।
पार्श्वप्रभु का स्मरण करके इसका कष्ट मिटाओ रे।।
वसुविधि द्रव्यों को लेकर मैं पूजा करने आया रे।
रोग शोक सब दूर हटें मन में इच्छा लाओ रे।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे केतुग्रह अत्रागच्छ। इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।।९।।

नवग्रहों की शान्ति हेतु पूरण अर्घ चढाते हैं।
सबको सुख शान्ति मिले विघ्नों को दूर भगाते हैं।।

ॐ आं क्रों नवग्रह देवताभ्यो पूर्ण अर्घ्य समर्पयामि, स्वाहा।

(शान्तये शान्तिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(मण्डल की ईशान दिशा में अनावृत यक्ष की पूजा करें)

जम्बुद्वीप के अधिपति सर्वत्र करो विहार।
जिनधर्म की सेवा करो अनावृत यक्ष उदार।।
अष्ट द्रव्य से पूजकर तुमसे माँगू विचार।
धन संपत्ति वैभव मिले सुख शान्ति विस्तार।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे जम्बुद्वीपाधिपति अनावृतयक्षदेव अत्रागच्छ। इदमर्घ्य प्रतिग्रह्यताम्, स्वाहा।

(शान्तये शान्तिधारा, परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

मंत्र जाप्य

ॐ आं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा मम सर्वोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मंत्र का सवा लाख जाप किया हो तो हवन कुण्ड में दशांश आहुति दें।

जयमाला

जय शान्ति चक्र मण्डलविधान, इसमें हैं सब देवों का स्थान।
परमेष्ठी पंच विराजमान, मंगल लोकोत्तम शरण जान।।
जयादि देवी अष्ट जान, षोडश विद्याओं का स्थान।
यक्षिणी सब चौबीस जान, इनका वर्णन किया महान।।
बत्तीस इन्द्र दश दिक्पाल, किया वर्णन इनका महान।।
जिनधर्म के रक्षक यक्ष जान, चौबीस कहे जिनमत में जान।।
नवग्रह का वर्णन है महान, अनावृत यक्ष कहे महान।
इन सबकी पूजा करो आज, भविजन के होते सारे काज।।
भवि पूजन करते भक्ति भाव, रोगादि हों जन के निष्प्रभाव।
डाकिनी शाकिनी दूर जाएँ, व्यन्तर बाधा भी नश जाएँ।।
षट् कर्म फले विधानानुसार मन्त्रादि जपते मंत्रवाद।
एकाग्र करें त्रियोगसार, सुध्यान धरें विधानानुसार।।
उससे होते सब कार्यसार मनवांछित फलते कार्यसार।
मेरा भी संकट मेटो आज, धरते ध्यान सुसार आज।।
रही भूल चूक सब करो माफ, करते कुन्थु भी गुणानुवाद।
मन वच तन से आज मैं गाऊँ गुणानुवाद।
जयमाला पूर्ण करूँ मन वांछित फल पाय।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शान्ति चक्र मण्डलेभ्यो जयमाला पूर्ण अर्घ्य समर्पयामि, स्वाहा।

(शान्तिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

इति

शान्ति चक्र विधान को लिखा पूर्वानुसार।
भाषा दोहा में किया करो भविकजनसार।।
कलयाणक सब पाँच है धर्म शास्त्रानुसार।
जिनमूर्ति और यक्षियाँ और हैं क्षेत्रपाल।।
इन सबकी हो प्रतिष्ठा करो विधानानुसार।
शान्ति चक्र मण्डल करो और सभी विधिसार।।
भाद्र शुक्ला पंचमी संवत दो हजार।
ऊपर पचास मानिये और चंद्रवार।।
उस दिन ही सम्पूर्ण किया शान्तिचक्र विधान।
राजस्थान के प्रांत में अणिन्दा क्षेत्र महान।।
पार्श्वप्रभु के चरण में पूरा हुआ विधान।
भूल चूक सब माफ हो मैं हूँ अल्पज्ञान।।
आग्रह देख क्षेमा बेटी का विधान दिया रचाय।
सब जग का कल्याण हो यही भावना भाय।।

यागमण्डल विधान करने की विधि

इस विधान हेतु इन्द्र, इन्द्राणी व प्रतिष्ठाचार्य स्नानदिक से निवृत हो शुद्ध वस्त्र पहने, मन्दिर में इर्यापथ शुद्धि करके भगवान् के दर्शन करें। वेदी पर मांडला मँाडकर तोंरण आदि से सजाएँ। इन्द्र-इन्द्राणी सकलीकरण, इन्द्र प्रतिष्ठा, मण्डप शुद्धि आदि करने के बाद पंचामृत अभिषेक करके जिन भगवान को मण्डल पर विराजमान करे। फिर सभी मिलकर देवशास्त्र-गुरु की पूजा विधिनायक पूजा करें। अन्य अर्घ चढ़ाएँ और यह विधान प्रारम्भ करें। विधान समाप्त होने पर शान्ति पाठ विसर्जन कर दें, होमादि करें।

विधान की सामग्री

सामग्री - २०० पानी नारियल या हरेफल या सुपारी, शक्ति अनुसार, १ किलो चावल, १ किलो बादाम, १ किलो छुहारा, १ किलो गोमे की चिटकी, १ किलो कोई भी मिठाई घर पर बनी हो। ५०० ग्राम सुपारी, २५० ग्राम किसमिस, २५० ग्राम काजू, २०० ग्राम बड़ी इलायची, ५० ग्राम छोटी इलायची, ५० ग्राम लौंग, हरे फल, १० फूलमाला, फूल, ५० जोड़े जनेऊ, १० ग्राम केसर, १०० ग्राम कपूर, २५० ग्राम धूप, ५०० ग्राम घी आदि।

मण्डल का सामान - ६ कलश, ६ रुपया, ६ चवन्नी, ३० गांठ हल्दी, ३० गांठ सुपारी, १० ग्राम धनिया, १० ग्राम पीली सरसों, ५०० ग्राम प्रत्येक पाँच प्रकार के रंग या पांच रंग किये चावल, ५० ग्राम पंचरंगा धागा, १०' x १०' सफेद कपड़ा मण्डल के लिये।

पंचामृत अभिषेक सामान - शुद्ध जल, दूध, दही घी, चन्दन, केसर, फलों का रस, चावल-कपूर-चन्दन का बुरादा, जावित्री इक्षुरस, सर्वोषधि, तीन पानी नारियल, हरे फल, फूल आदि।

हवन सामग्री - हवन कुण्ड, ईंट-मिट्टी से बनाएं अन्यथा जिस प्रकार का हो उससे काम चलाएं, लकड़ी चम्मच, रूई, माचिस, १० किलो लकड़ी (आम, पीपल, पलास, छाल, आकड़ा, १०० ग्राम चन्दन लकड़ी लाल व सफेद)

धूप का सामान - ५०० ग्राम चन्दन बुरादा, ५०० ग्राम बूरा, २०० ग्राम कपूर, सप्त प्रकार धान, १०० ग्राम प्रत्येक (काले तिल, जौ, मूंग, उडद, धान, रमास, ज्वार, इन सभी को मिला कर धूप तैयार करें।

सेंधा नमक, गुड्ड, काली मिर्च, जीरा, पीली सरसों, सौंठ, १०० ग्राम प्रत्येक।

शिलापट्ट, लोढी, क्षीर वृक्ष का एक पाटा, धनुष बाण, अष्टशास्त्र, आठ पताकाएँ, अष्ट मंगल द्रव्य, अंकुरे आदि।

नोट - मुख्य तौर पर यह सामग्री पाँच जोड़े की है। बाकी ज्यादा या कम हो तो घटा-बढ़ा लें। विधानाचार्य के लिए धोती, दुपट्टा नया लाकर दें।

याग मण्डल विधान मण्डल चित्र

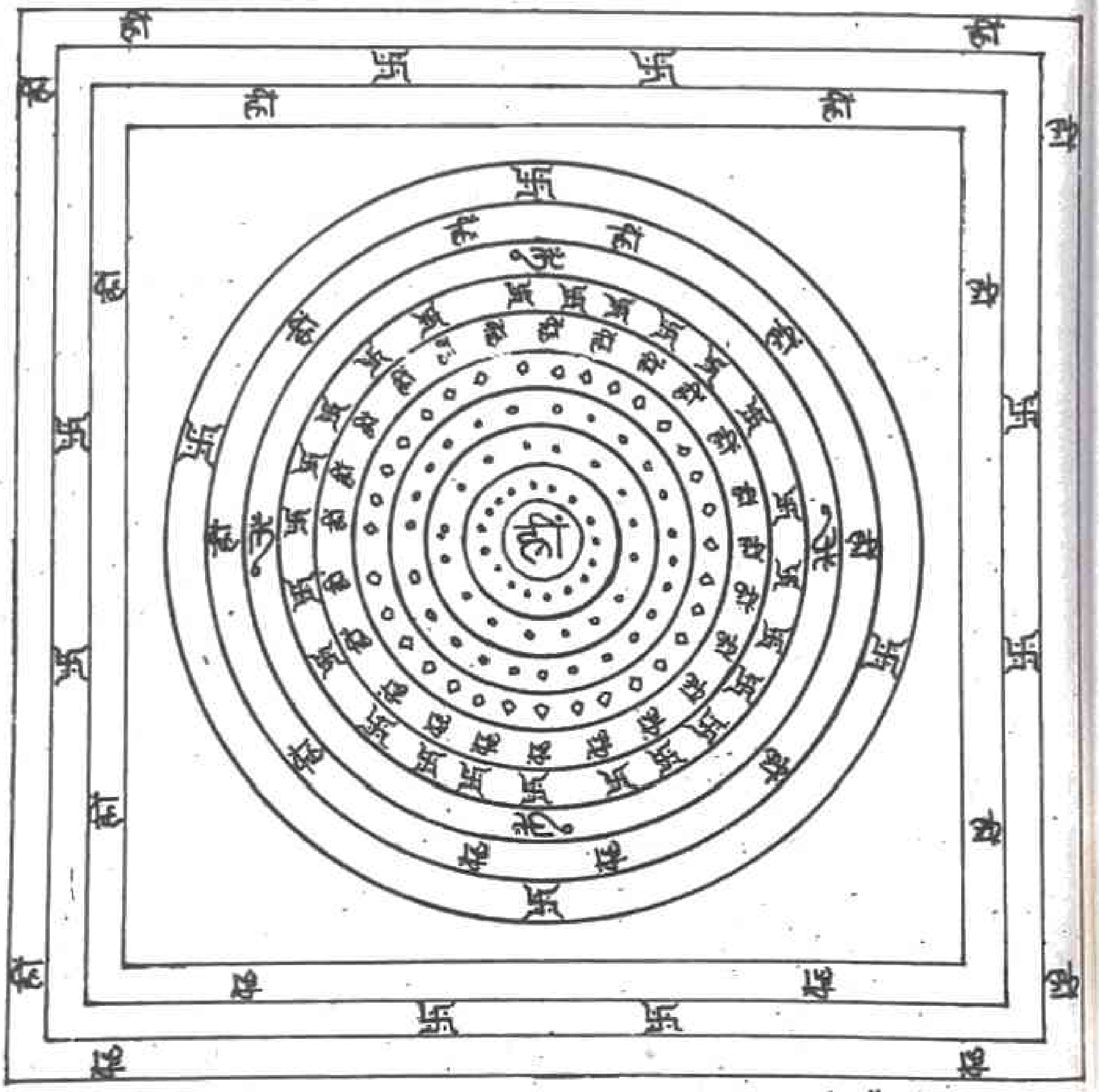

समीर जैन 'विद्यार्थी'

६

(प्रत्येक अर्घ्य)

प्रथम वलय

उस परम बीज को मूलमंत्र जिसे मैं कहता हूँ।
सब विघ्नों के नाशक को मैं पुष्प चढ़ाता हूँ।।
ॐ नमो अरिहंताणं ह्रीं स्वाहा। मूलमंत्र पूजा। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।
ऋषभ केवल ज्योति को स्मरण करूँ प्रतिदिन।
केवली मंत्र को करूँ अर्पित पुष्पांजलि प्रतिदिन।।
ॐ ह्रीं अर्ह अर्हत्सिद्ध सयोगी केवलीभ्यो स्वाहा। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।
नंद्यावर्त वलय को पुष्पांजलि चढाकर।
मन वच तन से पूजूँ पुष्पमाला चढ़ाकर।।
ॐ ह्रीं अर्ह नद्यावर्त वलयाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।
यव वलयादिक को करूँ स्थापित आज।
नानाविधि सुमनों से करूँ पुष्पांजलि आज।।
ॐ ह्रीं अर्ह यव वलयाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

याग मण्डल पूजा विधान

मंगलाचरण

नमन करूँ अरहंत को सिद्धों को करूँ प्रणाम।
सूर उवज्झाय साधु को नमूँ त्रिकाल प्रमाण।।
गुरु महावीर कीर्ति को विमल सन्मति-आचार्य।
मन वच तन से नमन करूँ मेरा हो कल्याण।
आशाधर प्रतिष्ठा शास्त्र में कहे जो जो विधान।
याग मण्डल विधान की भाषा लिखी प्रमान।।

(पीठिका)

याग मण्डल विधान में आते जो-जो देव,
उन सबकी पूजा करूँ स्थापित करूँ जिनगेह।
सुन्दर शुभ-शुभ द्रव्य को प्रासुक करो सुजान,
अष्ट द्रव्य सज्जित करो नह्वन करो भगवान।
सकलीकरण विधि से इन्द्र प्रतिष्ठा जान।

मण्डप शुद्धि भी करो ऋषि उपासना सार,
आद्य विधि विधान को करो जिनागमसार।
विघ्न आदि सब दूर हों जग में हो सुखसार,
फिर करो विधान को भक्ति भाव उर धार।
गायन वादन नृत्य से और भक्ति के साथ,
निर्ग्रन्थादि साधु को आर्यिका मण्डल साथ।
सबको क्षेपण पुष्प करो सबका करो सत्कार।

(मंडल के ऊपर पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

साधर्मीजन जितने मिलें और शब्द ब्रह्म एक,
उन सबको क्षेपण करें हम पुष्प अनेक।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पंचपरमेष्ठी पूजा

अरहंतादि सब देवता आओ मण्डल मंझार,
स्थापन कर पूजा करूँ मन में भक्ति अपार।

ॐ ह्रीं अर्ह अरहंतादि परम ब्रह्मणे, अत्र अवत्तर अवत्तर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अर्ह अरहंतादि परम ब्रह्मणे, अत्रतिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं अर्ह अरहंतादि परम ब्रह्मणे, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

कंचन झारी निर्मल नीर, प्रासुक करके भरी गंभीर,
महासुख होय, जय जय नाथ, महासुख होय।
यागमण्डल पूजा विधान पूजा करूँ मन में यह ठान,
महासुख होय, जय जय नाथ, महासुख होय।।१।।

ॐ ह्रीं यागमण्डलविधान संबंधी अर्हन्तादि परम ब्रह्मणेभ्यो, जन्म मृत्यु रोग विनाशाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन घिसो कपूर मिलाओ, अर्हन्तादि के चरण चढाओ,
महासुख होय, जय जय नाथ, महासुख होय।
यागमण्डल पूजा विधान पूजा करूँ मन में यह ठान,
महासुख होय, जय जय नाथ, महासुख होय।।२।।

ॐ ह्रीं यागमण्डलविधान संबंधी अर्हन्तादि परम ब्रह्मणेभ्यो, भव आताप विनाशाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अखंडित धोकर रख लो, सुवर्ण थाली में इनको भर लो,
महासुख होय, जय जय नाथ, महासुख होय।
यागमण्डल पूजा विधान पूजा करूँ मन में यह ठान,
महासुख होय, जय जय नाथ, महासुख होय।।३।।

ॐ ह्रीं यागमण्डलविधान संबंधी अर्हन्तादि परम ब्रह्मणेभ्यो, अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

नानाविधि के पुष्प मँगाकर, श्री जिनवर के चरण चढ़ाकर,
महासुख होय, जय जय नाथ, महासुख होय।
यागमण्डल पूजा विधान पूजा, करूँ मन में यह ठान,
महासुख होय, जय जय नाथ, महासुख होय।।४।।

ॐ ह्रीं यागमण्डलविधान संबंधी अर्हन्तादिक परम ब्रह्मणेभ्यो, कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर लड्डू बर्फी बनाकर, प्रभु के चरणों में नित्य चढाकर,
महासुख होय, जय जय नाथ, महासुख होय।
यागमण्डल पूजा विधान पूजा करूँ मन में यह ठान,
महासुख होय, जय जय नाथ, महासुख होय।।५।।

ॐ ह्रीं यागमण्डलविधान संबंधी अर्हन्तादिक परम ब्रह्मणेभ्यो, क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का दीपक नित्य जलाकर, श्री जिनवर को अर्पित कर,
महासुख होय, जय जय नाथ, महासुख होय।
यागमण्डल पूजा विधान पूजा करूँ मन में यह ठान,
महासुख होय, जय जय नाथ, महासुख होय।।६।।

ॐ ह्रीं यागमण्डलविधान संबंधी अर्हन्तादिक परम ब्रह्मणेभ्यो, मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशांगी, अग्नि जलाकर खेऊँ उसमें अति महकार,
महासुख होय, जय जय नाथ, महासुख होय।
यागमण्डल पूजा विधान पूजा करूँ मन में यह ठान,

महासुख होय, जय जय नाथ, महासुख होय।।७।।
ॐ ह्रीं यागमण्डलविधान संबंधी अर्हन्तादिक परम ब्रह्मणेभ्यो, अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल केला अमरख लाकर, श्री जिनवर को अर्पित कर,
महासुख होय, जय जय नाथ, महासुख होय।
यागमण्डल पूजा विधान पूजा करूँ मन में यह ठान,
महासुख होय, जय जय नाथ, महासुख होय।।८।।
ॐ ह्रीं यागमण्डलविधान संबंधी अर्हन्तादिक परम ब्रह्मणेभ्यो, मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आठों द्रव्य मिलाकर, श्री जिनवर को अर्पित कर,
महासुख होय, जय जय नाथ, महासुख होय।
यागमण्डल पूजा विधान पूजा करूँ मन में यह ठान,
महासुख होय, जय जय नाथ, महासुख होय।।९।।
ॐ ह्रीं यागमण्डलविधान संबंधी अर्हन्तादिक परम ब्रह्मणेभ्यो, अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(प्रथम कोष्ठ)

घाति कर्म का नाश कर पाया केवल ज्ञान।
हुए अर्हन्त परमात्मा, करो दुःख की हानि।।
ॐ ह्रीं घाति चतुष्ट्य रहिताय अर्हन्त परमात्मने नमः, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

अष्ट कर्म का नाश कर पाया अविरल स्थान।
हुए सिद्ध परमात्मा नमन करूँ त्रिकाल प्रमाण।।
ॐ ह्रीं अष्ट कर्म रहिताय सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

छत्तीस मूल गुण धारकर सूरी हुए महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजते तिष्ठो प्रभुवर आन।।
ॐ ह्रीं छत्तीस मूलगुण धारक आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

द्वादशांग श्रुत के धनी उपाध्याय ऋषिराज।
अध्ययन अध्यापन करें, हरें जीव अज्ञान।।
ॐ ह्रीं उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो नमः, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

अट्ठाईस मूलगुण धरें सर्व साधु मुनिराज।
इनको ही शिव मिलत हैं पाएँ आतम ज्ञान।।
ॐ ह्रीं साधु परमेष्ठिभ्यो नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

मंगल है अरहंत प्रभु जग में मंगलकार।
भविजन इनको पूजते करे अमंगल हानि।।
ॐ ह्रीं अरहंत मंगलेभ्यो नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

अष्ट कर्म को चूर कर पंचमगति में जाय।
सिद्ध प्रभु मंगल भये जग के मंगलकार।।
ॐ ह्रीं सिद्ध मंगलेभ्यो नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

साधु मंगल जगत में, करें तपस्या घोर।
अष्ट कर्म का नाश कर, जाएँ शिव की ओर।।
ॐ ह्रीं साधु मंगलेभ्यो नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

केवली से प्रतिपादित है जिन धर्म महान।
यही धर्म मंगल करो हम सबका प्रभु आन।।

ॐ ह्रीं केवली प्रणीत धर्म मंगलेभ्यो नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।६।।

लोकोत्तम हो जिन प्रभु, घाति किया चकचूर।
इन्द्रादिक ने आयकर, अतिशय किया भरपूर।।

ॐ ह्रीं अर्हंत लोकोत्तमेभ्यो नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१०।।

सिद्ध प्रभु जिनराज हैं लोक में उत्तम जान।
वसुविधि द्रव्य से पूजते मिले मुक्ति का धाम।।

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमेभ्यो नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।११।।

साधु जग में पूज्य हैं लोक में उत्तम जान।
अन्दर बाहर का तजें परिग्रह निश्चय जान।।

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमेभ्यो नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१२।।

धर्म कहा जिनराज का जग में उत्तम जान।
भविजन करें आराधन, पाएँ शान्ति महान।।

ॐ ह्रीं लोकोत्तम जिनधर्मेभ्यो नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१३।।

अरिहंत की मैं शरण हूँ अशरण शरणाधार।
अन्य शरण किसकी गहूँ हे जग के आधार।।

ॐ ह्रीं अरहंतशरणेभ्यो नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१४।।

सिद्धों की जो शरण गहे सिद्ध सम बन जाय।
अक्षय सुख पाए सदा मरण रहित हो जाय।।

ॐ ह्रीं सिद्धशरणेभ्यो नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१५।।

भविजन नित्य ही आयकर, साधु शरण में जाय।
रत्नत्रय को पालकर शिवस्थिति वह पाय।।

ॐ ह्रीं साधुशरणेभ्यो नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१६।।

जिन धर्म ही शरण है इस जग में महान।
और कोई शरण नहीं देवे कौन सहाय।।

ॐ ह्रीं केवली प्रणीत धर्मशरणेभ्यो नमः, अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१७।।

अरिहंत सिद्ध आचार्य प्रभु उवज्झाय साधु महान।
मंगल लोकोत्तम कहे सदा सब शरणा जान।।

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यो व मंगल लोकोत्तमादि शरणेभ्यो नमः, पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१८।। शान्तये-शान्तिधारा-परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

द्वितीय कोष्ठ

षोडश विद्या देवियों की पूजा

षोडश विद्या देवी को हम स्थापित करते आज यहाँ।
पुष्पांजलि समर्पण से हो जीवन निर्भय आज यहाँ।।

मण्डलोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पूजूँ भाव से श्री रोहिणी देवी माँ, पूजूँ भाव से,
वसुविधि द्रव्य सजाकर, गुण गाकर भाव भक्ति उरधार,
यजन तुम्हारा सब कष्ट हरे, मन में पाऊँ शान्ति अपार।
पूजूँ भाव से श्री रोहिणी देवी माँ, पूजूँ भाव से।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे रोहिणी देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।१।।

पूजूँ भाव से श्री प्रज्ञप्ति देवी माँ, पूजूँ भाव से,
वसुविधि द्रव्य सजाकर, गुण गाकर भाव भक्ति उरधार,
यजन तुम्हारा सब कष्ट हरे, मन में पाऊँ शान्ति अपार।
पूजूँ भाव से श्री प्रज्ञप्ति देवी माँ, पूजूँ भाव से।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे प्रज्ञप्ति देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।२।।

पूजूँ भाव से श्री वज्रशृंखले माँ, पूजूँ भाव से,
वसुविधि द्रव्य सजाकर, गुण गाकर भाव भक्ति उरधार,
यजन तुम्हारा सब कष्ट हरे, मन में पाऊँ शान्ति अपार।
पूजूँ भाव से श्री वज्रशृंखले माँ, पूजूँ भाव से।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे वज्रशृंखले देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।३।।

पूजूँ भाव से श्री वज्रांकुशे माँ, पूजूँ भाव से,
वसुविधि द्रव्य सजाकर, गुण गाकर भाव भक्ति उरधार,
यजन तुम्हारा सब कष्ट हरे, मन में पाऊँ शान्ति अपार।
पूजूँ भाव से श्री वज्रांकुशे माँ, पूजूँ भाव से।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे वज्रांकुशे देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।४।।

पूजूँ भाव से श्री जाम्बुन देवी माँ, पूजूँ भाव से,
वसुविधि द्रव्य सजाकर, गुण गाकर भाव भक्ति उरधार,
यजन तुम्हारा सब कष्ट हरे, मन में पाऊँ शान्ति अपार।
पूजूँ भाव से श्री जाम्बुन देवी माँ, पूजूँ भाव से।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे जाम्बुन देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।५।।

पूजूँ भाव से श्री पुरुषदते माँ, पूजूँ भाव से,
वसुविधि द्रव्य सजाकर, गुण गाकर भाव भक्ति उरधार,
यजन तुम्हारा सब कष्ट हरे, मन में पाऊँ शान्ति अपार।
पूजूँ भाव से श्री पुरुषदते माँ, पूजूँ भाव से।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पुरुषदते देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।६।।

पूजूँ भाव से श्री काली देवी माँ, पूजूँ भाव से,
वसुविधि द्रव्य सजाकर, गुण गाकर भाव भक्ति उरधार,
यजन तुम्हारा सब कष्ट हरे, मन में पाऊँ शान्ति अपार।
पूजूँ भाव से श्री काली देवी माँ, पूजूँ भाव से।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे काली देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।७।।

पूजूँ भाव से श्री महाकाली देवी माँ, पूजूँ भाव से,
वसुविधि द्रव्य सजाकर, गुण गाकर भाव भक्ति उरधार,
यजन तुम्हारा सब कष्ट हरे, मन में पाऊँ शान्ति अपार।
पूजूँ भाव से श्री महाकाली देवी माँ, पूजूँ भाव से।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे महाकाली देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।८।।

पूजूँ भाव से श्री गौरी देवी माँ, पूजूँ भाव से,
वसुविधि द्रव्य सजाकर, गुण गाकर भाव भक्ति उरधार,
यजन तुम्हारा सब कष्ट हरे, मन में पाऊँ शान्ति अपार।
पूजूँ भाव से श्री गौरी देवी माँ, पूजूँ भाव से।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे गौरी देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।६।।

पूजूँ भाव से श्री गान्धारी देवी माँ, पूजूँ भाव से,
वसुविधि द्रव्य सजाकर, गुण गाकर भाव भक्ति उरधार,
यजन तुम्हारा सब कष्ट हरे, मन में पाऊँ शान्ति अपार।
पूजूँ भाव से श्री गान्धारी देवी माँ, पूजूँ भाव से।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे गान्धारी देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।१०।।

पूजूँ भाव से श्री ज्वालमालिनी माँ, पूजूँ भाव से,
वसुविधि द्रव्य सजाकर, गुण गाकर भाव भक्ति उरधार,
यजन तुम्हारा सब कष्ट हरे, मन में पाऊँ शान्ति अपार।
पूजूँ भाव से श्री ज्वालामालिनी माँ, पूजूँ भाव से।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे ज्वालामालिनी देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा।।११।।

पूजूँ भाव से श्री मानवी देवी माँ, पूजूँ भाव से,
वसुविधि द्रव्य सजाकर, गुण गाकर भाव भक्ति उरधार,
यजन तुम्हारा सब कष्ट हरे, मन में पाऊँ शान्ति अपार।
पूजूँ भाव से श्री मानवी देवी माँ, पूजूँ भाव से।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे मानवी देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा ।।१२।।

पूजूँ भाव से श्री वैरोटी देवी माँ, पूजूँ भाव से,
वसुविधि द्रव्य सजाकर, गुण गाकर भाव भक्ति उरधार,
यजन तुम्हारा सब कष्ट हरे, मन में पाऊँ शान्ति अपार।
पूजूँ भाव से श्री वैरोटी देवी माँ, पूजूँ भाव से।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे वैरोटी देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा ।।१३।।

पूजूँ भाव से श्री अच्युते देवी माँ, पूजूँ भाव से,
वसुविधि द्रव्य सजाकर, गुण गाकर भाव भक्ति उरधार,
यजन तुम्हारा सब कष्ट हरे, मन में पाऊँ शान्ति अपार।
पूजूँ भाव से श्री अच्युते देवी माँ, पूजूँ भाव से।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे अच्युते देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा ।।१४।।

पूजूँ भाव से श्री मानसी देवी माँ, पूजूँ भाव से,
वसुविधि द्रव्य सजाकर, गुण गाकर भाव भक्ति उरधार,
यजन तुम्हारा सब कष्ट हरे, मन में पाऊँ शान्ति अपार।
पूजूँ भाव से श्री मानसी देवी माँ, पूजूँ भाव से।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे मानसी देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा ।।१५।।

पूजूँ भाव से श्री महामानसी देवी माँ, पूजूँ भाव से,
वसुविधि द्रव्य सजाकर, गुण गाकर भाव भक्ति उरधार,
यजन तुम्हारा सब कष्ट हरे, मन में पाऊँ शान्ति अपार।
पूजूँ भाव से श्री महामानसी देवी माँ, पूजूँ भाव से।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे महामानसी देवि, अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां-२ स्वाहा ।।१६।।

षोडश विद्या देवी का अर्घ्यं करूँ मन लाकर।
रोग शोक सब दूर हों धर्म ध्यान बढ़ा कर।।

ॐ आं क्रों ह्रीं रोहिण्यादि षोडश विद्या देवीभ्यः पूर्ण अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

(शान्तये शान्तिधारा, परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

तृतीय कोष्ठ

चौबीस तीर्थंकरों की माताओं की पूजा

आदिनाथ की माता का मरुदेवी है नाम,
अष्ट द्रव्य से पूजूँ सिद्ध हों सब काम।
ॐ ह्रीं मरुदेव्यै नमः, अर्घ्य।।१।।
अजितनाथ की माता का विजयसेना है नाम,
अष्ट द्रव्य से पूजूँ सिद्ध हों सब काम।
ॐ ह्रीं विजयसेनायै नमः, अर्घ्य।।२।।
सम्भवनाथ की माता का सुसेना है नाम,
अष्ट द्रव्य से पूजूँ सिद्ध हों सब काम।
ॐ ह्रीं सुसेनायै नमः, अर्घ्य।।३।।
अभिनन्दन की माता का सिद्धार्था है नाम,
अष्ट द्रव्य से पूजूँ सिद्ध हों सब काम।
ॐ ह्रीं सिद्धार्थायै नमः, अर्घ्य।।४।।
सुमतिनाथ की माता का मंगला है नाम,
अष्ट द्रव्य से पूजूँ सिद्ध हों सब काम।
ॐ ह्रीं मंगलायै नमः, अर्घ्य।।५।।
पद्मप्रभु की माता का सुसीमा है नाम,
अष्ट द्रव्य से पूजूँ सिद्ध हों सब काम।
ॐ ह्रीं सुसीमायै नमः, अर्घ्य।।६।।
सुपार्श्व नाथ की माता का पृथ्वीदेवी है नाम,
अष्ट द्रव्य से पूजूँ सिद्ध हों सब काम।
ॐ ह्रीं पृथ्वी देव्यै नमः, अर्घ्य।।७।।
चन्द्रप्रभु की माता का सुलक्षणा है नाम,
अष्ट द्रव्य से पूजूँ सिद्ध हों सब काम।
ॐ ह्रीं सुलक्षणायै नमः, अर्घ्य।।८।।

पुष्पदन्त की माता का रमादेवी है नाम,
अष्ट द्रव्य से पूजूँ सिद्ध हों सब काम।
ॐ ह्रीं रमादेव्यै नमः, अर्घ्यं।।९।।
शीतलनाथ की माता का सुनन्दा देवी है नाम,
अष्ट द्रव्य से पूजूँ सिद्ध हों सब काम।
ॐ ह्रीं सुनन्दायै नमः, अर्घ्यं।।१०।।
श्रेयांसनाथ की माता का विमला देवी है नाम,
अष्ट द्रव्य से पूजूँ सिद्ध हों सब काम।
ॐ ह्रीं विमलायै नमः, अर्घ्यं।।११।।
वासुपूज्य की माता का विजया देवी है नाम,
अष्ट द्रव्य से पूजूँ सिद्ध हों सब काम।
ॐ ह्रीं विजयायै नमः, अर्घ्यं।।१२।।
श्यामा देवी मात हमारी मेरा दुःख दूर करो,
भव सिन्धु में डूब रहा हूँ मेरा अब उद्धार करो।
विमलनाथ की माता तुम हो तुमने जग उद्धार किया,
तीर्थंकर सा पुत्र जनकर धर्म तीर्थ है चला दिया।
ॐ ह्रीं श्यामायै नमः, अर्घ्यं।।१३।।
सुरजा देवी मात हमारी मेरा दुःख दूर करो,
भव सिन्धु में डूब रहा हूँ मेरा अब उद्धार करो।
अनन्तनाथ की माता तुम हो तुमने जग उद्धार किया,
तीर्थंकर सा पुत्र जनकर धर्म तीर्थ है चला दिया।
ॐ ह्रीं सुरजादेव्यै नमः, अर्घ्यं।।१४।।
सुव्रता देवी मात हमारी मेरा दुःख दूर करो,
भव सिन्धु में डूब रहा हूँ मेरा अब उद्धार करो।
धर्मनाथ की माता तुम हो तुमने जग उद्धार किया,
तीर्थंकर सा पुत्र जनकर धर्म तीर्थ है चला दिया।
ॐ ह्रीं सुव्रतायै नमः, अर्घ्यं।।१५।।

ऐरा देवी मात हमारी मेरा दुःख दूर करो,
भव सिन्धु में डूब रहा हूँ मेरा अब उद्धार करो।
शान्तिनाथ की माता तुम हो तुमने जग उद्धार किया,
तीर्थंकर सा पुत्र जनकर धर्म तीर्थ है चला दिया।
ॐ ह्रीं ऐरादेव्यै नमः, अर्घ्यं।।१६।।
श्रीमती देवी मात हमारी मेरा दुःख दूर करो,
भव सिन्धु में डूब रहा हूँ मेरा अब उद्धार करो।
कुन्थुनाथ की माता तुम हो तुमने जग उद्धार किया,
तीर्थंकर सा पुत्र जनकर धर्म तीर्थ है चला दिया।
ॐ ह्रीं श्रीमत्यै नमः, अर्घ्यं।।१७।।
मित्रा देवी मात हमारी मेरा दुःख दूर करो,
भव सिन्धु में डूब रहा हूँ मेरा अब उद्धार करो।
अरहनाथ की माता तुम हो तुमने जग उद्धार किया,
तीर्थंकर सा पुत्र जनकर धर्म तीर्थ है चला दिया।
ॐ ह्रीं मित्रादेव्यै नमः, अर्घ्यं।।१८।।
प्रज्ञावती देवी मात हमारी मेरा दुःख दूर करो,
भव सिन्धु में डूब रहा हूँ मेरा अब उद्धार करो।
मल्लिनाथ की माता तुम हो तुमने जग उद्धार किया,
तीर्थंकर सा पुत्र जनकर धर्म तीर्थ है चला दिया।
ॐ ह्रीं प्रज्ञावत्यै नमः, अर्घ्यं।।१६।।
श्यामा देवी मात हमारी मेरा दुःख दूर करो,
भव सिन्धु में डूब रहा हूँ मेरा अब उद्धार करो।
मुनिसुव्रत की माता तुम हो तुमने जग उद्धार किया,
तीर्थंकर सा पुत्र जनकर धर्म तीर्थ है चला दिया।
ॐ ह्रीं श्यामादेव्यै नमः, अर्घ्यं।।२०।।
विपुला देवी मात हमारी मेरा दुःख दूर करो,
भव सिन्धु में डूब रहा हूँ मेरा अब उद्धार करो।

नमिनाथ की माता तुम हो तुमने जग उद्धार किया,
तीर्थंकर सा पुत्र जनकर धर्म तीर्थ है चला दिया।
ॐ ह्रीं विपुलादेव्यै नमः, अर्घ्य।।२१।।

शिवा देवी मात हमारी मेरा दुःख दूर करो,
भव सिन्धु में डूब रहा हूँ मेरा अब उद्धार करो।
नेमिनाथ की माता तुम हो तुमने जग उद्धार किया,
तीर्थंकर सा पुत्र जनकर धर्म तीर्थ है चला दिया।
ॐ ह्रीं शिवादेव्यै नमः, अर्घ्य।।२२।।

वामा देवी मात हमारी मेरा दुःख दूर करो,
भव सिन्धु में डूब रहा हूँ मेरा अब उद्धार करो।
पारसनाथ की माता तुम हो तुमने जग उद्धार किया,
तीर्थंकर सा पुत्र जनकर धर्म तीर्थ है चला दिया।
ॐ ह्रीं वामादेव्यै नमः, अर्घ्य।।२३।।

त्रिशला देवी मात हमारी मेरा दुःख दूर करो,
भव सिन्धु में डूब रहा हूँ मेरा अब उद्धार करो।
महावीर की माता तुम हो तुमनें जग उद्धार किया,
तीर्थंकर सा पुत्र जनकर धर्म तीर्थ है चला दिया।
ॐ ह्रीं त्रिशलादेव्यै नमः, अर्घ्य।।२४।।

चौबीस तीर्थंकर की जननी हो विश्वेश्वरी कहलाती हो,
धर्म तीर्थ की दाता तुम हो जगदम्बा कहलाती हो।
तीर्थंकर सा पुत्र देकर तीर्थों की दाता कहलाती हो।
अष्ट द्रव्य से पूजा करता पूर्ण अर्घ चढ़ाता हूँ।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर मातृकेभ्यो नमः, पूर्ण अर्घ्य।

(शान्तये शान्तिधारा, परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चतुर्थ कोष्ठ

बत्तीस इन्द्रों की पूजा

नानाविध के सुमन ले, आया हूँ तव द्वार।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ करो जगत उद्धार।।

(चौथे कोष्ठ पर पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

असुरकुमार के इन्द्र आदि मिल परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से रचाऊँ पूजा मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे असुरकुमारेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।१।।
नाग कुमार के इन्द्र आदि मिल परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से रचाऊँ पूजा मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे नागकुमारेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।२।।
सुपर्णकुमार के इन्द्र आदि मिल परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से रचाऊँ पूजा मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे सुपर्णकुमारेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।३।।
द्वीपकुमार के इन्द्र आदि मिल परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से रचाऊँ पूजा मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे द्वीपकुमारेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।४।।
उदधिकुमार के इन्द्र आदि मिल परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से रचाऊँ पूजा मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे उदधिकुमारेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।५।।
स्तनित कुमार के इन्द्र आदि मिल परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से रचाऊँ पूजा मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे स्तनितकुमारेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।६।।
विद्युतकुमार के इन्द्र आदि मिल परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से रचाऊँ पूजा मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे विद्युतकुमारेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।७।।

दिक्कुमार के इन्द्र आदि मिल परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से रचाऊँ पूजा मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे दिक्कुमारेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।८।।
अग्निकुमार के इन्द्र आदि मिल परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से रचाऊँ पूजा मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे अग्निकुमारेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।९।।
वातकुमार के इन्द्र आदि मिल परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से रचाऊँ पूजा मन वच तन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे वातकुमारेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।१०।।
किन्नर जाति के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके तन मन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे किन्नरेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।११।।
किम्पुरुष जाति के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके तन मन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे किंपुरुषेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।१२।।
महोरग जाति के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके तन मन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे महोरगेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।१३।।
गंधर्व जाति के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके तन मन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे गंधर्वेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।१४।।
यक्ष जाति के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके तन मन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे यक्षेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।१५।।
राक्षस जाति के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके तन मन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे राक्षसेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।१६।।

भूत जाति के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके तन मन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे भूतेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्य समर्पयामि स्वाहा ।।१७।।
पिशाच जाति के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके तन मन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पिशाचेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्य समर्पयामि स्वाहा ।।१८।।
सोम जाति के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके तन मन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे सोमेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्य समर्पयामि स्वाहा ।।१९।।
सूर्य जाति के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके तन मन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे सूर्येन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्य समर्पयामि स्वाहा ।।२०।।
सोधर्म स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके तन मन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे सौधर्मेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्य समर्पयामि स्वाहा ।।२१।।
ऐशान स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके तन मन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे ऐशानेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्य समर्पयामि स्वाहा ।।२२।।
सनत स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके तन मन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे सनतेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्य समर्पयामि स्वाहा ।।२३।।
माहेन्द्र स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके तन मन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे माहेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्य समर्पयामि स्वाहा ।।२४।।
ब्रह्म स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके तन मन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे ब्रह्मेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्य समर्पयामि स्वाहा ।।२५।।

आनत स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके तन मन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे आनतेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।।२६।।
शुक्र स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके तन मन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे शुक्रेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।।२७।।
सतार स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके तन मन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे सतारेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।।२८।।
आनत स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके तन मन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे आनतेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।।२९।।
प्राणत स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके तन मन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे प्राणतेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।।३०।।
आरण स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके तन मन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे आरणेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।।३१।।
अच्युत स्वर्ग के इन्द्र आदि परिवार सहित जो आए।
अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा करके तन मन हर्षाए।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे अच्युतेन्द्र अत्रागच्छ-इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।।३२।।
पूजा इन्द्र बत्तीस की करके यथा विधान।
समर्पित पूर्ण अर्घ्य कर पाऊँ सुख का स्थान।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे द्वात्रिंशत् इन्द्रसमूहेभ्य पूर्ण अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

(शान्तये शान्तिधारा, परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पंचम कोष्ठ

चौबीस यक्षों की पूजा

चौबीस तीर्थंकर के शासन में यक्ष हुए चौबीस।
अलग-अलग पूजा करूँ पुष्पांजलि धर शीश।।

(पाँचवें वलय पर पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

आदिप्रभु के तीर्थकाल में गोमुख यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके भक्ति की तुमने महान्।
आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में हैं आज,
भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे गोमुख यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।१।।

अजित प्रभु के तीर्थकाल में महायक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके भक्ति की तुमने महान्।
आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे महायक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।२।।

सम्भवजिन के तीर्थकाल में त्रिमुख यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके भक्ति की तुमने महान्।
आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे त्रिमुखयक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्य समर्पयामि स्वाहा।।३।।

अभिनन्दन के तीर्थकाल में यक्षेश्वर हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके भक्ति की तुमने महान्।

आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे यक्षेश्वर अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।४।।

सुमतिनाथ के तीर्थकाल में तुम्बरु यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके भक्ति की तुमने महान्।
आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे तुम्बरु यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।५।।

पद्मप्रभु के तीर्थकाल में कुसुम यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके भक्ति की तुमने महान्।
आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे कुसुम यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।६।।

सुपार्श्वनाथ के तीर्थकाल में वरनन्दी हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके भक्ति की तुमने महान्।
आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे वरनन्दी यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।७।।

चन्द्रप्रभु के तीर्थकाल में श्याम यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके भक्ति की तुमने महान्।
आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे श्याम यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।८।।

पुष्पदंत के तीर्थकाल में अजित यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके भक्ति की तुमने महान्।
आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे अजित यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्य प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।६।।

शीतलनाथ के तीर्थकाल में ब्रह्मयक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके भक्ति की तुमने महान्।
आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे ब्रह्मयक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्य प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।१०।।

श्रेयांसनाथ के तीर्थकाल में ईश्वर यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके भक्ति की तुमने महान्।
आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे ईश्वर यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।११।।

वासुपूज्य के तीर्थकाल में कुमार यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके भक्ति की तुमने महान्।
आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे कुमार यक्ष अत्रागच्छ; इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।१२।।

विमलनाथ के तीर्थकाल में चतुर्मुख हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके भक्ति की तुमने महान्।

आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे चतुर्मुख यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।१३।।

अनन्तनाथ के तीर्थकाल में पातालयक्ष हुए हैं महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके भक्ति की तुमने महान्।
आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पाताल यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।१४।।

धर्मनाथ के तीर्थकाल में किन्नर यक्ष हुए हैं महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके भक्ति की तुमने महान्।
आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे किन्नर यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।१५।।

शान्तिनाथ के तीर्थकाल में गरुड़ यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके भक्ति की तुमने महान्।
आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में हैं आज,
भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे गरुड यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।१६।।

कुन्थुनाथ के तीर्थकाल में गन्धर्व यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके भक्ति की तुमने महान्।
आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में आज,

भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे गन्धर्व यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।१७।।

अरहनाथ के तीर्थकाल में खगेन्द्र यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके की भक्ति तुमने महान्।
आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे खगेन्द्र यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।१८।।

मल्लिनाथ के तीर्थकाल में कुबेर यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके की भक्ति तुमने महान्।
आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे कुबेर यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।१९।।

मुनिसुव्रत के तीर्थकाल में वरुण यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके की भक्ति तुमने महान्।
आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे वरुण यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।२०।।

नेमिनाथ के तीर्थकाल में भृकुटी यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके की भक्ति तुमने महान्।
आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे भृकुटी यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।२१।।

नेमीनाथ के तीर्थकाल में गोमेद यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके की भक्ति तुमने महान्।
आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे गोमेद यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।२२।।

पार्श्वनाथ के तीर्थकाल में धरणेन्द्र यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके की भक्ति तुमने महान्।
आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे धरणेन्द्र यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।२३।।

वर्धमान के तीर्थकाल में मातंग यक्ष हुए महान्,
तीर्थंकर की सेवा करके की भक्ति तुमने महान्।
आए हम अर्घ्य सजाकर तेरे चरणों में आज,
भक्ति भाव से पूजा करके पाएँ सुख शान्ति आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे मातंग यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।२४।।

चौबीसों जिनदेव के चौबीस यक्ष महान्।
पूर्ण अर्घ समर्पण से, दूर करें अज्ञान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं गोमुखादि चतुर्विंशति यक्षेभ्यः पूर्ण अर्घ समर्पयामि स्वाहा।

(शान्तये शान्तिधारा-परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।)

षष्ठ कोष्ठ

चौबीस शासन देवियों का पूजन

चौबीस शासन देवियाँ करूँ स्थापित मैं आज।
पुष्पांजलि अर्पित करूँ, कुशल क्षेम के काज।।

(छठे कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

आदि प्रभु जिन शासन की तुम यक्षी देवी हो महान्।
चक्रेश्वरी देवी हो तुम रक्षक जिन शासन की महान्।।
वसुविधि द्रव्य सजाकर लाये पूजा करने देखो आज।
रोग शोक सब मिट जाएँ शान्ति पाएँ भविजन आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे चक्रेश्वरी देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।१।।

अजितनाथ जिन शासन की तुम यक्षी देवी हो महान्।
रोहिणी देवी कहालाती रक्षक जिन शासन की महान्।।
वसुविधि द्रव्य सजाकर लाये पूजा करने देखो आज।
रोग शोक सब मिट जाएँ शान्ति पाएँ भविजन आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे रोहिणी देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।२।।

संभवनाथ जिन शासन की तुम यक्षी देवी हो महान्।
प्रज्ञप्ति देवी कहलाती रक्षक जिन शासन की महान्।।
वसुविधि द्रव्य सजाकर लाये पूजा करने देखो आज।
रोग शोक सब मिट जाएँ शान्ति पाएँ भविजन आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे प्रज्ञप्ति देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।३।।

अभिनन्दन जिन शासन की तुम यक्षी देवी हो महान्।
वज्रश्रृंखला देवी कहालती रक्षक जिन शासन की महान्।।
वसुविधि द्रव्य सजाकर लाये पूजा करने देखो आज।
रोग शोक सब मिट जाएँ शान्ति पाएँ भविजन आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे वज्रश्रृंखला देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।४।।

सुमतिनाथ जिन शासन की तुम यक्षी देवी हो महान्।
पुरुषदत्ता देवी कहालती रक्षक जिन शासन की महान्।।
वसुविधि द्रव्य सजाकर लाये पूजा करने देखो आज।
रोग शोक सब मिट जाएँ शान्ति पाएँ भविजन आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पुरुषदत्ता देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।५।।

पद्मप्रभु जिन शासन की तुम यक्षी देवी हो महान्।
मनोवेगा देवी कहालती रक्षक जिन शासन की महान्।।
वसुविधि द्रव्य सजाकर लाये पूजा करने देखो आज।
रोग शोक सब मिट जाएँ शान्ति पाएँ भविजन आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे मनोवेगा देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।६।।

सुपार्श्वनाथ जिन शासन की तुम यक्षी देवी हो महान्।
काली देवी कहालती रक्षक जिन शासन की महान्।।
वसुविधि द्रव्य सजाकर लाये पूजा करने देखो आज।
रोग शोक सब मिट जाएँ शान्ति पाएँ भविजन आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे काली देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।७।।

चन्द्रप्रभु जिन शासन की तुम यक्षी देवी हो महान्।
ज्वालामालिनी देवी कहलाती रक्षक जिन शासन की महान्।।
वसुविधि द्रव्य सजाकर लाये पूजा करने देखो आज।
रोग शोक सब मिट जाएँ शान्ति पाएँ भविजन आज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे ज्वालामालिनी देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।८।।

जल फलादि अर्घ लेकर खड़े अब तुम्हारे सामने।
सुविधिनाथ की यक्षी महाकाली दुख हरो सब के सामने।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे महाकाली देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।९।।

जल फलादि अर्घ लेकर खड़े अब तुम्हारे सामने।
शीतलनाथ की यक्षी मानवी दुख हरो सब के सामने।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे मानवी देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।१०।।

जल फलादि अर्घ लेकर खड़े अब तुम्हारे सामने।
श्रेयांसनाथ की यक्षी गौरी दुख हरो सब के सामने।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे गौरी देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।११।।

जल फलादि अर्घ लेकर खड़े अब तुम्हारे सामने।
वसुपूज्य की यक्षी गान्धारी दुख हरो सब के सामने।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे गान्धारी देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।१२।।

जल फलादि अर्घ लेकर खड़े अब तुम्हारे सामने।
विमलनाथ की यक्षी वैरोटी दुख हरो सब के सामने।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे वैरोटी देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृहयतां स्वाहा ।।१३।।

जल फलादि अर्घ लेकर खड़े अब तुम्हारे सामने।
अनन्तनाथ की यक्षी अनन्तमति दुख हरो सब के सामने।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे अनन्तमति देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।१४।।

जल फलादि अर्घ लेकर खड़े अब तुम्हारे सामने।
धर्मनाथ की यक्षी मानसी दुख हरो सब के सामने।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे मानसी देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।१५।।

जल फलादि अर्घ लेकर खड़े अब तुम्हारे सामने।
शान्तिनाथ की यक्षी महामानसी दुख हरो सब के सामने।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे महामानसी देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।१६।।

जल फलादि अर्घ लेकर खड़े अब तुम्हारे सामने।
कुन्थुनाथ की यक्षी जयादेवी दुख हरो सब के सामने।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे जया देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।१७।।

जल फलादि अर्घ लेकर खड़े अब तुम्हारे सामने।
अरहनाथ की यक्षी विजया दुख हरो सब के सामने।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे विजया देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।१८।।

जल फलादि अर्घ लेकर खड़े अब तुम्हारे सामने।
मल्लिनाथ की यक्षी अपराजिता दुख हरो सब के सामने।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे अपराजिता देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।१९।।

जल फलादि अर्घ लेकर खड़े अब तुम्हारे सामने।
मुनिसुव्रत की यक्षी बहुरूपिणी दुख हरो सब के सामने।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे बहुरूपिणी देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।२०।।

जल फलादि अर्घ लेकर खड़े अब तुम्हारे सामने।
नमिनाथ की यक्षी चामुण्डा दुख हरो सब के सामने।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे चामुण्डा देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।२१।।

जल फलादि अर्घ लेकर खड़े अब तुम्हारे सामने।
नेमिनाथ की यक्षी अम्बिका दुख हरो सब के सामने।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे अम्बिका देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।२२।।

जल फलादि अर्घ लेकर खड़े अब तुम्हारे सामने।
पारसनाथ की यक्षी पद्मावति दुख हरो सब के सामने।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।२३।।

जल फलादि अर्घ लेकर खड़े अब तुम्हारे सामने।
वर्द्धमान की यक्षी सिद्धायिनी दुख हरो सब के सामने।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे सिद्धायिनी देवि अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।२४।।

करूँ अर्चन चक्रेश्वरी देवियों का मन वचन और कर्म से।
मिटे सन्ताप जीवन का मोक्ष हो भवबन्ध के सन्त्रास से।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे चक्रेश्वर्यादि चौबीस जिनशासन देविभ्यो जलादि पूर्ण अर्घ समर्पयामि ।

(शानाये शान्तिधारा, पुष्पांजलिंक्षिपत्)

चारद्वार पालानुक्रम

सबसे पूज्य हैं सोम, यम, वरुण और कुबेर।
मैं इनकी पूजा करूँ, नहीं लगाऊँ देर।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे सोम, यम, वरुण, कुबेर अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वांहा ।

(यह बोलकर द्वारपालों को अर्घ्यं चढ़ा देवें।)

सप्तम कोष्ठ

दश दिक्पाल पूजा

जूही चमेली आदि पुष्प ले मण्डल पर क्षेपण करता हूँ।
दिक्पालों का स्थापन कर उनका पूजन करता हूँ।।
यागमंडल पूजा विधान की पूजा कर हर्षित होता हूँ।
रोग शोक सब दूर रहें यह मन में इच्छा करता हूँ।।

अष्टम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जल चन्दनादि वसुद्रव्य सजाकर पूजा करने आया आज।
इन्द्र देवता का अर्चन कर सुख शान्ति सब पाएँ आज।।
यागमंडल पूजा विधान की पूजा कर हर्षित होता हूँ।
रोग शोक सब दूर रहें यह मन में इच्छा करता हूँ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे इन्द्रदेवता अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा।।१।।

जल चन्दनादि वसुद्रव्य सजाकर पूजा करने आया आज।
अग्नि देवता का अर्चन कर सुख शान्ति सब पाएँ आज।।
यागमंडल पूजा विधान की पूजा कर हर्षित होता हूँ।
रोग शोक सब दूर रहें यह मन में इच्छा करता हूँ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे अग्नये अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा।।२।।

जल चन्दनादि वसुद्रव्य सजाकर पूजा करने आया आज।
यम देवता का अर्चन कर सुख शान्ति सब पाएँ आज।।
यागमंडल पूजा विधान की पूजा कर हर्षित होता हूँ।
रोग शोक सब दूर रहें यह मन में इच्छा करता हूँ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे यमाय अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा।।३।।

जल चन्दनादि वसुद्रव्य सजाकर पूजा करने आया आज।
नैऋत्य देवता का अर्चन कर सुख शान्ति सब पाएँ आज।।
यागमंडल पूजा विधान की पूजा कर हर्षित होता हूँ।
रोग शोक सब दूर रहें यह मन में इच्छा करता हूँ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे नैऋत्य अत्रागच्छ, इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा ।।४।।
जल चन्दनादि वसुद्रव्य सजाकर पूजा करने आया आज।
वरुण देवता का अर्चन कर सुख शान्ति सब पाएँ आज।।
यागमंडल पूजा विधान की पूजा कर हर्षित होता हूँ।
रोग शोक सब दूर रहें यह मन में इच्छा करता हूँ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे वरुणदेवता अत्रागच्छ, इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा ।।५।।
जल चन्दनादि वसुद्रव्य सजाकर पूजा करने आया आज।
अनिल देवता का अर्चन कर सुख शान्ति सब पाएँ आज।।
यागमंडल पूजा विधान की पूजा कर हर्षित होता हूँ।
रोग शोक सब दूर रहें यह मन में इच्छा करता हूँ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे अनिल देवता अत्रागच्छ, इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा ।।६।।
जल चन्दनादि वसुद्रव्य सजाकर पूजा करने आया आज।
कुबेर देवता का अर्चन कर सुख शान्ति सब पाएँ आज।।
यागमंडल पूजा विधान की पूजा कर हर्षित होता हूँ।
रोग शोक सब दूर रहें यह मन में इच्छा करता हूँ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे कुबेराय अत्रागच्छ, इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा ।।७।।
जल चन्दनादि वसुद्रव्य सजाकर पूजा करने आया आज।
ईशान देवता का अर्चन कर सुख शान्ति सब पाएँ आज।।
यागमंडल पूजा विधान की पूजा कर हर्षित होता हूँ।
रोग शोक सब दूर रहें यह मन में इच्छा करता हूँ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे ईशान देवता अत्रागच्छ, इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा ।।८।।
जल चन्दनादि वसुद्रव्य सजाकर पूजा करने आया आज।
धरणेन्द्र देवता का अर्चन कर सुख शान्ति सब पाएँ आज।।
यागमंडल पूजा विधान की पूजा कर हर्षित होता हूँ।
रोग शोक सब दूर रहें यह मन में इच्छा करता हूँ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे धरणेन्द्र अत्रागच्छ, इदमर्ध्य समर्पयामि, स्वाहा ।।९।।
जल चन्दनादि वसुद्रव्य सजाकर पूजा करने आया आज।
सोम देवता का अर्चन कर सुख शान्ति सब पाएँ आज।।

यागमंडल पूजा विधान की पूजा कर हर्षित होता हूँ।
रोग शोक सब दूर रहें यह मन में इच्छा करता हूँ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे सोमदेव अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा।।१०।।
दश दिक्पालों हेतु यह पूर्ण अर्घ बनाऊँ।
पूजा करूँ इसे पढ़ाकर मन में शान्ति पाऊँ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं, दशदिक्पाल समूहेभ्यो पूर्ण अर्घ समर्पयामि, स्वाहा।

(शान्तये शान्तिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्।)

नाना विधि के सुमन ले, मन में बहु हर्षाय।
मण्डल पर क्षेपण करूँ, यक्ष विराजो आयो (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

चार यक्ष पूजा

प्रभु की भक्ति करने यहाँ विजय यक्ष भी आए।
हेमथाल में द्रव्य सजाकर तव पूजा करने आए।।
यागमण्डल पूजा करने भक्ति भाव से आए हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके मन में बहु हर्षाए हैं।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हम्ल्व्यूं विजययक्षाय अर्घ्य समर्पयामि।।१।।
प्रभु की भक्ति करने यहाँ वैजयंत यक्ष भी आए।
हेमथाल में द्रव्य सजाकर तव पूजा करने आए।।
यागमण्डल पूजा करने भक्ति भाव से आए हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके मन में बहु हर्षाए हैं।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हम्ल्व्यूं वैजयंतयक्षाय अर्घ्य समर्पयामि।।२।।
प्रभु की भक्ति करने यहाँ जयंत यक्ष भी आए।
हेमथाल में द्रव्य सजाकर तव पूजा करने आए।।
यागमण्डल पूजा करने भक्ति भाव से आए हैं
अष्ट द्रव्य से पूजा करके मन में बहु हर्षाए हैं।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हम्ल्व्यूं जयंतयक्षाय अर्घ्य समर्पयामि।।३।।
प्रभु की भक्ति करने यहाँ अपराजित भी आए।
हेमथाल में द्रव्य सजाकर तव पूजा करने आए।।
यागमण्डल पूजा करने भक्ति भाव से आए हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके मन में बहु हर्षाए हैं।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हम्ल्व्यूं अपराजितयक्षाय अर्घ्य समर्पयामि।।४।।
प्रभु की भक्ति करने यहाँ चारों यक्ष भी आए।
हेमथाल में द्रव्य सजाकर तव पूजा करने आए।।
यागमण्डल पूजा करने भक्ति भाव से आए हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके मन में बहु हर्षाए हैं।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हम्ल्व्यूं विजयवैजयंत जयंत अपराजित, द्वारपालेभ्यो पूर्ण अर्घ्य समर्पयामि।।५।। (शान्तये शान्तिधारा-परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

नवम कोष्ठ

अनावृत यक्ष पूजा

जम्बुवृक्ष पर वास करो, हे जम्बुद्वीप के स्वामी।
नाना मणियों से रचित, भवन तुम्हारा हे स्वामी।।
अनावृत है नाम तुम्हारा करो सभी के काम।
अष्ट द्रव्य से पूजा करूँ ग्रहण करो यह धाम।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे अनावृतयक्षाधिराज अत्रागच्छ। इदमर्घ पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं यज्ञभागं यजामहे - प्रतिगृह्यतताम्, स्वाहा।

(शान्तये शान्तिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

लोकान्तिक देवों पर पुष्पांजलि

ब्रह्म स्वर्ग में वास तुम्हारा, लौकान्तिक कहलाते हो।
तीर्थंकर की दीक्षा में आकर, सात्त्विक भाव जगाते हो।।
यागमण्डल की पूजा करने, यहाँ हम आए हैं।
नानाविधि सुमनों को लेकर, मन सुमन चढ़ाए हैं।

ॐ ह्रीं लोकान्तिकदेवेभ्यो पुष्पांजलिं समर्पयामि।

अहमिन्द्रों पर पुष्पांजलि

नवग्रैवेयक आदि से सर्वार्थ सिद्धि पर्यन्त।
अहमिन्द्रों को स्थापित करूँ पुष्पांजलि अत्यन्त।।

ॐ ह्रीं समस्त अहमिन्द्रेभ्यो पुष्पांजलिं समर्पयामि।

मंगल अष्टादि स्थापना

सुन्दर छत्रादि अर्पित करूँ हे श्री जिनराज।
मण्डल पर स्थापित करूँ अर्घ से पूजूँ आज।।

ॐ ह्रीं श्वेत छत्रादि-अष्टमंगलेभ्यों अर्घ्य समर्पयामि।

(मंडल पर अष्टमंगल द्रव्य स्थापन कर दें)

दशम कोष्ठ

अष्ट शास्त्र स्थापना

चक्रादि सब शस्त्र ले स्थापित कर सविधि आज।
अष्ट द्रव्य से पूजकर मन में हर्षित होते आज।।

ॐ ह्रीं इन्द्राण्यै अष्टायुध स्थापनं कुरु। अर्घ्यम्।

अष्ट पताका स्थापन

नानाविधि वस्त्र ले सुन्दर ध्वजा बनाय।
मण्डल में स्थापित करूँ सुख-शान्ति सब पाय।।

ॐ ह्रीं प्रभायै अष्टपताका स्थापनं कुरु। अर्घ्यम्।

अष्टकलश स्थापन

सुवर्ण आदि के कलश ले, उनमें नीर भरा है।
मंगल द्रव्यादि डालकर, स्थापित आज किया है।।

ॐ ह्रीं अष्टकलशस्थापनं कुरु। अर्घ्यम्।

बाण सरसों यवारकादि स्थापन

बाण सरसों यवार का लेकर मंगल द्रव्य।
मण्डल पर स्थापित करें हरे असाता कर्म।।

ॐ ह्रीं बाण चतुष्ट्यादि स्थापनं कुरु। अर्घ्य।

शिला स्थापन

गुड़ लवण शिलादि सम्मुख स्थापित करता हूँ।
वेदी की शोभा इससे मैं अगणित करता हूँ।।

ॐ ह्रीं सर्वजनानन्दकारिणि सौभाग्यवति, तिष्ठ-तिष्ठ, स्वाहा, अर्घ्यम्।

पट्ट स्थापन

सुवर्णादि का पाटिया या हो क्षीरीवृक्ष।
उसका पट्ट बनाकर स्थापित करूँ समक्ष।।

ॐ ह्रीं भद्रासनश्रियै स्वाहा। पट्टस्थापनं कुरु। अर्घ्यम्।

ग्यारह कोष्ठ

जय विजयादि आठ देवी पूजा

जयादि सब देवियाँ बैठें सब आज यहाँ पर।
मण्डल पर पूजा करूँ मन में बहु हर्षित होकर।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

दिव्य वस्त्राभूषण से सजकर जयादेवी आओ।
अष्ट द्रव्य से सजे थाल से पूजा पाकर हर्षाओ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे जयादेवी अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।१।।

जिनधर्म की सेवा करती विजयादेवी आओ।
अष्ट द्रव्य से सजे थाल से पूजा पाकर हर्षाओ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे विजयादेवी अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।२।।

अजितादेवी जिनमन्दिर में परिवार सहित आओ।
अष्ट द्रव्य से सजे थाल से पूजा पाकर हर्षाओ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे अजितादेवी अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।३।।

परिवार सहित हे अपराजिता जिन मन्दिर में आओ।
अष्ट द्रव्य से सजे थाल से पूजा पाकर हर्षाओ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे अपराजितादेवी अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।४।।

जम्भेदेवी सजधज कर इस मण्डल पर आओ।
अष्ट द्रव्य से सजे थाल से पूजा पाकर हर्षाओ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे जम्भेदेवी अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।५।।

परिवार सहित मोहेदेवी जिन मन्दिर में आओ।
अष्ट द्रव्य से सजे थाल से पूजा पाकर हर्षाओ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे मोहेदेवी अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।६।।

स्तंभे देवी सजधज कर जिनमन्दिर में आओ।
अष्ट द्रव्य से सजे थाल से पूजा पाकर हर्षाओ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे स्तंभे देवी अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।७।।

स्तंभिनी देवी भक्ति भाव से पूजा करने आओ।
अष्ट द्रव्य से सजे थाल से पूजा पाकर हर्षाओ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे स्तंभिनी देवी अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।८।।

जय विजयादि आठों देवी को यहाँ पर अर्घ्य चढ़ाऊँ।
विघ्नों की सर्व शान्ति हेतु पूर्ण अर्घ्य चढ़ाऊँ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे जयादि आठों देवियों अत्रागच्छ, इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

(शान्तिधारा और पुष्पांजलि का मंत्र)

(शान्तये शान्तिधारा पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

फिर णमो अरिहंताण से लेकर केवलिपण्णत्तो धम्मं शरणं पवज्जामि पर्यन्त पढ़ें। उत्तरावेदि की पूजा।

बारह कोष्ठ

अष्ट कुमारी देवियों की पूजा

नाना विध के पुष्प ले मन में बहु हर्षाय।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ इस मण्डल पर आय।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री देवी को आज मैं पूजूँ मन वच काय।
अष्ट द्रव्य से पूजा करूँ मन में शान्ति पाय।।
ॐ ह्रीं श्री देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।।१।।

ह्रीं देवी को आज मैं पूजूँ मन वच काय।
अष्ट द्रव्य से पूजा करूँ मन में शान्ति पाय।।
ॐ ह्रीं ह्रीं देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।।२।।

धृति देवी को आज मैं पूजूँ मन वच काय।
अष्ट द्रव्य से पूजा करूँ मन में शान्ति पाय।।
ॐ ह्रीं धृतिदेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।।३।।

कीर्ति देवी को आज मैं पूजूँ मन वच काय।
अष्ट-द्रव्य से पूजा करूँ मन में शान्ति पाय।।
ॐ ह्रीं कीर्तिदेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।।४।।

बुद्धि देवी को आज मैं पूजूँ मन वच काय।
अष्ट द्रव्य से पूजा करूँ मन में शान्ति पाय।।
ॐ ह्रीं बुद्धिदेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।।५।।

लक्ष्मी देवी को आज मैं पूजूँ मन वच काय।
अष्ट द्रव्य से पूजा करूँ मन में शान्ति पाय।।
ॐ ह्रीं लक्ष्मीदेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।।६।।

शान्ति देवी को आज मैं पूजूँ मन वच काय।
अष्ट द्रव्य से पूजा करूँ मन में शान्ति पाय।।
ॐ ह्रीं शान्तिदेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।।७।।

पुष्टि देवी को आज मैं पूजूँ मन वच काय।
अष्ट द्रव्य से पूजा करूँ मन में शान्ति पाय।।
ॐ ह्रीं पुष्टिदेव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।।८।।
अष्ट कुमारिका देवियाँ विराजो यहाँ पर आय।
भक्ति भाव से पूजा करूँ पूर्ण अर्घ्यं चढ़ाय।।
ॐ ह्रीं अष्ट कुमारिका देवीभ्यो पूर्णं अर्घ्यं समर्पयामि।।

(शान्तिधारा और पुष्पांजलि का मंत्र)

(शान्तये शान्तिधारा पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जयमाला

जय जय यागमण्डल विधान, इसमें है सब देवों का स्थान।
जय प्रभुवर तुम सबसे महान, भविजन का दुख करो तुम हान।।
हम जगवासी दुख बहु पात, इस कारण तव चरणों में आए।
भव भव में भटके हैं नाथ, तुम शान्ति करो कृपा निधान।।
प्रभु पंच कल्याणक विघ्न आए, उसकी शान्ति का यही उपाय।
करो 'यागमण्डल' विधान, सब कष्टों का होए निदान।।
इसमें पूजा हैं सभी प्रकार, पहले परमेष्ठी पंचसार।
मंगल लोकोत्तम शरण जान, पूजा करो इनकी महान्।।
षोडश विद्या देवी कहाएँ, पूजा से वांछित फल पाएँ।
चौबीस जिन माता महान, इनकी पूजा कर भक्ति ठान।।
बत्तीस इन्द्र पूजा विधान, द्वारपाल हैं पूजा में चार।
चौबीस यक्ष व यक्षी ज्ञान, उनकी पूजा करो इस स्थान।।
नवग्रह दश दिक्पाल जान, श्री ह्रीं कीर्त्यादि देवी मान।
लोकान्तिक देवों की पूजा जान, अहमिन्द्र बिना अधूरा विधान।।
मंगल अस्टादि हैं महान, जय विजयादि देवी मन आन।
कुमारिका अष्ट देवी का ध्यान, पूरा हो यागमण्डल विधान।।
आशाधर ने किया बखान, कुन्थुसागर ने लिखा विधान।
हाथ जोड़कर कुन्थु कहता, क्षमा भाव है दिल में बहता।।
जो कोई इन भूलों के भूले, सतीश वही इन्द्रासन में भूले।

बोलो, यागमण्डल की जय ।

ॐ ह्रीं याग मंडल सम्बन्धी समस्त अर्हन्तादि व देवि देवताभ्यो जयमालापूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति, स्वाहा।

(शान्तये शान्तिधारा परि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

राजस्थान प्रदेश में, उदयपुर पुण्य स्थान।
ग्राम अणिन्दा नाम है, पारसनाथ भगवान्।।
दो हजार पचास का आश्विन कृष्ण सुजान।
तिथि पंचमी दिवस है, यह बुधवार समान।।
प्रभु चरणों में बैठकर लिखा है यह विधान।
भूल चूक सब क्षमा करें, हों विचार समान।।
आग्रह क्षेमा का देखकर, रचा आज विधान।
उसका भी कल्याण हो, पाए मोक्ष महान्।।
भक्तिभाव से यागमण्डल विधान को जो करें।
अतुलित वैभव भोगकर, मुक्तिरमा को वे वरें।।

आरती

श्री याग मण्डल विधान, करो उर भक्ति ठान, मिलकर सब प्राणी।
होगा जगत कल्याण कहे जिनवाणी।।
जब पंचकल्याणक पाठ करो, तब यागमण्डल विधान करो।
करे कर्मों का नाश, मिटे दुःख की फाँस, सुख-शांति वाणी।
होगा जगत कल्याण कहे जिनवाणी।।१।।
पहले मण्डल की स्थापना करो, फिर बारह कोठे उसमें भरो।
पंचामृत अभिषेक करें, देवशास्त्र गुरु की पूजा करें, होगी कर्मों की हानि।
होगा जगत कल्याण कहे जिनवाणी।।२।।
विधान के बाद विसर्जन करो, अगर कपूर से हवन करो।
यह पाठ कराओगे, शुभ फल पाओगे, तब श्रद्धा उर आनी।
होगा जगत कल्याण कहे जिनवाणी।।३।।
आशाधर ने विधान बनाया, कुन्थुसागर ने सरल रचाया।
मन में सब मगन हुए, प्रतिभा पुकार कर यही कहे, करो सब प्राणी।
होगा जगत कल्याण कहे जिनवाणी।।४।।

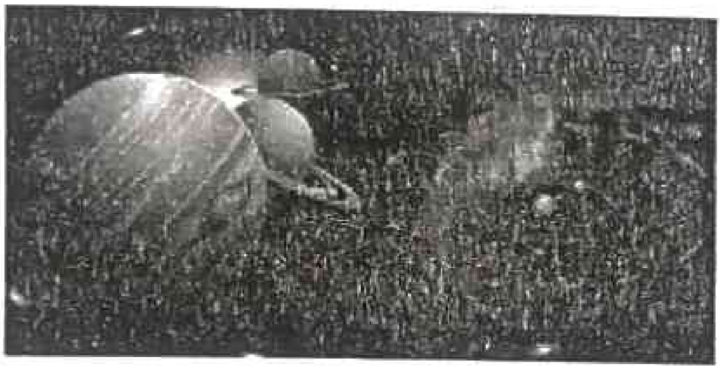

नवग्रह - विधान

विधान का कम

सभी इन्द्र इन्द्राणी मिलकर, सकलीकरण, इन्द्रप्रतिष्ठा, मण्डपशुद्धि, पंचामृत अभिषेक, मंगलाष्टक करके पूजा प्रारम्भ करें। देव, शास्त्र, गुरु पूजा, विधि नायक की पूजा, अन्य अर्घ्य, सहस्र नाम अर्घ, नवगृह विधान प्रारम्भ कर समाप्त करें। विसर्जन करके हवनादि करें, शान्ति पाठ करें फिर विधान समाप्त करें। नवग्रह विधान को अपने गृह निवास, फैक्ट्री में ही करने से सर्वग्रह शान्ति होगी। कुछ अज्ञानी विद्वान विधानों को विधि अनुसार नहीं करते व कराते। दोष धर्म में देने लग जाते है, क्योंकि कार्य पूर्ण नहीं होता फल की प्राप्ति नहीं होती। विधान करने के लिये पहले जिन भगवान की प्रतिमा को मन्दिर जी से ले जाकर उपयुक्त स्थान पर विराजमान करें। नवग्रह यन्त्र या विनायक यन्त्र जिन भगवान को मण्डल पर विराजमान करें। जिस समय भगवान की प्रतिमा मन्दिर जी से ले जाएँ उस समय पहले शुद्ध वस्त्र (धोती दुपट्टा) पहन कर लाएँ एवं मन्दिर जी के शासन देवी, देवता को आह्वान कर उनसे आज्ञा माँग कर प्रतिमा को लाएँ।

नव ग्रह विधान की विधि

इस विधान हेतु इन्द्र, इन्द्राणी व प्रतिष्ठाचार्य स्नानादिक से निवृत हो शुद्ध वस्त्र पहने, मन्दिर में इर्यापथ शुद्धि करके भगवान् के दर्शन करें। वेदी पर मांडला माँडकर तोरण आदि से सजाएँ। इन्द्र-इन्द्राणी सकलीकरण, इन्द्र प्रतिष्ठा, मण्डप प्रतिष्ठा आदि करने के बाद पंचामृत अभिषेक जिन भगवान का करें। फिर सभी मिलकर देवशास्त्र-गुरु की पूजा करें। अन्य अर्घ चढ़ाएं और विधान प्रारम्भ करें। विधान समाप्त होने पर शान्ति पाठ विसर्जन कर दें, होमादि करें।

विधान की सामग्री

सामग्री - ६० पानी नारियल या हरेफल या सुपारी, बादाम, शक्ति अनुसार, ५ किलो चावल, १ किलो बादाम, १ किलो छुहारा, १ किलो गोले की चिटकी, १ किलो कोई भी मिठाई घर पर बनी हो, ५०० ग्राम सुपारी, २५० ग्राम किसमिस, २५० ग्राम काजू, २०० ग्राम बड़ी इलायची, ५० ग्राम छोटी इलायची, ५० ग्राम लौंग, हरे फल, फूल, २० जोड़ा जनेऊ, १० ग्राम केशर, १०० ग्राम कपूर, २५० ग्राम धूप, ५०० ग्राम घी आदि।

मण्डल का सामान - ५ कलश, ५ रुपया, ५ चवन्नी, २५ गांठ हल्दी, २५ गांठ सुपारी, १० ग्राम धनिया, १० ग्राम पीली सरसों, ५०० ग्राम प्रत्येक पाँच प्रकार के रंग या पांच रंग किये चावल, ५० ग्राम पंचरंगा धागा, १०' x १०' सफेद कपड़ा मण्डल के लिये।

पंचामृत अभिषेक सामान - शुद्ध जल, दूध, दही घी, चन्दन, केसर, फलों का रस, चावल-कपूर-चन्दन का बुरादा, जावित्री इक्षुरस, सर्वोषधि, तीन पानी नारियल, हरे फल, फूल आदि।

हवन सामग्री - हवन कुण्ड, ईंट-मिट्टी से बनाएं अन्यथा जिस प्रकार का हो उससे काम चलाएं, लकड़ी चम्मच, रूई, माचिस, १० किलो लकड़ी (आम, पीपल, पलास, छाल, आकड़ा, १०० ग्राम चन्दन लकड़ी लाल व सफेद)

धूप का सामान - ५०० ग्राम चन्दन बुरादा, ५०० ग्राम बूरा, २०० ग्राम कपूर, सप्त प्रकार धान, १०० ग्राम प्रत्येक (काले तिल, जौ, मूंग, उडद, धान, रमास, ज्वार, इन सभी को मिला कर धूप तैयार करें।

नोट - मुख्य तौर पर यह सामग्री पाँच जोड़े की है। बाकी ज्यादा या कम हो तो घटा-बढ़ा लें। नवग्रहों के भक्ष्य पदार्थ आदि का सामान प्रत्येक ग्रह की पूजा के अन्त में लिख दिया है। वहाँ से देखकर विधानाचार्य अलग से लिख दें। और भी जो सामान चाहिये वह सब लिख दें। विधानाचार्य के लिए धोती, दुपट्टा नया लाकर दें।

नवग्रह विधान मण्डल चित्र

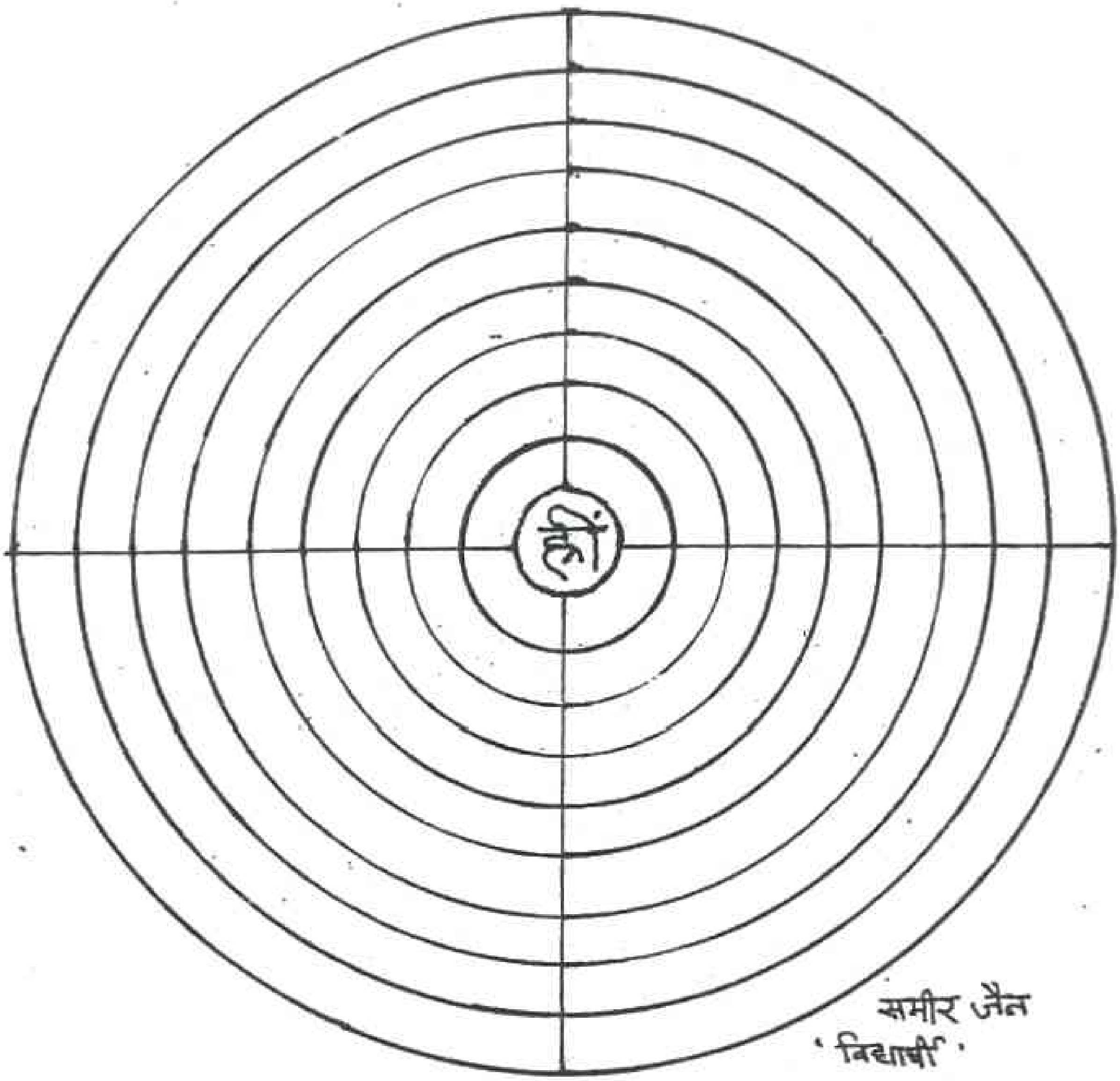

समीर जैन
'विद्यार्थी'

नवग्रह स्तोत्र

जगद्गुरुं नमस्कृत्य श्रुत्वा सद्गुरु-भाषितम्,
ग्रहशान्तिं प्रवक्ष्यामि लोकानां सुखहेतवे।
जिनेन्द्राः खेचरा ज्ञेया पूजनीया विधिक्रमात्
पुष्पैविपलेनैर्धूपैनैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे।।
पद्मप्रभस्य मार्तण्डश्चन्द्रप्रभस्य च
वासुपूज्यस्य भूपुत्रो बुधश्चाष्टजिनेशिनाम्।
विमलानन्तधर्मेशशांतिकुन्थ्वरहनमि-
वर्द्धमानाजिनेन्द्राणां पादपद्मं बुधो नमेत्।।
ऋषभाजितसुपार्श्वाः साभिनन्दनशीतलौ
सुमतिः सम्भवस्वामी श्रेयांसेषु बृहस्पतिः
सुविधिः कथितः शुक्रे मुनि सुव्रतश्च शनैश्चरे
नेमिनाथो भवेद्राहोः केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः।।
जन्मलग्नं च राशिं च यदि पीडयन्ति खेचराः
तदा संपूजयेद् धीमान् - खेचरान् सह तान् जिनान्।
भद्रबाहुगुरुर्वाग्मी पंचमः श्रुतकेवली,
विद्या प्रसादतः पूर्ण ग्रहशांतिविधिः कृता।।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय शुचिर्भूत्वा समाहितः
विपत्तितो भवेच्छांतिः क्षेमं तस्य पदे-पदे।।

नव ग्रह विधान

प्रणत हो जिनाधीश को, करूँ शारदा ध्यान।
गौतम गुरु को नमन कर, नवग्रह लिखूँ विधान।।
पापकर्म के उदय से जग पीड़े नवग्रह।।
उसकी शान्ति हेतु ही विधि लिखूँ निस्सन्देह।।
सोम, भौम, बुद्ध, गुरु; शुक्र शनिश्चर जान।
रवि, राहु केतु, ग्रह नौ कहे जगत् में आन।।
इन ग्रहों की शान्ति को, पूजो जिन भगवान।
हैं यक्ष और यक्षियाँ शामिल इसी विधान।।

पृथक-पृथक ग्रह शान्ति को करो मंत्र का जाप।।
जिसका जैसा भक्ष्य है पूजो उसी प्रकार।।
जूही चमेली पुष्प से अंजलि भर ले हाथ।
मण्डल पर पुष्पांजलि करो हर्ष के साथ
(मण्डलोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पीठिका

शुद्ध नीर से स्नान कर पहनें विशुद्ध वस्त्र।
इर्यापथ शुद्धि करें त्यजें क्रोधादि शस्त्र।।
सकंलीकरण सब आद्यविधि करें जिनागम सार।
पंचामृत से नह्वन कर, पूजा रचें विचार।।
तीर्थकंर को पूज कर, पूजें सिद्ध भगवान्।
कलिकुण्ड का अर्घ कर, आगे करें विधान।।
पूजा प्रतिज्ञाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।
ये रवि, सोम, मगंल, ग्रह, बुध, गुरु, शुक्र जान।
शनि राहु केतु ग्रह हेतु स्थापित करूँ विधान।।
ॐ ह्रीं सूर्य, चन्द्र, मंगल बुद्ध गुरु शुक्र शनि राहु केतु नवग्रहेभ्यो अत्रागच्छ-अत्रागच्छ संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुद्ध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु नवग्रहेभ्यो अत्र तिष्ठ-ठःठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सूर्य, चन्द्र, मंगल बुद्ध गुरु शुक्र शनि राहु केतु नवग्रहेभ्यो अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।
सुवर्ण झारी नीर ले तव शरण में आ गया हूँ।
सब मलों को दूर करने, नीर लेकर आ गया हूँ।
नवग्रहों की पूजा कर शान्ति पाए जग सदा।
दुख शोक दूर करने नीर से पूजूँ मुदा।।१।।
ॐ ह्रीं रवि सोमादि ग्रहेभ्यो जलं समर्पयामि, स्वाहा।
मलयगिरि का गन्ध घिसकर तव शरण में आ गया हूँ।
देह सुगन्धि प्राप्त करने, गन्ध लेकर आ गया हूँ।

नवग्रहों को पूज कर, शान्ति पाए जग सदा।
दुःख शोक दूर करने गन्ध से पूजूँ मुदा।।२।।
ॐ ह्रीं रवि सोमादिग्रहेभ्यो चन्दनं समर्पयामि, स्वाहा।
अखण्ड अक्षत शुद्ध ले कर, तव शरण में आ गया हूँ।
सर्व दुख के नाश हेतु, तन्दुल लेकर आ गया हूँ।।
नवग्रहों की पूजा कर, शान्ति पावे जग सदा।
दुख शोक दूर करने, शान्ति पावे जग सदा।।३।।
ॐ ह्रीं रवि सोमादिग्रहेभ्यो अक्षतं समर्पयामि, स्वाहा।
नाना भाँति पुष्प लेकर, तव शरण में आ गया हूँ।।
काम दुःख के नाश हेतु, पुष्प लेकर आ गया हूँ।
नवग्रहों को पूज करके शान्ति पाए जग सदा।
दुःख शोक दूर करने पुष्प से पूजूँ मुदा।।४।।
ॐ ह्रीं रवि सोमादिग्रहेभ्यो पुष्पं समर्पयामि, स्वाहा।
लड्डू जलेबी घेवरादि ले तव शरण में आ गया हूँ।
भूख की बाधा मिटाने, नैवेद्य लेकर आ गया हूँ।।
नवग्रहों को पूज करके शान्ति पावे जग सदा।
दुःख शोक दूर करने नैवेद्य से पूजूँ मुदा।।५।।
ॐ ह्रीं रविसोमादिग्रहेभ्यो नैवेद्यं समर्पयामि, स्वाहा।
शुद्ध घृत का दीप लेकर, तव शरण में आ गया हूँ।
गहन तम का नाश करने, दीप लेकर आ गया हूँ।
नवग्रहों को पूज करके शान्ति पाए जग सदा।
दुःख शोक दूर करने दीप से पूजूँ मुदा।।६।।
ॐ ह्रीं रविसोमादिग्रहेभ्यो दीपं समर्पयामि, स्वाहा।
यह धूप दशांगी लेकर तव शरण में आ गया हूँ।
सब अघों का नाश करने, धूप लेकर आ गया हूँ।।
नवग्रहों को पूज कर शान्ति पाए जग सदा।
दुःख शोक दूर करने धूप से पूजूँ मुदा।।७।।
ॐ ह्रीं रविसोमादिग्रहेभ्यो धूपं समर्पयामि, स्वाहा।

नाना सुपक्व फल ले कर तव शरण में आ गया हूँ।
सब फलों की प्राप्ति करने, फल लेकर गया हूँ।
नवग्रहों को पूज कर शान्ति पाए जग सदा।
दुःख शोक दूर करने को फल से पूजूँ मुदा।।८।।
ॐ ह्रीं रविसोमादिग्रहेभ्योः फलं समर्पयामि, स्वाहा।
द्रव्य आठों कर में लेकर तव शरण में आ गया हूँ।
अष्ट रिद्धि प्राप्त करने, अर्घ्य लेकर आ गया हूँ।।
नवग्रहों को पूज कर शान्ति पाए जग सदा।
दुःख शोक दूर करने अर्घ से पूजूँ मुदा।।९।।
ॐ ह्रीं रविसोमादिग्रहेभ्यो अर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा।

(शान्तये शान्ति धारा-पुष्पांजलिं क्षिपेत्।)

प्रथम वलय की पूजा
पद्मप्रभु पूजा

पुष्पांजलि को पूर्ण करूँ, पुष्प छोड़ूँ आज।
मंण्डल पर स्थापन करूँ सिद्ध होंय सब काज।।

(मण्डलोपरि प्रथम कोष्ठ में पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सुसीमा मात के लाल तुम धरणीपिता, हे तात।
पद्म प्रभु प्रसिद्ध भाग्य विधायक आप।।

ॐ ह्रीं पद्म प्रभु जिनेन्द्र, अत्र-अवतर-अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं पद्म प्रभु जिनेन्द्र, अत्र तिष्ठ ठः-ठः, स्थापनम्।
ॐ ह्रीं पद्म प्रभु जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव-भव, वषट् सन्निधिकरणम्।
ॐ ह्रीं पद्म प्रभु जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पद्म प्रभु जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पद्म प्रभु जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पद्म प्रभु जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पद्म प्रभु जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पद्म प्रभु जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पद्म प्रभु जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पद्म प्रभु जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पद्म प्रभु जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुविधि द्रव्य सजा कर आया हूँ जिनवर देव।
अष्ट कर्म के नाश हेतु वर द्रे दो मुझको देव।।

ॐ ह्रीं पद्म प्रभु जिनेन्द्राय पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष पूजा

श्याम वर्ण के यक्ष तुम पुष्प यक्ष है नाम।
स्थापित कर पूजें तुम्हें मिटे सब दुःख दाम।।

ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रैं पुष्पयक्ष अत्रागच्छ ,इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।

यक्षिणी पूजा

सुवर्ण वर्ण की प्रभा तुम्हारी चार भुजा तुम धरती हो।
कृपाणादि धारण करके अश्व सवारी करती हो।।
मनोवेगा है नाम तुम्हारा ग्रहों की पीड़ा हरती हो।
करे स्थापित तुम्हें यहाँ जो, इच्छा पूरी करती हो।

ॐ आं क्रों ह्रीं मनोवेगा देवी अत्रागच्छ। इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं यजामहे, प्रतिगृह्यतां - स्वाहा।

रविग्रह पूजा

रविग्रह का स्थापन करके मन में अति हर्षाया हूँ।
अष्ट द्रव्य से थाल सजाकर पूजा करने आया हूँ।।
इच्छित वस्तु सब लेकर तुम्हें मनाने आया हूँ।
सब दोषों को शान्त करो सुख को पाने आया हूँ॥

ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रें रविगृह अत्रागच्छ। इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे, प्रतिगृह्यतां, स्वाहा।

अर्घ्य के साथ में इस ग्रह की शान्ति के लिये नीचे लिखे द्रव्य अर्पित करें।

भक्ष्य : - खीर, लाल पुष्प, लाल ध्वजा, कुंकुम, आकड़े का दातुन, जनेऊ, १ पैसा ताँबे का, दशांग धूप, ये सब द्रव्य भी नवग्रहों के कोठे में चढ़ा दें।

शान्ति धारा- पुष्पांजलि क्षिपेत्।

मंत्र

ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः फट् रविमहाग्रहाय नमः, अस्य देव-दत्तस्य सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

(इस मंत्र का नौ बार जाप करें)

दूसरे वलय की पूजा

चन्द्रप्रभु पूजा

रजत सम उज्ज्वल कान्ति तुम्हारी, चन्द्रप्रभु कहलाते हो।
चन्द्रपुरी में जन्म हुआ है सबको शान्ति देते हो।।
सोमग्रह को शान्त करने चन्द्रप्रभु को स्मरते हैं।
स्थापन कर पूजन करते कर्म सभी लय होते हैं।।

ॐ ह्रीं श्रीं चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र अत्रा-अत्रावतर, अवतर संवौषट् आह्वाननं
ॐ ह्रीं श्रीं चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठःठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीं चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्, सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुद्रव्य सजा कर सब निज कर में लेता हूँ।
मन वच तन से पूजहुँ, पूर्ण अर्घ चढ़ाता हूँ।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शान्ति-धारा-पुष्पांजलिंक्षिपेत्।

यक्ष पूजा

श्याम वर्ण के धारी तुम हो, श्याम विजय यक्ष है नाम।
अष्ट द्रव्य से पूजहुं मन वचन तन धर ध्यान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे विजय यक्ष अत्रागच्छ-इदमर्ध्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृहयताम्, स्वाहा।

यक्षिणी पूजा

ज्वालमालिनी देवी माता, तव चरणों में आया हूँ।
सोम जन्य पीड़ा शान्त करो अर्घ चढ़ाने आया हूँ।।
चन्द्र प्रभु की शासन देवी दुष्टों का संहार करो।
भव्यजनों के मन की इच्छा, क्षण में बेड़ा पार करो।।

ॐ आं कों ह्रीं हे ज्वालमालिनी देवी अत्रागच्छ पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।

सोमग्रह पूजा

सोमग्रह की पीड़ा जान, दुखी होता सब संसार।
पीड़ा शान्ति हेतु मैं आज, अष्टद्रव्य से पूजूँ सार।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे सोमग्रह अत्रागच्छ-इदमर्ध्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं चरुं दीपं धूपं फलं बलि स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।

भक्ष्य :- खीर, चावल का बड़ा, सफेद फूल, सफेद ध्वजा, देवदारु की धूप, खारखरा का दातुन, जनेऊ, १ पैसा ताँबे का और चन्दन, अर्ध्य के साथ चढ़ाएँ। यह सब सामान ग्रह के अर्घ के साथ ही चढ़ाना चाहिए।

शान्तये शान्तिधारा पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

मंत्र

ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः फट् सोमग्रहाय नमः, यजमानस्य सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

तीसरे वलय की पूजा

वासुपूज्य पूजा

वसुविधि द्रव्यमय अर्घ बना कर ला वासुपूज्य जिन पूजो जी।
सब सुख मिलते पूजा से, पूज्य महासुख पायो जी।
चंपापुरी का नगर उद्यान, मोक्ष गये हैं श्री भगवान्।
सब मिलते पूजा से, पूज्य महासुख पायो जी।।

ॐ ह्रीं हें वासुपूज्य जिनेन्द्राय, अत्रावतर अवतर सम्वौष्ट आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं हे वासुपूज्य जिनेन्द्राय, अत्रतिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं हे वासुपूज्य जिनेन्द्राय अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

ॐ ह्रीं वासुपूज्य-जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं वासुपूज्य-जिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं वासुपूज्य-जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं वासुपूज्य-जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं वासुपूज्य-जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं वासुपूज्य-जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं वासुपूज्य-जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं वासुपूज्य-जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्य हाथ में लेकर प्रभु चरणों में आया हूँ।
अर्घदान से हर्षित मन अक्षय सुख पाने आया हूँ।।
वासुपूज्य के चरण कमल पर बलि-बलि जाऊँ मन वच काय।
हे करुणानिधि भव दुःख मेटो बन्धन काटो मन वच काय।।

ॐ ह्रीं हे वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्ण अर्घ्य निवपामि स्वाहा।

यक्ष पूजा

वासुपूज्य के तीर्थकाल में कुमार यक्ष हुए महान्
भक्तजनों की पीड़ा हरने सब के दुःख की करते हानि।।

अष्ट द्रव्य से तूमको पूजूँ शुद्ध करूँ मैं मन वच काय।
भौम ग्रह पीड़ा को मेटो बन्धन काटो मन वच काय।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे कुमार यक्ष अत्रागच्छ-इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यताम् स्वाहा।

शान्तये शान्ति धारा-पुष्पांजलिं क्षिपेत्

यक्षिणी पूजा

गांधारी की पूजा करता अष्ट द्रव्य ले निज हाथ।
शान्ति करो हे माता तुम, फैला दो वरदायी हाथ।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे गान्धरी देवी अत्रागच्छ- इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे, प्रतिगृह्यताम् स्वाहा।

शान्तये शान्ति धारा-पुष्पांजलिं क्षिपेत्

भौमग्रह पूजा

मंगल ग्रह ने पीड़े अनेक, दुःखी किए हैं जीव अनेक।
पीड़ा शान्ति हेतु महान् विधि से हम पूजें आज।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं मंगलगृह अत्रागच्छ इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं य यजामहे प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।

भक्ष्य :- गुड़ की लापसी (सीरा) लाल फूल, लाल चावल, लाल ध्वजा, शमी का दातुन, गुग्गुल का धूप, जनेऊ, १ पैसा ताँबे का, अर्घ के साथ में चढाएँ।

शान्तये शान्ति धारा-पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

मंत्र

ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रः फट् फट् मंगलमहाग्रहाय नमः यजमानस्य सर्वशान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

(इस मंत्र का नौ बार जाप करें)

चौथे वलय की पूजा

मल्लिनाथ पूजा

मल्लिनाथ जिनेश्वर पूजूँ मन वच तन हर्षाय।
बुद्ध ग्रह की शान्ति हेतु स्मरण करूँ मैं जिनराय।।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके आनन्द मंगल होता है।
सुख सम्पति बहु मिलते हैं नाश कर्म का होता है।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथ जिनेश्वर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं मल्लिनाथ जिनेश्वर तिष्ठ ठः ठः, स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं मल्लिनाथ जिनेश्वर अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं ।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथ जिनेश्वराय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं मल्लिनाथ जिनेश्वराय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं मल्लिनाथ जिनेश्वराय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं मल्लिनाथ जिनेश्वराय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं मल्लिनाथ जिनेश्वराय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं मल्लिनाथ जिनेश्वराय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं मल्लिनाथ जिनेश्वराय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं मल्लिनाथ जिनेश्वराय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं मल्लिनाथ जिनेश्वराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दनादि लेकर आया प्रभु तुम्हारे पास।
पूर्ण अर्घ्य चढ़ाकर चाहूँ, कट जाए जन्म मरण की फाँस।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथ जिनेन्द्राय पूर्ण अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

यक्ष पूजा

कुबेर यक्ष की पूजा से फल मिले विशाल।
ग्रह उपद्रव होता शान्त कटे सभी मन जंजाल।।
अष्ट द्रव्य लेकर आया आज तुम्हारे पास।
मन वच तन से पूजा करता मिट जाएँ सब अविश्वास।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे कुबेर अत्रागच्छ इदमर्घ्यं पाद्यं जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् स्वाहा।

शान्तये शान्ति धारा-पुष्पांजलिं क्षिपेत्

यक्षिणी पूजा

अपराजित यक्ष की हम भाव से पूजा करते हैं।
बुद्ध ग्रह की शान्ति हेतु हम तेरी पूजा करते हैं।
अष्ट द्रव्य साज सजाकर तेरे द्वारे आये हैं।
ग्रह बाधा को हर लो माता आशा लेकर आये हैं।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे अपराजित यक्षिणी अत्रागच्छ इदमर्घ्यं पाद्यं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।

शान्तये शान्तिधारा पुष्पांजलिं क्षिपेत्

बुद्धग्रह पूजा

बुद्ध महाग्रह पीड़ा करता, नमन मैं तुमको करता हूँ।
ग्रह पीड़ा की शान्ति हेतु, अष्ट द्रव्य से पूजा करता हूँ।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे बुद्धमहाग्रह अत्रागच्छ इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।

भक्ष्य : भात, बड़ा पीला फूले पीली ध्वजा केशर, अंगारी का दातुन, राल का धूप, जनेऊ १ पैसा ताँबे का, इन सबको अर्घ के साथ में चढ़ाएँ।

शान्तये शान्ति धारा-पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः बुद्धग्रहाय नमः यजमानस्य सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

(इस मंत्र का नौ बार जाप करें)

पाचवें वलय की पूजा

वर्द्धमान पूजा

सजा वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ अर्घ मैं लाया हूँ।
वसु कर्म अनादि संयोग लय हेतु मैं आया हूँ।।
श्री वर्द्धमान जिनदेव, तुम हो बाल यति।
मन वच तन नमन करूँ तुम हो ज्ञानपति।।

ॐ ह्रीं वर्द्धमान तीर्थकर जिनेन्द्र अत्रावतर, अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं वर्द्धमान तीर्थकर जिनेन्द्र अत्रतिष्ठ- ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं वर्द्धमान तीर्थकर जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट्, सन्निधिकरणं।
ॐ ह्रीं वर्द्धमानतीर्थंकरजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं वर्द्धमानतीर्थंकरजिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं वर्द्धमानतीर्थंकरजिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं वर्द्धमानतीर्थंकरजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं वर्द्धमानतीर्थंकरजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं वर्द्धमानतीर्थंकरजिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं वर्द्धमानतीर्थंकरजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं वर्द्धमानतीर्थंकरजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं वर्द्धमानतीर्थंकरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्य प्रभु लेकर मैं आया तुम्हारे पास।
नाश करो प्रभु कर्मों का मन में हो ज्ञान-प्रकाश।।

ॐ ह्रीं वर्द्धमान जिनेन्द्राय पूर्ण अर्घ्य निर्वपामिति स्वाहा।

शान्तये शान्ति धारा-पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

यक्ष पूजा

वर्द्धमान जिनराज का मातंग यक्ष महान्।
ग्रह पीड़ा का हरण करो मैं पूजूँ देव महान्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे मातंग यक्ष अत्रागच्छ इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।

शान्तये शान्तिधारा-पुष्पांजलिं क्षिपेत्

यक्षिणी पूजा

सिद्धायिनी हे देवी मम कष्ट हरो तुम आन।
गुरु ग्रह पीड़ा देता, पूजूँ मन वच प्राण ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे सिद्धायिनी यक्षिणी अत्रागच्छ इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यताम् स्वाहा।

शान्तये शान्ति धारा-पुष्पाजलिं क्षिपेत्

गुरुग्रह पूजा

इन्द्र देव के मन्त्री हो तुम, गुरु नाम से जग में विख्यात।
अष्ट द्रव्य से पूजा करता तीन योग से स्थापित ख्यात।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे गुरु ग्रह अत्रागच्छ इदमर्घ्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम् स्वाहा।

शान्तये शान्तिधारा-पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

भक्ष्य :- भात बड़ा, ध्वजा पीली पीला फूल, केशर दशांग धूप जनेऊ, १ पैसा ताँबे का अर्घ सब द्रव्य अर्थ के साथ में चढ़ाएँ।

मंत्र

ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः फट् गुरुमहाग्रहाय नमः यजमानस्य सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा

(इस मंत्र का नौ बार जाप करें)

छठे वलय की पूजा

पुष्पदन्त पूजा

सुग्रीवराज के राजदुलारे, माता है जयरामा।
पुष्पदन्त है नाम तुम्हारा सबके पूरो कामा।।
शुक्र ग्रह ने पीड़ा की, तुमको आन पुकारा।
अर्घ लेकर आया प्रभुवर, तुम ही एक सहारा।।

ॐ ह्रीं पुष्पदन्त जिनेन्द्र, अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं पुष्पदन्त जिनेन्द्राय, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं पुष्पदन्त जिनेन्द्राय, अत्र मम्। सन्निहितो भव-भव वषट्, सन्निधिकरणं।

ॐ ह्रीं पुष्पदन्त जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पुष्पदन्त जिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पुष्पदन्त जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पुष्पदन्त जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पुष्पदन्त जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पुष्पदन्त जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पुष्पदन्त जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुविधि द्रव्य सजाकर आया आज तुम्हारे पास।
अर्घ चढ़ा कर पूजूँ तुमको मिटे मोह की फाँस।।

ॐ ह्रीं पुष्पदन्त जिनेन्द्राय पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामिति। स्वाहा।

शान्तये शान्ति धारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्

यक्ष पूजा

अजित यक्ष है नाम तुम्हारा करो तुम सबका बेड़ा पार।
शुक्र ग्रह ने मुझको घेरा, अर्घ चढ़ाउँ धीरज धार।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे अजितयक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं

पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यक्षभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।

शान्तये शान्ति धारा-पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

यक्षिणी पूजा

अष्ट रिद्धि नौ निधि को पाने निज कर में आठों द्रव्य लिए।
सहज रीति से सुख पाने को मन में तुम्हारा ध्यान किए।।
यह अर्घ समर्पण करके महाकालि को मैं ध्याऊँ।
विद्यमान ग्रह की यह पीड़ा शमन हेतु तुमको ध्याऊँ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे महाकालि देवि अत्रागच्छ, इदमर्ध्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।

शान्तये शान्ति धारा-पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शुक्र ग्रह पूजा

शुक्र ग्रह की पीड़ा मिटाने देखो मैं आया आज।
वसुविध द्रव्य चढाऊँ पूरो मेरे सारे काज।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे शुक्र ग्रह अत्रागच्छ इदमर्ध्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे, प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।

भक्ष्य : भात, बड़ा, सफेद फूल, सफेद ध्वजा, उम्बर का दातुन दशांग धूप, चन्दन, जनेऊ, १ पैसा ताँबे का, इन सब पदार्थो को अर्ध्य के साथ चढ़ाएँ।

शान्तये शान्ति धारा पुष्पांजलि क्षिपेत्।

मंत्र

ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः फट् शुक्रमहाग्रहाय नमः यजमानस्य सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

(इस मंत्र का नौ बार जाप करें)

सातवें वलय की पूजा
मुनिसुव्रत प्रभु की पूजा

जल चन्दनादि सब द्रव्य कर में लेकर आया हूँ प्रभुवर।
अष्ट कर्म नाशन हेतु सुख पाने आया हूँ प्रभुवर।
अर्घ समर्पण करके मैं अब जिनदेव की अर्चा करता हूँ।
मुनिसुव्रत की पूजा करके भव की बाधा हरता हूँ।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रत तीर्थकर अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं मुनिसुव्रत तीर्थकर अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं मुनिसुव्रत तीर्थकर अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रत तीर्थंकराय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं मुनिसुव्रत तीर्थंकराय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं मुनिसुव्रत तीर्थंकराय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं मुनिसुव्रत तीर्थंकराय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं मुनिसुव्रत तीर्थंकराय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं मुनिसुव्रत तीर्थंकराय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं मुनिसुव्रत तीर्थंकराय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं मुनिसुव्रत तीर्थंकराय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं मुनिसुव्रत तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत भगवान् की भक्ति करूँ मैं आज।
पूर्ण अर्घ चढ़ा कर मैं सफल करूँ सब काज।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय पूर्णअर्घ्यं निर्वपामिति, स्वाहा।

शान्तये शान्ति धारा-पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

यक्ष पूजा

मुनिसुव्रत जिनराज का वरुण यक्ष महान।
अष्ट द्रव्य की पूजा से हो जाए दुख हानि।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे वरुण यक्ष अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरूँ दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा। शान्तये शान्ति धारा-पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

यक्षिणी पूजा

बहुरूपिणी देवी की तुम हो शक्ति महान।
विविध रूप धारण कर, करती दुख की हानि।
ॐ ओं क्रों ह्रीं हें बहुरूपिणी देवी अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।

शान्तये शान्ति धारा-पुष्पांजलिं क्षिपेत्

शनिग्रह पूजा

है शनि ग्रह जग में विख्यात। इसके आगे कौन बिसात।।
जिसको लागे महादुःख पाय। घर बार नष्ट हो जाय।।
इस ग्रह की पूजा करूँ। पूजा कर ग्रह बाधा हरूँ।।
अष्ट द्रव्य ले सामान्। पूजा करलूँ इस ही स्थान।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे शनिगृह अत्रागच्छ इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञ भागं यजामहे प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।

भक्ष्य :- भात, बड़ा, उड़द की घुंगरी काली ध्वजा, खेजड़ा का दातुन, राल की धूप, कस्तूरी मिश्रीत गंध, जनेऊ, १ पैसा ताँबे का, इन सब चीजों का द्रव्य के साथ चढ़ाएँ।

शान्तये शान्ति धारा-पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

मंत्र

ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः फट् शनिमहाग्रहाय नमः ।
यजमानस्य सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।

(इस मंत्र का नौ बार जाप करें)

आठवें वलय की पूजा
नेमिनाथ पूजा

गिरिनार पर्वत से मोक्ष पधारे, शिवा देवी के हो तुम लाल।
समुद्र विजय के राजदुलारे सबको किया निहाल।।
अष्ट द्रव्य से रचाऊँ पूजा गाऊँ तुम्हारी गुणमणिमाल।
अष्ट कर्म के नाशन हेतु नेमि आया तुम्हारे पास।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथ जिनेन्द्र अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं नेमिनाथ जिनेन्द्र अत्रतिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं नेमिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्, सन्निधिकरणं।

ॐ ह्रीं नेमिनाथजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं नेमिनाथजिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं नेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं नेमिनाथजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं नेमिनाथजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं नेमिनाथजिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं नेमिनाथजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं नेमिनाथजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं नेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ जिनेन्द्र की भक्ति करूँ मन लाय।
ग्रह पीड़ा का नाश हो मोक्ष लक्ष्मी मिल जाय।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णं अर्घं निर्वपामीति, स्वाहा।

शान्तये शान्ति धारा-पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

यक्ष पूजा

नेमिनाथ जिनराय का गोमेद यक्ष महान्।
अष्ट द्रव्य की पूजा से हो जाए दुख की हानि।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे गोमेद यक्ष अत्रागच्छ इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुँ दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा। शान्तये शान्तिधारा-पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

यक्षिणी पूजा

अम्बिका है नाम तुम्हारा यक्षी जिनवर की तुम महान्।
नेमिनाथ के धर्मतीर्थ को लेकर चलती देवी महान्।।
गिरिनार पर्वत पर वास तुम्हारा, मेटो ग्रह पीड़ा हे महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके तुम्हें मनाऊँ देवी महान्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे अम्बिका देवी अत्रागच्छ, इदमर्ध्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।

शान्तये शान्तिधारा पुष्पांजलिं क्षिपेद्।

राहू ग्रह पूजा

राहूग्रह ने दुखित किया, सारे जग में पीड़ा भर दी।
हम सब रक्षा चाहते तुम से, तुमने क्यों यह क्रीड़ा कर दी।
आह्वान कर स्थापित करूँ, पूजा में लाऊँ ध्यान।
भक्ष्य सहित सब अष्ट द्रव्य, करूँ समर्पित ससम्मान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे राहूग्रह अत्रागच्छ, इदमर्ध्य पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।

भक्ष : - लापसी, बड़ा, उड़द की घूंघरीं, हरी ध्वजा, लाख की धूप, दर्भ का दातुन, जनेऊ, १ पैसा ताँबे का, इन सभी पदार्थो को द्रव्य के साथ चढ़ाएँ।

शान्तये शन्तिधारा- पुष्पांजलिं क्षिपेत्

मंत्र

ॐ आं क्रों ह्रीं हः फट् राहुमहाग्रहाय नमः, यजमानस्य सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

(इस मंत्र का नौ बार जाप करें।)

नौवें वलय की पूजा

पार्श्वनाथ पूजा

अश्वसेन वामादेवी के लाल जिनेश्वर देवा हो।
जन्म बनारस में तुम लीना पार्श्व प्रभु कहलाये हो।।
भक्ति भाव से पूजा करता मेरा संकट हर लो रे।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर लूँ ग्रह की बाधा हर लो रे।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्, सन्निधिकरणं।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पांर्श्वनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ जिनराज को पूजूँ मन वच काय।
अब सम्पूर्ण अर्घ से सेवूँ सर्व श्री जिनराय।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णं अर्घ्यं निर्वपामीति, स्वाहा।

शान्तये शान्ति धारा पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

यक्ष पूजा

सेवक पार्श्व प्रभु के, तुम धरणेन्द्र तुम कहलाते हो।
आज अर्घ्य से पूजा करके, मन में हम हर्षाते हैं।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे धरणेन्द्र अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षंत पुष्पं चरुँ दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।

शान्तये शान्ति धारा-पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

यक्षिणी पूजा

धरणेन्द्र प्रिया पद्मावती देवी जिनशासन की रक्षक हो।
पार्श्वप्रभु की सेवा करती, भक्तों की तुम शाक्ति हो।
मैं स्थापन करता यहाँ तुम्हारा, ग्रह पीड़ा मिट जाने को।
अष्ट द्रव्य से पूजा करता, मन में शान्ति पाने को।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवी अत्रागच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।

शान्तये शान्तिधारा-पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

केतुग्रह पूजा

केतुग्रह ने जग में आकर जन जन को सब पीड़ा है।
यह पीड़ा नाशन हेतु, इसकी यहाँ स्थापन क्रीडा है।
तन मन वच की भक्ति से, मैं इसकी पूजा करता हूँ।
भक्ति भाव और मन वच तन से पूजा यहाँ पर करता हूँ।
अष्ट द्रव्य और भक्ष्य द्रव्य ले, इसकी सेवा करता हूँ।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे केतुग्रह अत्रागच्छ इदममर्घ्यं पाद्यं जलं गन्धं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्, स्वाहा।

भक्ष्य :- उड़द की घूंघरी, बड़ा, लपसी, हरी ध्वजा, लाख का धूप, जनेऊ, दर्भ का दातुन, १ पैसा ताँबे का, इन सभी को अर्घ के साथ चढ़ाएँ।

मंत्र

ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः फट् केतुमहाग्रहाय नमः, यजमानस्य सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

(इस मंत्र का नौ बार जाप करें)

ॐ आं क्रों ह्रीं श्रीं रवि सोमादि सर्वे गृहा मम सर्वोपद्रवं शान्तिं कुरु कुरु, स्वाहा।

(इस मंत्र का १०८ बार लौंगों से जाप करें)

जयमाला

नवग्रह पूजा विधान की सब गाएँ जयमाल।
रोग शोक सब दूर हों गाएँ गुण मणिमाल।।
जय नवग्रह पूजा विधान, करो भविजन मिलकर गान।
वसुद्रव्य सहित यहाँ पर आकर, करूँ भक्ति, गुण गा गाकर।
रवि सोम मंगल बुध गुरु ग्रह, शनि शुक्र राहु केतु करते विग्रह।
जग जीवन को पीड़ा देते, इस कारण इनकी अर्चा करते।
इससे जिनपूजा है महान, यक्ष यक्षी की भक्ति का गान।
वसुद्रव्य भक्ष्य ले सबके साथ, करूँ ग्रहों की पूजा निज हाथ।
क्रमशः इनकी पूजा करके, जग में सब सुख हैं धरते।
जिसको जो ग्रह पीड़ा दे, वह नित्य प्रति उस ग्रह को पूजे।
विधि विधान से कर मन्त्र जाप, हवनादि से हो ग्रह शान्ति प्राप्त।
अन्तिम कर ले जो महाविधान, ग्रह रोग शोक सब शान्त जान।
जय पद्म प्रभु स्वामी जिनेश, जय चन्द्र प्रभु जग के हितेश।
जय वासुपूज्य मल्लि जिनेश, जय वर्धमान सबके हितेश।
जय पुष्पदन्त मुनि सुव्रतेश, जय नेमिनाथ पार्श्व हितेश।।
इनकी पूजा से शान्ति होय, सब क्लेश कटे बहु सुख होय।
ग्रह की पीड़ा सब लय होय, सब क्लेश कटे बहुधन होय।
परिवारादि में सब शुभ होय, मन में शान्ति बढ़े सदा सुख होय।
श्रद्धा भक्ति से जो करे विधान, उसके ग्रह पीड़ा मत जान।
मन वांछित सारा कारज होय, बढ़े यश अपयश दूरी होय।
कुन्थु कहता सविनय नाथ, मिले मुक्ति मन में धर्म के साथ।
चरण पड़ूँ विनती करूँ, झुक झुक जोड़ूँ हाथ।
भूल चूक सब क्षमा करो, रहूँ मैं धर्म के साथ।

शान्तये शान्तिधारा पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अणिन्दा एक क्षेत्र है, वहाँ पार्श्व प्रभु जिनराज।
उनके चरण बैठकर, रचा विधान जनहित काज।।
दो हजार पचास का, भाद्र शुक्ला जान।
है तिथि त्रयोदशी, वार मंगल पहचान।।
संस्कृत से हिन्दी किया, सरल भाषा में जान।
भूल चूक सब माफ हो, बुद्धि महा अज्ञान।
परम शिष्या एक आर्यिका उसका क्षेमा नाम।
उसके कहने से रचा यह नवगृह विधान।

'इति'

नोट :- इस विधान को करने से पहले जिस ग्रह की पीड़ा हो, उस ग्रह के मंत्रों का विधिपूर्वक साढ़े बारह हजार जाप करें। उसके बाद विधान की पूजा करके होम कुण्ड में अग्नि प्रज्वलित कर दशांग आहुती दें, फिर शान्ति पाठ एवम् विसर्जन करके विधान समाप्त करें एवं फिर भगवान् की प्रतिमा मन्दिर जी से जिस वेदी से लाई गई थी, वहां अभिषेक कर विराजमान करें।

वास्तू - विधान

आद्य मानस

यह वास्तु विधान आपके हाथों में प्रस्तुत है, यह मूलत: संस्कृत भाषा में था, लोग जानते भी नहीं थे, इस कारण गृह प्रवेश के समय विद्वान् लोग मात्र शांति विधान करके ही गृह प्रवेश कर लेते हैं या किसी जैनेतर पंड़ित को बुलाकर उस विधि से गृह शुद्धि करवाकर गृह प्रवेश कर लेते हैं, किन्तु घर के उपद्रव ज्यों के त्यों बने रहते हैं। यह वास्तु विधान प्रतिष्ठा शास्त्रों में उपलब्ध होता है। मंदिर की प्रतिष्ठा के समय इसे किया जाता है, वह भी दक्षिण भारत में। उत्तर भारत के कुछ ही प्रतिष्ठाचार्य इसे करवाते हैं। बाकी सब परम्परागत मूंढ़ पंडित इसको नहीं करवाते, कुछ लोग मात्र पुष्पांजलि करके छोड़ देते हैं। यह ठीक नहीं है। जिन मंदिर प्रतिष्ठा के समय, नवीन गृह प्रवेश के समय, यह वास्तु विधान अवश्य करना चाहिए। इसके करने से उस भूमि के सभी देवता संतुष्ट हो जाते हैं। फिर कोई उपद्रव नहीं होता और ग्रह शांति हो जाती है। इस विधान के अन्दर जिस देवता के लिए जो-जो भक्ष्य पदार्थ हैं उनको बनाकर अवश्य चढ़ाएँ, तब ही ग्रह शांति होती है। इस विधान के पूर्ण होने पर होम अवश्य करना चाहिए। लघु होम करें, मंत्र का 12 हजार जाप करके दशांश आहुति दें। मंत्र लिख दिया गया है, वहाँ से देख लें। इस विधान के अन्दर जो भी भक्ष्य पदार्थ हैं वे सब 'विधान' के अनुसार ही लिखे गए हैं, हमने अपने मन से कुछ भी नहीं लिखा है। ग्रह शांति के लिए पहले जिनमंदिर से जिनप्रतिमा को लाकर विधिवत् शुद्धिपूर्वक घर में विराजमान करें। विधान समाप्त होने के बाद विधिपूर्वक वापिस मंदिर में विराजमान कर दें, 'चल' प्रतिमा को घर में लाने से कोई दोष नहीं है। वेदी की मूल प्रतिमा अचल होती है बाकी सभी प्रतिमा चल होती हैं। यह विधान हमने संस्कृत से हिन्दी छन्द में, समाज के आग्रह से लिखा है। यह विधान प्रचार में आ जाए इसलिए यह कार्य किया है, समाज अवश्य लाभ उठाएगा।

ग.आ.कुन्थुसागर

प्राक्कथन

'जैन वास्तु विधान' की यह जिनवाणी गृहस्थों के लिये बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। 108 गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी महाराज लोगों पर बहुत बड़ा उपकार है जो इस पुस्तक की रचना की। मन्दिर, मकान, दुकान, आश्रम वगैरहा जो भी नई इमारतें बनाई जाती है, तो उस धरती की खुदाई, चिनाई, बनवाई आदि कार्य करते हुए जो स्थावर, जीव, एक इन्द्रीय आदि जीवों को जो त्रास पहुँचता है, उन दोषों का निवारण करने के लिये उनको आह्वानन करने की, अर्घ्य देने की तथा उनका आदर सत्कार करने की विधि इस पुस्तक में अच्छी तरह दर्शायी है। पहले देवशास्त्र गुरु और जिनेन्द्र भगवान की पूजा आराधना, स्तुति, गुणगान है। बाद में देवो का आह्वान, अर्घ्य, समर्पण विधि है और ये भी मालुम पड़ता है कि कितने और किस प्रकार के देव हैं उन सभी के क्या-क्या नाम है ? बहुत कम लोग जानते हैं कि वास्तु शुद्धि क्या है ? इस पुस्तक से सभी को वास्तु-शुद्धि का ज्ञान विधिपूर्वक होगा।

बा.ब्र.जयु दीदी

वास्तु देवों के भक्ष्य पदार्थों की सूची

क्र. सं.	नाम	पदार्थ
1.	ब्रह्म	चावल की धानी, शक्कर, घी, दूधपाक (2)
2.	इन्द्र	कोष्ट, उपलेट, फूल
3.	अमी	दूध, घी, तगर
4.	यम	तिल पापडी, तुअर की घूँगरी
5.	नैऋत्य	तिल का तेल, तिल, पापड़ी
6.	वरुण	धानी और दूध पाक
7.	पवन	हल्दी-चूर्ण
8.	कुबेर	दूधपाक
9.	ईशान	घी और दूधपाक
10.	आर्य	मैदा का घूँगरा और फल
11.	विवस्वान	उड़द की घूँगरी और तिल
12.	मित्र	दही बड़ा, घूँगरा
13.	भूधर	दूध
14.	सविन्द्र	घाणा और चावल धानी
15.	सविन्द्र	कपूर, केशर, लौंग
16.	इन्द्र	मूँग का चूर्ण और फूल
17.	इन्द्रराज	चावल बड़े, मूँग का चूर्ण
18.	रुद्र	गुड़, चावल का आटा, अंबेली।
19.	रुद्रराज	गुड़, घूँगरा
20.	आप	गुड़, चावल का आटा, सफेद कमल, शंख, अंबोली।
21.	आपवत्स	गुड़, चावल का आटा, सफेद कमल, शंख, अंबोली।
22.	पर्जन्य	घी
23.	जयन्त	ताजा मक्खन
24.	भास्कर	गुड़ और सफेद फूल
25.	सत्यक	ताजा मक्खन
26.	भृष	मक्खन का गोला
27.	अन्तरिक्ष	हल्दी और उड़द का चूर्ण

28.	पुष	तुअर की घूँगरी, दूध
29.	वितथ	सौंठ, कालीमिर्च, पीपल
30.	राक्षस	गुड़
31.	गंर्धव	कपूर, चन्दन मिश्रित जल
32.	भंगराज	दूधपाक
33.	मृषाय	उड़द की घूँगरी
34.	दौवारिक	चावल का आटा
35.	सुग्रीव	मोदक
36.	पुष्पदंत	पुष्प और जल
37.	असुर	लाल भात
38.	शोष	तिल, अक्षत
39.	रोग	पूरण पूड़ी
40.	नाग	दूध, शक्कर, चावल की धानी
41.	मुख्य	श्रीखंड
42.	भल्लाट	गुड़, भात
43.	भृगदेव	गुड़ का मालपूआ
44.	अदिति	मोदक
45.	उदिति	तिल पापड़ी
46.	विचारी	नमक वाला भात
47.	पूतना	तिल, चावल का आटा
48.	पाप	राक्षसी मूँग की घूँगरी
49.	चरकी	घी, गुड़

नोट :- उपर्युक्त भक्ष्य द्रव्य लिखे हैं, ये तैयार करके चढ़ाएँ, कभी कोई चीज न मिले तो अलग बात है, सुविधानुसार करलें। किसी को ये भक्ष्य पदार्थ चढ़ाना पसंद नहीं है तो एक प्रकार की गोले आदि की मिठाई बनाकर चढ़ा लें। विधान की उपेक्षा न करें। बहुत सी जगह, बहुत सी चीजों के नाम समझ में नहीं आए, जैसा उसमें लिखा था वैसा हमने लिख दिया, समझदार समझकर ग्रहण करें। यदि किसी को भगवान की प्रतिमा लाने में असुविधा हो तो विनायक यंत्र से काम चला लें। श्री जिन भगवान या विनायक यंत्र को पंचामृत अभिषेक जलाभिषेक करके शान्तिधारा के बाद देव, शास्त्र, गुरु की पूजा, भगवान आदिनाथ, भगवान शान्तिनाथ, भगवान चन्द्रप्रभु का अर्घ, भगवान पार्श्वनाथ, भगवान महावीर स्वामी, सरस्वती पूजा, आचार्य आदिसागरजी महाराज की पूजा करके विधान प्रारम्भ करें।

लघु वास्तु विधान मण्डल नक्शा

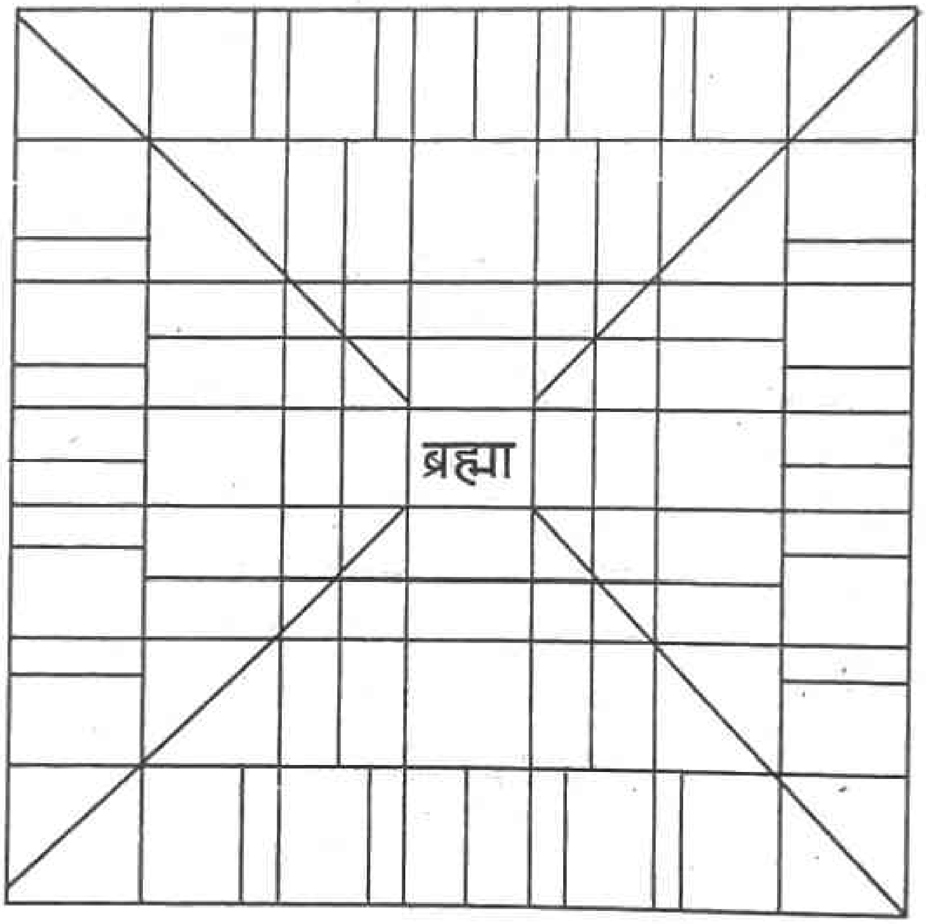

आचार्य अकलंक ज्ञानपीठ
ग ग कुन्थुसागर विद्या शोध संस्थान
श्री क्षेत्र कुंथुगिरी, मु. पो. आळते, ता. हातकणंगले.
जि कोल्हापूर पिन-कोड ४१६ १०९
फोन २४८७७६६

गणधर कुंड

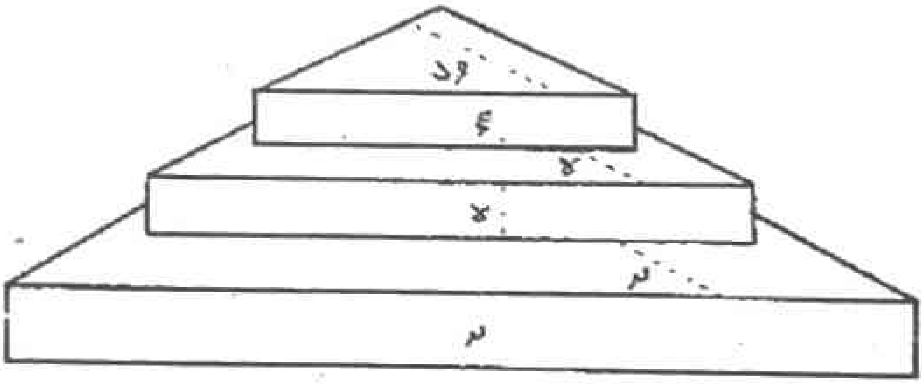

सामान्य केवली कुंड

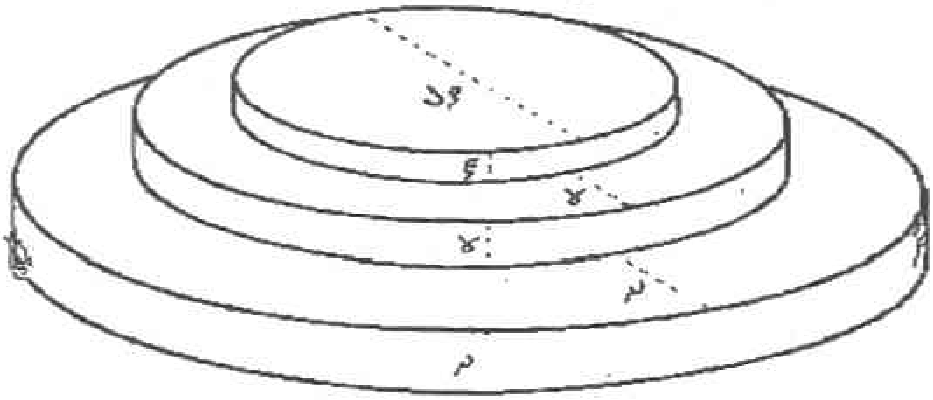

तीर्थंकर कुंड

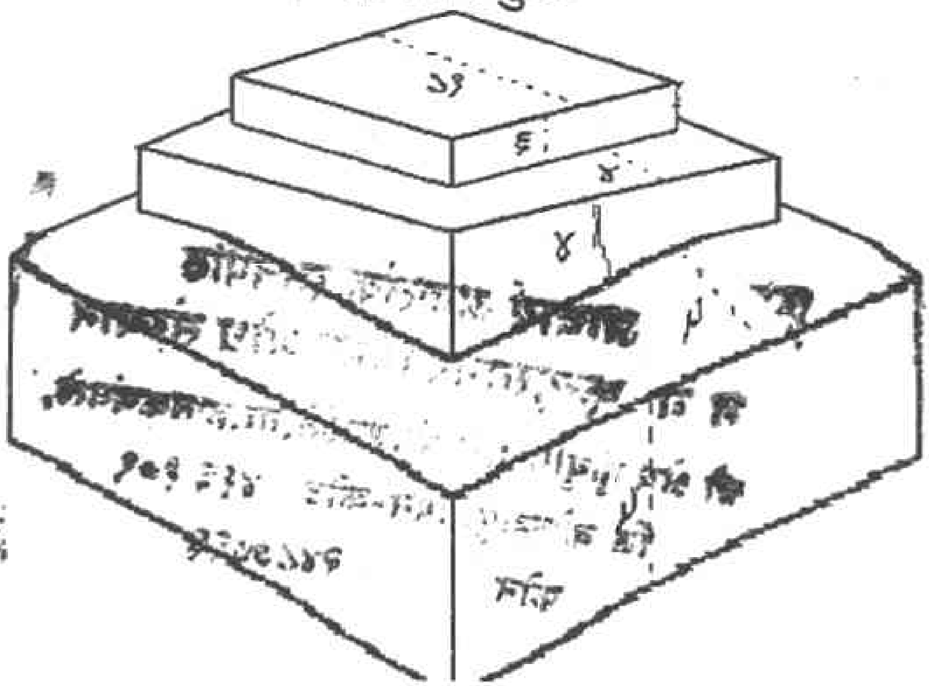

वास्तु विधान प्रारम्भ

मंगल

नमन करूँ अरहंत को श्रुत को सुमरूँ आज।
गुरु पद चरणन नमूँ, रचूँ वास्तु विधान॥ 1॥
जिनमन्दिर गृह आदि का वास्तु करो सुजान।
बिना वास्तु गृह आदि तो करे उपद्रव हान॥ 2॥
वास्तु पूजा द्रव्य ले, और पुष्पांजलिं हाथ।
जिनेन्द्रादि सब देव मिल, मुझको करो सहाय॥ 3॥
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, मन में मोद भराय।
दुख दारिद्र सभी टले, घर में आनन्द छाय॥ 4॥

ॐ परम ब्रह्मणे नमो नम:। स्वस्ति 2, जीव 2, नद 2, वधर्स्व 2, विजयस्व 2, अनुशधि 2, पुनीहि 2, पुन्याहं 2, मांगल्यं 2 (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

बाजे बजाने का मन्त्र

घंटा झालर ढोल बजाऊँ, वीणा बांसुरी आदि।
सब वाद्यों को पुष्प ले, अर्पण नाना आदि॥ 5 ॥

ॐ ह्रीं वाद्यमुदघोषयामि स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जल थल शिला बालुका लेकर, भूमि शोधन करता हूँ।
हीरा मणि मोती लेकर, सुन्दर मंगल रचता हूँ॥
आम्र अशोकादि के पल्लव से, मंडप को सजाया आज।
नाना विध के पुष्प चढ़ाकर, पुष्पांजलि मैं करता आज॥ 6॥

ॐ ह्रीं वास्तुमंडपे। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पंचकुमार पूजा

वास्तु कुमार देव को, पूजूँ मन हर्षाय।
यज्ञ भाग का अंश दे, अर्घ्य चढ़ाऊँ आय॥ 7॥

ॐ ह्रीं हे वास्तु कुमार देव अत्र आगच्छ-आगच्छ, इदं अर्घ्य समर्पयामि स्वाहा। (शान्तिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

वायुकुमार देव को, पूजूँ मन वच काय।
अष्ट द्रव्य से पूजहूँ, मन में बहु हर्षाय॥ 8 ॥

ॐ ह्रीं हे वायुकुमारदेव अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्य आदि समर्पयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेव सर्वविघ्न विनाशनाय महीं पूतां कुरु-कुरु हूं फट् स्वाहा। (दर्भपूले से भूमि संमार्जन करें)

मेघ गर्जना करते करते, मेघ कुमार पधारो आज।
यज्ञ भाग में जल बरसा कर, भूमि प्रक्षालन कर दो आज॥
जल चन्दनादि द्रव्य सजाकर अर्घ्य समर्पण करता हूँ।
मन वच तन से पूजा करके, मन में शांति भरता हूँ॥ 9॥

ॐ ह्रीं हे मेघकुमारदेव अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्य समर्पयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीं मेघकुमार देव धरां प्रक्षालय-2, अं हं सं वं झं ढं यक्ष फट् स्वाहा। (दर्भपूले से भूमि संमार्जन करें)

अग्निकुमार देव को, पूजूँ मन वच काय।
अष्ट द्रव्य से पूजहूँ, हम को करो सहाय॥ 10॥

ॐ ह्रीं हे अग्नि कुमार देव अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्य समर्पयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीं अग्निकुमार देव भूमि ज्वालय-2 अं हं सं झं ढं यक्ष फट् स्वाहा। (दर्भ की पूली जलाकर रखें।)

सहस्र नाग स्थापन करूँ, अर्चूं मन हर्षाय।
जलांजलि यहाँ देयकर, यज्ञ को करो सहाय ॥ 11 ॥

ॐ ह्रीं हे नागकुमारदेव अत्र आगच्छ-आगच्छ इदं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा। (ईशान दिशा में जल हाथ में लेकर छोड़ें।)

पुष्पांजलि अर्पण करूँ, पुष्पों को लेकर हाथ।
वास्तु यज्ञ प्रारम्भ करूँ, जिन चरणन धरूँ माथ ॥ 12 ॥

प्रारम्भ-निरूपण

जिन प्रतिष्ठा विधान में, वास्तु करो विधान।
प्रथम अंकुरारोपण करो, करो सुमंगल गान ॥ 1 ॥
ध्वजारोहण विधि करो, जिन मन्दिर में जाय।
इर्यापथशुद्धि करो, करो अमंगल हान ॥ 2 ॥
तीन प्रदक्षिण देय कर, दर्शन करो जिनराय।
जिन प्रतिमा का न्हवन करो, शांति मंत्र का पाठ ॥ 3 ॥
देव-शास्त्र-गुरु आदि की, पूजा करो सुजान।
सकलीकरण, मंडपशुद्धि, इन्द्रप्रतिष्ठा जान ॥ 4 ॥
आद्यविधि सभी करो, फिर करो वास्तु विधान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करो, मन में शांति लाय ॥ 5 ॥
जिन मन्दिर, गृह आदि में, वास्तु करो सुजान।
विघ्न उपद्रव शांत हो, मन में शांति जान ॥ 6 ॥

प्रथम कोष्ठ का अर्घ्य

(वास्तु देव पूजा)

समस्त वास्तु कुमार को पूजूँ मन हर्षाय।
पुष्पांजलिं क्षेपण करूँ , विघ्न शांत हो जाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीं भूः स्वाहा। (पुष्पांजलि क्षिपेत्)।

(1) ब्रह्म देव पूजा :

जय ब्रह्म वास्तु तुम हो महान, इस यज्ञ भूमि में तिष्ठो आय।

वसुद्रव्य भक्ष्य में लाया आज, अर्पू मैं तुमको यज्ञ माय॥ 1 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्तवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे ब्रह्मन् अत्र आगच्छ-आगच्छ, स्वस्थाने तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

बलि मंत्र :

ॐ ह्रीं ब्रह्मणे स्वाहा, ब्रह्म परिजनाय स्वाहा, ब्रह्म अनुचराय नमः, वरुणाय नमः, सोमाय स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, ॐ स्वाहा। ॐ भूः स्वाहा, भूवः स्वाहा, भूर्भुवः स्वाहा, स्वः स्वाहा, स्वधा स्वाहा, हे ब्रह्मण! इदमर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे। प्रतिगृह्ताम्-2 इति समर्पयामि स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

नोट:- अर्घ्य के साथ चावल की धानी, घी, शक्कर, खीर और तगर चढ़ाएँ। इस प्रकार आगे भी जिस-2 देव के जो-जो भक्ष्य पदार्थ हैं उन्हें उनके कोठों पर अर्घ्य के साथ चढ़ाएँ। इस प्रकार 49 कोठों पर ही चढ़ाएँ।

(2) इन्द्र देव पूजा :

हे इन्द्र देव तुम आओ इस यज्ञ मांहि।

जो भक्ष्य हैं वो ग्रहण करो यज्ञ मांहि॥

इस यज्ञ में अर्चन मैं करूँ पूजा विधि से।

सन्तुष्ट हो सुख करो हम पे विधि से ॥ 2 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्तवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे अग्निदेव अत्रागच्छ-2, स्वस्थाने तिष्ठ-2 ठः ठः स्वाहा।

ॐ ह्रीं इन्द्राय स्वाहा, इन्द्र परिजनाय स्वाहा, इन्द्र अनुचराय नमः, वरुणाय स्वाहा, सोमाय स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, ॐ स्वाहा, ॐ भूः स्वाहा, भूवः स्वाहा, भूर्भुवः स्वाहा, स्वः स्वाहा, स्वधा स्वाहा, हे इन्द्र देव इदमर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धां, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं

यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम-2, समर्पयामि स्वाहा।

शांतिधारा, (पुष्पांजलिं क्षिपेत्) ।

अर्घ्य के साथ कोष्ट, उपलेट, फूल चढ़ाएँ।

(3) अग्नि देव पूजा :

अग्निकुमार देव की यहाँ पर पूजा करने आया हूँ।
नाना विधि से पूजा करके मन में शांति पाया हूँ॥
जल चंदन अक्षत आदि ले मैं अर्घ्य बनाकर लाया हूँ।
सुख समृद्धि सब शांति पाने, अर्चन करने आया हूँ॥ 3 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्तवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे अग्नि देवते अत्र आगच्छ-आगच्छ स्वस्थाने तिष्ठ-2, ठ: ठ: स्वाहा।

हे अग्नि देव इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति समर्पयामि स्वाहा। शांतिधारा, (पुष्पांजलिं क्षिपेत्) ।

अर्घ्य के साथ (दूध, घी, तगर चढ़ाएँ) ।

(4) यमदेव पूजा :

यम कुमार देव की यहाँ पर पूजा करने आया हूँ।
नाना विधि से पूजा करके मन में शांति पाया हूँ॥
जल चंदन अक्षत आदि ले मैं अर्घ्य बनाकर लाया हूँ।
सुख समृद्धि सब शांति पाने, अर्चन करने आया हूँ ॥ 3 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्तवर्णे सम्पूर्ण लक्षण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे अग्नि देवते अत्र आगच्छ-आगच्छ स्वस्थाने तिष्ठ-2, ठ: ठ: स्वाहा।

हे यम देव इद्मर्घ्यं पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति समर्पयामि स्वाहा। शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अर्घ्य के साथ तिल का चूर्ण, तुअर का बाकरा चढ़ाएँ।

(5) नैऋत्य देव पूजा :

नैऋत्य कुमार देव की यहाँ पूजा करने आया हूँ।
नाना विधि से पूजा करके मन में शांति पाया हूँ।।
जल चंदन अक्षत आदि ले मैं अर्घ्य बनाकर लाया हूँ।
सुख समृद्धि सब शांति पाने, अर्चन करने आया हूँ ॥ 5 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे नैऋत्य कुमार देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति समपयामि स्वाहा।

शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अर्घ्य के साथ तिल का तेल, तिल-पापड़ी चढ़ाएँ।

(6) वरुण देव पूजा :

वरुण कुमार देव की यहाँ पर पूजा करने आया हूँ।
नाना विधि से पूजा करके मन में शांति पाया हूँ।।
जल चंदन अक्षत आदि ले मैं अर्घ्य बनाकर लाया हूँ।
सुख समृद्धि सब शांति पाने, अर्चन करने आया हूँ।। 6 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे वरुण देव अत्र आगच्छ-2 पुष्पांजलिं क्षिपेत्, इदमर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्2, इति समर्पयामि स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ (धाणी, दूध-पाक (रबड़ी), खीर चढ़ाएँ

(7) पवन देव पूजा :

पवन कुमार देव की यहाँ पर पूजा करने आया हूँ।
नाना विधि से पूजा करके मन में शांति पाया हूँ।।
जल चंदन अक्षत आदि ले मैं अर्घ्य बनाकर लाया हूँ।
सुख समृद्धि सब शांति पाने, अर्चन करने आया हूँ।। 7 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पवनदेव अत्र आगच्छ-2 पुष्पांजलिं क्षिपेत्। इदं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2 इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ पिसी हल्दी चढ़ाएँ।

(8) कुबेर देव पूजा :

कुबेर धनपति की यहाँ पर मैं पूजा करने आया हूँ।
नाना विधि से पूजा करके मन में शांति पाया हूँ॥
जल चंदन अक्षत आदि ले मैं अर्घ्य बनाकर लाया हूँ।
सुख समृद्धि सब शांति पाने, अर्चन करने आया हूँ॥ 8 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे कुबेर देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत्। इदं अर्घ्य पाद्यं, जल, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ दूध में मिलाया हुआ भात चढ़ाएँ।

(9) ईशान देव पूजा :

ईशान कुमार देव की यहाँ पर पूजा करने आया हूँ।
नाना विधि से पूजा करके मन में शांति पाया हूँ॥
जल चंदन अक्षत आदि ले मैं अर्घ्य बनाकर लाया हूँ।
सुख समृद्धि सब शांति पाने, अर्चन करने आया हूँ॥ 9 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे ईशान देव अत्र आगच्छ-2 पुष्पांजलिं क्षिपेत्। इदं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ घी, क्षीरान्न चढ़ाएँ।

(10) आर्य देव पूजा :

आर्य कुमार देव की यहाँ पर पूजा करने आया हूँ।
नाना विधि से पूजा करके मन में शांति पाया हूँ॥
जल चंदन अक्षत आदि ले मैं अर्घ्य बनाकर लाया हूँ।
सुख समृद्धि सब शांति पाने, अर्चन करके आया हूँ ॥ 10 ॥

ॐ आं क्रौं ही हे आर्य देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् । इदं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, फलं, बलिं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2 इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ मैदा का घूंगरा और फल चढ़ाएँ।

(11) विवस्वान देव पूजा :

विवस्वान देव की यहाँ पर पूजा करने आया हूँ।
नाना विधि से पूजा करके मन में शांति पाया हूँ॥
जल चंदन अक्षत आदि ले अर्घ्य बनाकर लाया हूँ।
सुख समृद्धि सब शांति पाने, अर्चन करने आया हूँ॥ 11 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे विवस्वानदेव अत्रागच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत्। इदं अर्घ्य पाद्यं, जलं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2 इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्) ।

अर्घ्य के साथ उड़द की घूँघरी (बाकरा), तिल चढ़ाएँ।

(12) मित्र देव पूजा :

शत्रु शक्ति निवारण देव हो, जगत शांतिकरण तुम हेत हो।
हम यजें तुम्हें अर्घ्य आदि से, ग्रहण करो तुम देव शांति से ॥ 12 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे मित्रदेव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् । इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, फलं, बलिं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ 'दही बड़ा, मैदा का भुजिया' चढ़ाएँ।

(13) भूधरदेव पूजा :

भूधर देव पधारो यज्ञ में, गृह शांति करो परिवार में।

वसुद्रव्य भक्ष्य सब वस्तु ले, जजत हूँ इस यज्ञ आदि में ॥ 13 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे भूधरदेव अत्र आगच्छ-2, इदं अर्घ्य पाद्यं, जलं गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ दूध चढ़ाएँ।

(14) सविन्द्र देव पूजा :

सविन्द्र देव पधारो यज्ञ में, गृह शांति करो परिवार में।

वसुद्रव्य भक्ष्य सब आदि ले, जजत हूँ इस यज्ञ आदि में ॥ 14 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे सविन्द्रदेव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलि क्षिपेत्। इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलि, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ चावल की धाणी और धनिये की धाणी चढ़ाएँ।

(15) साविन्द्र देव पूजा :

साविन्द्र देव पधारो यज्ञ में, गृह शांति करो परिवार में।

वसुद्रव्य भक्ष्य सब आदि ले, जजत हूँ इस यज्ञ आदि में ॥ 15 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे सविन्द्रदेव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलि क्षिपेत्। इदम अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलि, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ कपूर, कशमीर केशर, लवंग आदि सुगन्धित द्रव्यों से मिश्रित जल चढ़ाएँ।

(16) इन्द्र देव पूजा :

हे इन्द्र देव पधारो यज्ञ में, गृह शांति करो परिवार में।

वसु द्रव्य भक्ष्य सब आदि ले, जजत हूँ इस यज्ञ आदि में ॥ 16 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे इन्द्रदेव अत्र आगच्छ-2 पुष्पांजलिं, क्षिपेत्। इदं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृहाताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ मूँग का चूर्ण और फूल चढ़ाएँ।

(17) इन्द्रराज देव पूजा :

हे इन्द्र देव पधारो यज्ञ में, गृह शांतिकरो परिवार में।

वसु द्रव्य भक्ष्य सब आदि ले, जजत हूँ इस यज्ञ आदि में ॥ 17 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे इन्द्रदेव अत्र आगच्छ-2 पुष्पांजलिं, क्षिपेत्। इदं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृहाताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ चावल के बड़े और मूँग का चूर्ण चढ़ाएँ।

(18) रुद्र देव पूजा :

हे रुद्र देव पधारो यज्ञ में गृह शांति करो परिवार में।

वसुद्रव्य भक्ष्य सब आदि ले, जजत हूँ इस यज्ञ आदि में ॥ 18 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे रुद्रदेव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ गुड़, मैदा का घूँगरा चढ़ाएँ।

(19) रुद्र राजा की पूजा :

हे रुद्रराज पधारो यज्ञ में गृह शांति करो परिवार में।

वसुद्रव्य भक्ष्य सब आदि ले, जजत हूँ इस यज्ञ आदि में ॥ 19 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे रुद्रराज अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलि क्षिपेत्। इदं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ गुड़ चावल का आटा, अम्बोली (इमली) चढ़ाएँ।

(20) आप्देव पूजा :

हे आप्देव पधारो यज्ञ में गृह शांति करो परिवार में।

वसुद्रव्य भक्ष्य सब आदि ले, जजत हूँ इस यज्ञ आदि में ॥ 20 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे आप्देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलि क्षिपेत्। इदमर्घ्यं, पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ गुड़, चावल का आटा, सफेद कमल, शंख, अम्बोली चढ़ाएँ।

(21) आपवत्सदेव पूजा :

आपवत्स देव पधारो यज्ञ में, ग्रह शांति करो परिवार में।

वसुद्रव्य भक्ष्य सब आदि ले, जजत हूँ इस यज्ञ आदि में ॥ 21 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे आपवत्स देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत्। इदं अर्घ्यं पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ गुड़, चावल का आटा, सफेद कमल, शंख, अम्बोली चढ़ाएँ।

(22) पर्जन्य देव पूजा :

हे पर्जन्य देव पधारो यज्ञ में, शांति करो परिवार में।

वसुद्रव्य भक्ष्य सब आदि ले, जजत हूँ इस यज्ञ आदि में॥ 22 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पर्जन्य देव अत्र आगच्छ-2 पुष्पांजलि क्षिपेत् इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ घी चढ़ाएँ।

(23) जयन्त देव पूजा :

हे जयन्त देव पधारो यज्ञ में, ग्रह शांति करो परिवार में।

वसुद्रव्य भक्ष्य सब आदि ले, जजत हूँ इस यज्ञ आदि में ॥ 23 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे जयन्तदेव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं, क्षिपेत् इदं अर्घ्यं, पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फल, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ ताजा मक्खन चढ़ाएँ।

(24) भास्कर देव पूजा :

भास्कर देव पधारो यज्ञ में, ग्रह शांति करो परिवार में।

वसुद्रव्य भक्ष्य सब आदि ले, जजत हूँ इस यज्ञ आदि में ॥ 24 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे भास्करदेव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत्। इदं अर्घ्यं, पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ गुड़ और सफेद फूल चढ़ाएँ।

(25) सत्यक देव पूजा :

सत्यकाय पधारो यज्ञ में, ग्रह शांति करो परिवार में।

वसुद्रव्य भक्ष्य सब आदि ले, जजत हूँ इस यज्ञ आदि में ॥ 25 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे सत्यकाल देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत्। इदमधर्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ ताजा मक्खन चढ़ाएँ।

(26) भृषभदेव पूजा :

हे भृषदेव पधारो यज्ञ में, ग्रह शांति करो परिवार में।

वसुद्रव्य भक्ष्य सब आदि ले, जजत हूँ इस यज्ञ आदि में ॥ 25 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे भृषदेव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् । इदंअर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ ताजा मक्खन का गोला चढ़ाएँ।

(27) अन्तरिक्ष देव पूजा :

अन्तरिक्ष देव को यहाँ हम पूजते, ग्रह शांति के लिए हम अर्चते।

वसुद्रव्य को लेकर आ गए, दुःख दूर करो मन भा गए ॥ 27 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे अन्तरिक्ष देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् इदमअर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ हल्दी और उड़द का चूर्ण चढ़ाएँ।

(28) पुच्छदेव पूजा :

पुच्छदेव को हम यहाँ पूजते, ग्रह शांति करो हम अर्चते।

वसुद्रव्य को लेकर आ गए, दुःख दूर करो मन भा गए ॥ 28 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पुच्छदेव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् । इदमं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ तुअर के बाकरे व दूध चढ़ाएँ।

(29) वितथ देव पूजा :

वितथ देव को यहाँ हम पूजते, ग्रह शांति करो हम अर्चते।

वसुद्रव्य को लेकर आ गए, दुख दूर करो मन भा गए॥ 29 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे वितथ देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् । इदमं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ सौंठ, कालीमिर्च व पीपल चढ़ाएँ।

(30) राक्षस देव पूजा :

राक्षस देव को यहाँ हम पूजते, ग्रह शांति करो हम अर्चते।

वसुद्रव्य को लेकर आ गए, दुख दूर करो मन भा गए॥ 30 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे राक्षस देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् । इदमं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ गुड़ चढ़ाएँ।

(31) गन्धर्व देव पूजा :

गन्धर्व देव को यहाँ हम पूजते, ग्रह शांति करो हम अर्चते।

वसुद्रव्य को लेकर आ गए, दुःख दूर करो मन भा गए॥ 31 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे गन्धर्व देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् । इदमं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ कपूर और सुगन्धित जल चढ़ाएँ।

(32) भंगृगराज देव पूजा :

भृंगराज को यहाँ हम पूजते, ग्रह शांति करो हम अर्चते।

वसुद्रव्य को लेकर आ गए, दुःख दूर करो मन भा गए॥ 32 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे भृंगराज देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् । इदमं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ रबड़ी चढ़ाएँ।

(33) मृष देव पूजा :

मृष देव को यहाँ हम पूजते, ग्रह शांति करो हम अर्चते।

वसुद्रव्य को लेकर आ गए, दुःख दूर करो मन भा गए॥ 33 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे मृष देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् । इदमं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ उड़द की घूंगरी चढ़ाएँ।

(34) दोवारिक देव पूजा :

दोवारिक देव को यहाँ हम पूजते, ग्रह शांति करो हम अर्चते।

वसुद्रव्य को लेकर आ गए, दुःख दूर करो मन भा गए॥ 34 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे दोवारिक देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

इदंअर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ चावल का आटा चढ़ाएँ।

(35) सुग्रीव देव पूजा :

सुग्रीव देव को यहाँ हम पूजते, ग्रह शांति करो हम अर्चते।

वसुद्रव्य को लेकर आ गए, दुःख दूर करो मन भा गए॥ 35 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे सुग्रीव देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् । इदंअर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ लड्डू चढ़ाएँ।

(36) पुष्पदंत देव पूजा :

पुष्पदंत देव को यहाँ हम पूजते, ग्रह शांति करो हम अर्चते।

वसुद्रव्य को लेकर आ गए, दुःख दूर करो मन भा गए॥ 36 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पुष्पदंत देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् । इदंअर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ फूल और जल चढ़ाएँ।

(37) असुर देव पूजा :

असुर देव को यहाँ हम पूजते, ग्रह शांति करो हम अर्चते।

वसुद्रव्य को लेकर आ गए, दुःख दूर करो मन भा गए॥ 37 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे असुर देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् । इदंअर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्) ।

अर्घ्य के साथ लाल रंग का भात चढ़ाएँ।

(38) शोष देव पूजा :

शोष देव को यहाँ हम पूजते, ग्रह शांति करो हम अर्चते।

वसुद्रव्य को लेकर आ गए, दुःख दूर करो मन भा गए॥ 38 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे शोष देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् । इदं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्) ।

अर्घ्य के साथ तिल और अक्षत चढ़ाएँ।

(39) रोग देव पूजा :

रोग देव को आज मैं, पूजूँ भक्ति समेत।

रोग शोक सब दूर हों, मन को शांति देत ॥ 39 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे रोग देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् । इदं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्) ।

अर्घ्य के साथ गुड़ की मीठी पूड़ी चढ़ाएँ।

(40) नागदेव पूजा :

नागदेव की आज मैं पूजा करूँ हर्षाय।

अष्ट द्रव्य सब आदि से अर्चूं सुख को पाय ॥ 40 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे नाग देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् । इदं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्) ;

अर्घ्य के साथ शक्कर पड़ा हुआ दूध और पका भात चढ़ाएँ।

(41) मुख्य देव पूजा :

मुख्य देव की आज मैं पूजा करूँ हर्षाय।

रोग शोक सब ही टलें मन में शांति पाय॥ 41 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे मुख्य देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् । इदं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ श्री खंड चढ़ाएँ।

(42) भल्लाट देव पूजा :

भल्लाट देव की आज मैं पूजा करूँ हर्षाय।

रोग शोक सब ही टलें मन में शांति पाय॥ 42 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे भल्लाट देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् । इदं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ गुड़ और भात चढ़ाएँ।

(43) मृग देव पूजा :

मृग देव की आज मैं पूजा करूँ हर्षाय।

रोग शोक सब ही टलें मन में शांति पाय॥ 43 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे मृग देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् । इदं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ गुड़ के मालपूआ चढ़ाएँ।

(44) अदिति देव पूजा :

अदिति परिवार सहित, पूजूं मन हर्षाय।

रोग शोक सब ही टलें मन में शांति पाय॥ 44 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे अदिति देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् । इदं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ मोदक लड्डू चढ़ाएँ।

(45) उदिति देव पूजा :

उदिति परिवार सहित, पूजूं मन हर्षाय।

रोग शोक सब ही टलें, मन में शांति पाय॥ 45 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे उदिति देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् । इदं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ तिल-पापड़ी चढ़ाएँ।

(46) विचारी देव पूजा :

विचार्य परिवार सहित, पूजूं मन हर्षाय।

रोग शोक सब ही टलें, मन में शांति पाय॥ 46 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे विचार्य देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् । इदं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ नमक डला हुआ भात चढ़ाएँ।

(47) पूतना देव पूजा :

पूतना परिवार सहित, पूजूँ मन हर्षाय।
रोग शोक सब ही टलें, मन में शांति पाय॥ 47 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पूतना देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत् । इदं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ तिल और भात चढ़ाएँ।

(48) पाप राक्षसी देव पूजा :

पाप राक्षसी देव को, पूजूँ मन हर्षाय।
रोग शोक सब ही टलें, मन में शांति पाय॥ 48 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पाप राक्षसी देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत्। इदं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्) ।

अर्घ्य के साथ उबाले हुए मूँग चढ़ाएँ।

(49) चरकी देव पूजा :

चरकी परिवार सहित, पूजूँ मन हर्षाय।
रोग शोक सब ही टलें, मन में शांति पाय ॥ 49 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे चरकी देव अत्र आगच्छ-2, पुष्पांजलिं क्षिपेत्। इदं अर्घ्य पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं बलिं, फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्-2, इति स्वाहा।

(शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

अर्घ्य के साथ घी और गुड़ चढ़ाएँ।

(50) पूर्णार्घ्य :

सब ही वास्तु देव को, सब परिवार सहित।
अष्ट द्रव्य से पूजूहूँ, मैं परिवार सहित॥
सब प्रकार के भक्ष्य को, अर्पण करता आज।
शांति से तुम ग्रहण करो, मिटे सकल संतांप॥ 50 ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे वास्तु देवा सपरिवार सहितेभ्यो इदमर्घ्यं पाद्यं, जलं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यताम्, इति स्वाहा। (शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)।

इष्ट–प्रार्थना

इस वास्तु विधान में, जो जो आए देव।
वे सब मिलकर शांति करे, सकल उपद्रव शोक॥

यह श्लोक पढ़कर हाथ जोड़कर प्रार्थना करें, पुष्पांजलिं अर्पण करें।

घर अथवा मन्दिर में, अष्टकोण कलश स्थापना।
आठ दिशा में आठ कलश, जल से करे परिपूर्ण।
पूजा कर स्थापन करें, विघ्न होत सब दूर॥

ॐ समस्त नदी तीर्थ जलं भवतु, कुंभेषु हिरण्यं निक्षिपामि स्वाहा। नेत्राय संवौषट्, कलशार्चनम्।

वास्तु-विधान करके विधानाचार्य संक्षिप्त होम करें, फिर विसर्जन कर दें।

नोट :– इस वास्तु-विधान को ग्रह शांति के लिए, नवीन गृह प्रवेश के समय या जिन मन्दिर प्रतिष्ठा के समय पहले करके फिर गृह प्रवेश करें, फिर मन्दिर प्रतिष्ठा करें। गृह प्रवेश के पूर्व किसी भी शांति मंत्र का 12 हजार जाप अवश्य कर लें और दशांस आहुति करें। समस्त भूमिगत उपद्रव शांत हो जाएंगे, घर की शुद्धि और मन्दिर की शुद्धि हो जाएगी।

'इति वास्तु विधान समाप्त'

मंत्र

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत शांतिकराय मम सर्वपरिवारस्य गृहस्य सर्वोपद्रवशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

(प्रशस्ति)

दो हजार इक्यावन का, श्रावण शुक्ला पाँच।
पूर्ण विधान यह किया, मन वच तन हर्षाय॥
राजस्थान चित्तौड़ में, नगर प्रतापगढ़ जान।
नया मन्दिर में विराज रहे, आदिनाथ भगवान॥
सन्मुख उनके बैठकर, लिख दिया वास्तु विधान।
पार्श्व प्रभु भी पास थे, शासक पद्मा जान॥
बाल गणिनी आर्यिका, क्षेमा शिष्या जान।
आग्रह उसका देखकर, लिखा है वास्तु विधान॥
जिन मन्दिर गृह शुद्धि को, जानो यह विधान।
भविक जन यह विधि करो, होवे शांति महान॥
अल्पज्ञान मेरा प्रभु, भूल चूक सब माफ।
ज्ञानीजन क्षमा करो, अल्प ज्ञानी जान॥

(इति)

श्री लघु गणधर वलय विधान

रचनाकार

परम पूज्य आर्ष मार्ग संरक्षक, कवि हृदय,

प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

सम्पादन

गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी

श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर, प्रीत विहार दिल्ली में

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव

के

68 वें जन्मोत्सव के उपलक्ष में प्रकाशित

गणधर वलय माण्डला

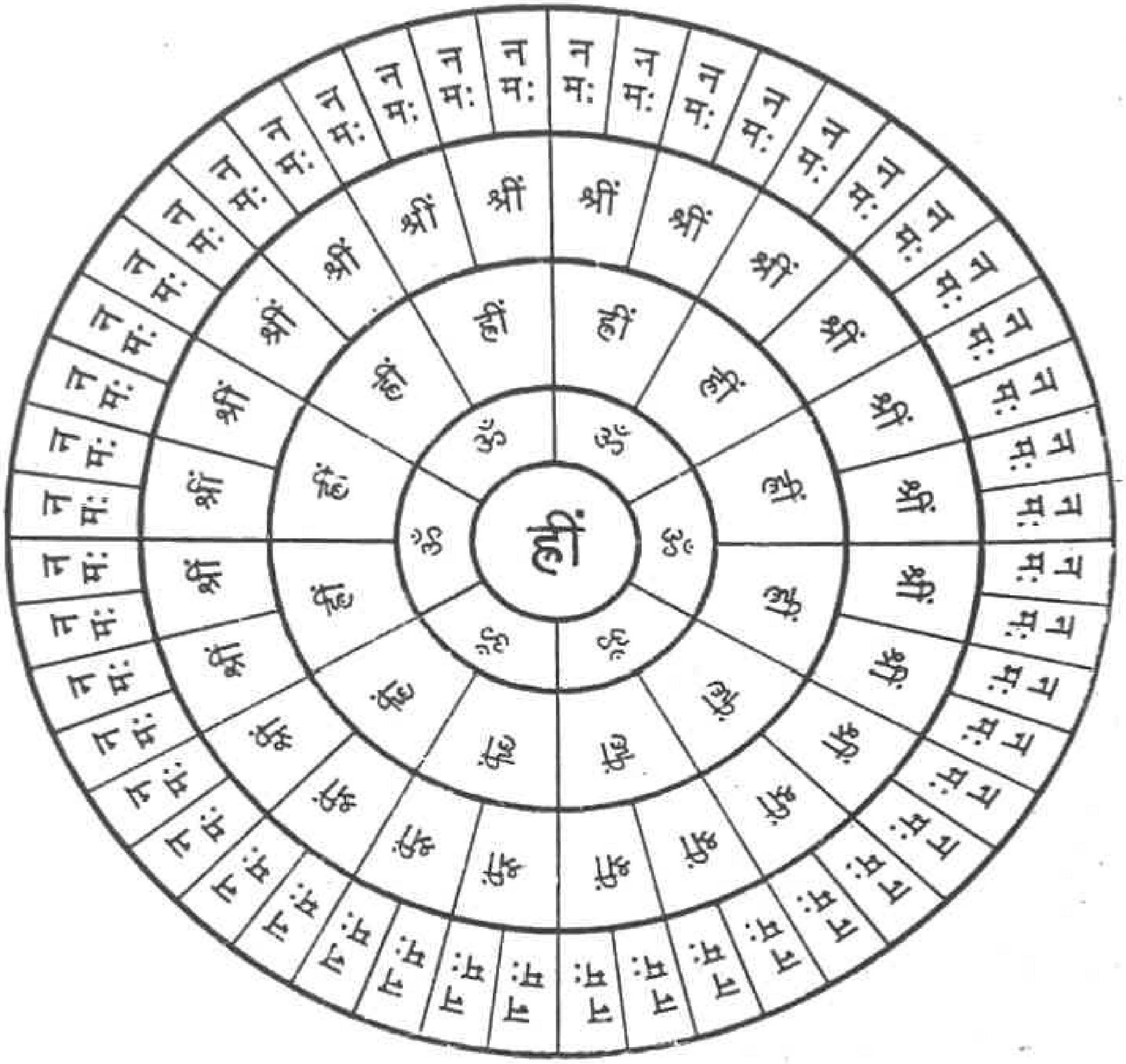

यह मण्डल 5 कोष्ठक का बनता है। प्रत्येक कोष्ठक में निम्नप्रकार अर्घ चढ़ाये जाते हैं :—

प्रथम कोष्ठक में **'ह्रीं'** बीजाक्षर। द्वितीय कोष्ठक में **'ॐ'** (6), तृतीय कोष्ठक में 'ह्रीं' (12), चतुर्थ कोष्ठक में 'श्रीं' (24) व पंचम कोष्ठक में 'नमः' (48) कुल योग= 90

कहाँ क्या है ?

श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा
गणधर वलय स्तोत्र व मंत्र
श्री गणाधिपति गणधर पूजा
चौंसठ ऋद्धि सम्पन्न श्री चौबीस तीर्थंकरों के गणधरों की पूजा
चौंसठ ऋद्धि सम्पन्न गणधरादि ऋषियों के अर्घ
चौबीस तीर्थंकरों के गणधरों के अर्घ
जयमाला
विधान की प्रशस्ति

प्रस्तावना

गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी द्वारा रचित **'श्री वृहद् गणधर वलय विधान'** के अतिशय ने आज जन मानस में अपार लोकप्रियता प्राप्त की है। बड़नगर, इन्दौर, औरंगाबाद, फलटन, सांगली, नागपुर, नासिक आदि के हजारों भक्तों ने इस विधान में भक्ति, अर्चना, जाप्यानुष्ठान आदि करके अपने जीवन के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, प्रशासकीय आदि अनेक क्षेत्रों में सफलता प्राप्त की है। उसके फलस्वरूप आज अनेक घरों और दुकानों में **'श्री गणधर वलय यंत्र'** की स्थापना देखने को मिलती है। उपरोक्त विधान में 8 से 10 दिनों में महाराधना सम्पन्न होती है। प्रत्येक दीक्षार्थी के लिए दीक्षा से पूर्व यह अनिवार्यतम् विधान है। अनेक बार समय की अल्पता से अनेक दीक्षार्थी छोटे रूप में अल्प समय में विधान करने की भावना रखते हैं। साथ ही कुछ भक्तगण एक दिन में ही पूरा विधान कर अपने पापों का भार हल्का करना चाहते हैं। उन सबकी मनोभावना, प्रार्थना को ध्यान में रखकर ही मात्र 91 अर्घों में **''श्री लघु गणधर वलय विधान''** आपके सम्मुख प्रस्तुत है। इसका सम्पादन गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी ने किया है; उन्हें शुभाशीर्वाद है। संघस्थ मुनि श्री सुयशगुप्तजी, मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी, गणिनी आर्यिका क्षमाश्री एवं आर्यिका आस्थाश्री ने इसके लेखन व प्रूफ संशोधन में सहयोग कर माँ सरस्वती की सेवा की है– उन सभी को यथायोग्य प्रति नमोऽस्तु व समाधिरस्तु सहित शुभाशीर्वाद है।

इसके तृतीय संस्करण के प्रकाशन में जिन दानी महानुभावों ने अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग किया है। उन सबको हमारा आशीर्वाद। मुद्रक श्री संदीप शाह, जयपुर को भी आशीर्वाद, अंत में इस विधान का उपयोग करने वाले दीक्षार्थी, इन्द्र परिवार आदि सभी भव्यात्माओं को अनेक शुभाशीर्वाद।

10 जून 2014

– आचार्य गुप्तिनंदी

श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा

(गीता छन्द)

वृषभादि से वीरान्त तक है सर्व जिन की अर्चना।
हरती हमारे पाप तम और क्लेश की सब वंचना।।
त्रय रत्न गुणधर तीर्थकर की पुष्प लेकर थापना।
प्रभु का परम सान्निध्य पा, हम दुःख मिटायें आपना।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अडिल्ल छन्द)

निर्मल जल हम कंचन झारी में भरें।
जिनवर के चरणों में त्रय धारा करें।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्दन सम शीतल चन्दन अर्पण करें।
जिनवर की अर्चा भव का वर्तन हरे।। जिन शासन...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता और अक्षत मुष्ठि में भर लिये।
अक्षय सुखदाता को अर्पण कर दिये।। जिन शासन...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अम्बुज भूमिज मनहर सुरभित सुमन से।
मदनजयी को पूजे निज मन्मथ नशे।। जिन शासन...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर प्रासुक व्यञ्जन से अर्चना।
परम कृपालु हरें क्षुधा की वंचना।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर दीपों से करते आरती।
जिनवर वाणी केवल दीप उजालती।। जिन शासन...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हितकर मनहर धूप चढ़ाये नाथ को।
कर्म विनाशन हेतु झुकाये माथ को।। जिन शासन...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर केला आदि फल ला रहे।
मुक्ति फल दाता के चरण चढ़ा रहे।। जिन शासन...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-फल आदि अर्घ बनायें भाव से।
अनर्घ पद हित भक्ति रचायें चाव से।। जिन शासन...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : चौबिस जिन के चरण में, मिलती शांति अपार।
शांतिधार देकर करें, पुष्पाञ्जलि सुखकार।।

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्....

जाप्य मन्त्र : ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : आदिनाथ से वीर तक चौबीसों भगवान।
उनकी जयमाला पढ़ें होवें सिद्ध समान।।

चौपाई

वृषभ धर्म वृषभेश बतायें, अजित कर्म अरि पर जय पायें।
संभव भव का भ्रमण छुड़ायें, अभिनंदन सुरवंद्य कहाये॥1॥
सुमति जिनेश सुमति के दाता, चित्त पद्म के पद्म विधाता।
श्री सुपार्श्व भव पाश हरेंगे, 'चन्द्र' चित्त में वास करेंगे॥2॥
पुष्पदंत को पुष्प चढ़ायें, शीतल अंतस्तल बस जायें।
श्री श्रेयांस श्रेय के दाता, वासुपूज्य वसु कर्म विघाता॥3॥
विमल कर्म मल दूर भगायें, जिन अनंत शक्ति प्रगटायें।
धर्मनाथ दशधर्म सिखायें, शांति जगत में शांती लायें॥4॥
कुंथु से कुंथ्वादिक रक्षा, अरहनाथ की श्रेष्ठ विवक्षा।
मल्लि कर्म मल्लों को जीते, मुनि सुव्रत व्रत अमृत पीते॥5॥
नमि को नमे सकल नर नारी, नेमि तजे राजुल सुकुमारी।
पारस के हम पार्श्व रहेंगे, वर्द्धमान को नमन करेंगे॥6॥
चौबीसों तीर्थेश हमारे, पंचकल्याणक जिनके न्यारे।
'गुप्तिनंदी' प्रभु के गुण गाये, तीन गुप्ति धर शिव सुख पाये॥7॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

जिनभक्त निर्मल भाव से, 'चौबीस जिन' पूजन करें।
त्रैलोक्य सुख पा जाये वो, सुर-नर उसे वन्दन करें॥
फिर धर क्षमादिक धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय 'गुप्ति' का व्रत पूर्ण कर, भवदुःख कभी ना पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

लघु गणधर वलय विधान

(गणधर वलय स्तोत्र)

जिनान् जितारातिि-गणान् गरिष्ठान्, देशावधीन् सर्व-परावधींश्च।
सत्-कोष्ठ-बीजादि-पदानुसारीन्, स्तुवे गणेशानपि तद्-गुणाप्त्यै॥1॥

संभिन्न-श्रोतान्वित-सन्-मुनीन्द्रान्, प्रत्येक-सम्बोधि-बुद्ध-धर्मान्।
स्वयं-प्रबुद्धांश्च विमुक्ति-मार्गान्, स्तुवे गणेशानपि तद्-गुणाप्त्यै॥2॥

द्विधा मनःपर्यय-चित्-प्रयुक्तान्, द्विपञ्च-सप्तद्वय-पूर्व-सक्तान्।
अष्टांग-नैमित्तिक शास्त्र-दक्षान्, स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्तये॥3॥

विकुर्वणाख्यर्द्धि-महा-प्रभावान्, विद्याधरांश्चारण-ऋद्धि-प्राप्तान्।
प्रज्ञाश्रितान्, नित्य-ख-गामिनश्च, स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्तयै॥4॥

आशीर्विषान् दृष्टि-विषान् मुनीन्द्रा,-नुग्राति-दीप्तोत्तम-तप्त तप्तान्।
महातिघोर-प्रतपःप्रसक्तान्, स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै॥5॥

वन्द्यान् सुरै-र्घोर-गुणांश्च लोके, पूज्यान् बुधै-र्घोर-पराक्रमांश्च।
घोरादि-ससंद्-गुण ब्रह्म युक्तान्, स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्तयै॥6॥

आमर्द्धि-खेलर्द्धि-प्रजल्ल-विडर्द्धि-सर्वर्द्धि-प्राप्तांश्च व्यथादि-हंतृन्।
मनो-वचः काय-बलोपयुक्तान्, स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै॥7॥

सत् क्षीर-सर्पि-र्मधुरामृतर्द्धीन्, यतीन् वराक्षीण महानसांश्च।
प्रवर्धमानांस्त्रिजगत्-प्रपूज्यान्, स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै॥8॥

सिद्धालयान् श्रीमहतोऽतिवीरान्, श्रीवर्धमानर्द्धि विबुद्धि-दक्षान्।
सर्वान् मुनीन् मुक्तिवरा-नृषीन्द्रान्, स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै॥9॥

नृ-सुर-खचर-सेव्या विश्व-श्रेष्ठर्द्धि-भूषा,
विविध-गुण-समुद्रा मार मातंग-सिंहाः।
भव-जल-निधि-पोता वन्दिता मे दिशन्तु,
मुनि-गण-सकलाः श्री-सिद्धिदाः सदृषीन्द्राः॥10॥

नित्यं यो गणभृन्मन्त्र, विशुद्धसन् जपत्यमुम्।
आस्रवस्तस्य पुण्यानां, निर्जरा पापकर्मणाम्॥
नश्यादुपद्रवकश्चिद्, व्याधिभूत विषादिभिः।
सदसत् वीक्षणे स्वप्ने, समाधिश्च भवेन्मृतो॥

●●●

गणधर वलय मंत्र

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं॥1॥

णमो जिणाणं[1], णमो ओहि-जिणाणं[2], णमो परमोहि-जिणाणं[3], णमो सव्वोहि-जिणाणं[4], णमो अणंतोहि-जिणाणं[5], णमो कोट्ठ-बुद्धीणं[6], णमो बीज-बुद्धीणं[7], णमो पादाणु-सारीणं[8], णमो संभिण्ण-सोदारणं[9], णमो सयं-बुद्धाणं[10], णमो पत्तेय-बुद्धाणं[11], णमो बोहिय-बुद्धाणं[12], णमो उजु-मदीणं[13], णमो विउल-मदीणं[14], णमो दस पुव्वीणं[15], णमो चउदस-पुव्वीणं[16], णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं[17], णमो विउव्वइड्ढि-पत्ताणं[18], णमो विज्जाहराणं[19], णमो चारणाणं[20], णमो पण्ण-समणाणं[21], णमो आगासगामीणं[22], णमो आसी-विसाणं[23], णमो दिट्ठिविसाणं[24], णमो उग्ग-तवाणं[25], णमो दित्त-तवाणं[26], णमो तत्त-तवाणं[27], णमो महा-तवाणं[28], णमो घोर-तवाणं[29], णमो घोर-गुणाणं[30], णमो घोर-परक्कमाणं[31], णमो घोर-गुण-बंभयारीणं[32], णमो आमोसहि-पत्ताणं[33], णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं[34], णमो जल्लोसहि-पत्ताणं[35], णमो विप्पोसहि-पत्ताणं[36], णमो सव्वोसहि-पत्ताणं[37], णमो मण-बलीणं[38], णमो वचि-बलीणं[39], णमो काय-बलीणं[40], णमो खीर-सवीणं[41], णमो सप्पि-सवीणं[42], णमो महुर सवीणं[43], णमो अमिय-सवीणं[44], णमो अक्खीण महाणसाणं[45], णमो वड्ढमाणाणं[46], णमो सिद्धायदणाणं[47], णमो भयवदो-महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो[48] चेदि।

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

श्री गणाधिपति गणधर पूजा

रचयित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

(नरेन्द्र छन्द)

सुर-नर-किन्नर से वन्दित हैं, गणधर प्रभु के चरण-कमल,
शरणागत की रक्षा करते, बनकर रक्षामंत्र धवल।
तीर्थंकर के प्रमुख शिष्य, गणधर का करता आह्वानन्,
सर्वकार्य की सिद्धि हेतु, करता गुणगण स्थापन।।

ॐ ह्रीं चतुषष्ठि ऋद्धिसंपन्न श्री गणधर महामुनीन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जग में जय-जयकार हो रही, जिनका गाते सब यशगान।
जग मंगल का बीजभूत है, सम्यग्दर्शन रत्न महान्।।
क्षीरोदधि का जल ले निर्मल, करता प्रभुवर का पूजन।
मुनिगण के स्वामी हैं गणधर, उनका मैं करता अर्चन।।

ॐ ह्रीं श्री गणधर महामुनीन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

परम ज्योति उद्योतित करते, मोहतिमिर हरने वाले।
विशद विनय से सहित शिष्य, गुण गाते प्रभु के मतवाले।।
मलयागिरि चंदन हम लाये, करते चरणों में लेपन। मुनिगण...।।

ॐ ह्रीं श्री गणधर महामुनीन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

सुर-नर-खेचर-इन्द्र सभी, सम्यक् आराधन करते हैं।
जिनवर के गुण पाने को वे, पाप विराधन करते हैं।।
ललित मनोहर अक्षत लाया, तीर्थंकर के लघुनंदन। मुनिगण...।।

ॐ ह्रीं श्री गणधर महामुनीन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

भवसागर से पार लगाकर, मोक्षमहल ले जाते हैं।
संत भी जिनकी सेवा करके, शिवसमृद्धि पाते हैं।
कमल वकुल कुन्दादि चढ़ाऊँ, भौरों का जिसमें गुंजन॥
मुनिगण के स्वामी हैं गणधर, उनका मैं करता अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री गणधर महामुनीन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

मोहपाश की अग्नि ने, भूमण्डल का है नाश किया।
किन्तु आपने इसको वशकर, मोहमल्ल का नाश किया॥
घेवर-बावर-फैनी आदि, नाना विधि के ले व्यंजन। मुनिगण...॥

ॐ ह्रीं श्री गणधर महामुनीन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

अखिलविश्व के सब ज्ञेयों को, भगवन् तुमने जान लिया।
दिव्य अतीन्द्रिय आत्मज्योति से, समतारस का पान किया॥
दीप थाल से करूँ आरती मोहतिमिर का हो भंजन। मुनिगण...॥

ॐ ह्रीं श्री गणधर महामुनीन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

जिनके ध्यान-मनन से मिटती, भव की सारी पीड़ायें।
भूत-प्रेत सब देव शांत हो, करते मनहर क्रीड़ायें॥
अगर-तगर की धूप चढ़ाऊँ, बनूँ प्रभु का लघुनंदन। मुनिगण...॥

ॐ ह्रीं श्री गणधर महामुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

गणधर की सेवा अर्चा से, विपुल सौख्य मिल जाता है।
गुण अनंत का स्वामी बनकर, महामोक्ष फल पाता है॥
केला, लौंग, बिजौरा, श्रीफल, करते सबका मनरंजन। मुनिगण...॥

ॐ ह्रीं श्री गणधर महामुनीन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

कर्म अष्ट से लड़ने हेतु, वेष दिगम्बर धार लिया।
क्षायिक पद की अभिलाषा से, कर्म अरि पर वार किया॥
जल-फल आदि आठ द्रव्य से, करता प्रभु का अभिनन्दन। मुनिगण...॥

ॐ ह्रीं श्री गणधर महामुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

समुच्चय अर्घ *(नरेन्द्र छंद)*

आदिनाथ से महावीर तक, तीर्थंकर सुखकारी।
उनके चौदह सौ बावन हैं, गणधर ज्ञान प्रचारी।।
वृषभसेन से इन्द्रभूति तक, सब गणधर को ध्यायें।
मनहर अर्घ चढ़ाकर हम सब, रत्नत्रय गुण पायें।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां श्री वृषभसेनादि एक सहस्र चतुर्शतक द्विपंचाशत गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : गणधर गुरु के पाद में, करूँ सुखद जलधार।
सुरभित सुमनों को चढ़ा, पाऊँ सौख्य अपार।।

शांतये शांतिधारा...दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं असि आ उ सा झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : गणधर गण के ईश को, नमन करे त्रय बार।
जयमाला इनकी पढ़े, होवे भवदधि पार।।

(शंभु छन्द)

जिनका यह निर्मल हृदय कमल, भासित गुण गण की मणियों से।
ऋद्धि धारी हैं पूर्ण विमल, वे गणधर जिन सर्वज्ञ बने।
जो देश परम सर्वावधि से भौतिक तत्वों को जान रहे।
इन परम तपस्वी ऋषिवर को हम सब मिल गणधर मान रहे।।1।।

श्रुत ज्ञान कोष्ठ ऋद्धी धर वा बहू बीज एक बुद्धी धारी।
संभिन्न श्रोतृ पादानुसारी आदि उत्तम ऋद्धिधारी।।
गुरु स्वयंबुद्ध प्रत्येकबुद्ध और बोधिबुद्ध ऋद्धिधारी।
वे ऋजू विपुलमति को धरते पूजन करते सब नर-नारी।।2।।

दस चौदह पूर्व ज्ञान ज्ञाता अष्टांग निमित्त के विख्याता।
स्वर व्यंजन स्वप्न शकुन ज्योतिष तिल भौम अंग आदिक ज्ञाता।।
अणिमा महिमा लघिमा गरिमा आदिक नाना ऋद्धि धारें।
गुरु प्रज्ञा श्रमण ऋषीवर जी परमौदारिक लब्धि धारें।।3।।

जल फूल बीज फल अग्नि धूम पृथ्वी जंतू तंतू आदी।
विज्जाहरणादिक ऋद्धि लहें गुरु आतम रस के आस्वादी।
जंघा पर दोनों हाथ रखें निर्बाध गगन में गमन करें।
नभगामी गणधर गुरुवर को त्रय बार विनय से नमन करें।।4।।

स्याद्वाद ज्ञान गंगा धारी परमत का खण्डन करते हैं।
विषमय भोजन को अमृतमय आशीविष से वे करते हैं।।
विषवाले प्राणी के विष को दृष्टिविष गुरुवर हरते हैं।
गुरु उग्र दीप्त तप महातपस्वी गुरु को वंदन करते हैं।।5।।

आतापन आदिक योग धरें गुरु घोर गुणी ऋद्धि धारी।
गुरु घोर पराक्रम के बल से बनते हैं घोर ब्रह्मचारी।।
गुरु का पावन संस्पर्श मिला तत्क्षण सब रोग विलीन हुये।
क्ष्वेलौषधि जल्लौषधि ऋद्धि पाकर गुरु आतम लीन हुए।।6।।

मल मूत्र स्वेद गुरु के तन का सुखकर सब रोग भगाता है।
सर्वांग गुरुवर का औषध दु:खियों के रोग मिटाता है।।
अन्तर्मुहूर्त में सब श्रुत का चिन्तन वाचन जो करते हैं।
उन मन वच काय बली गुरु का भावों से कीर्त्तन करते हैं।।7।।

सम्पूर्ण लोक को उँगली से परिवर्तन करने की क्षमता।
षट् मास वर्ष के तप में भी जिनकी रहती अविचल क्षमता।।
नीरस भोजन को दुग्ध मधुर घृत अमृत सम कर देते हैं।
गो क्षीर मधुर सर्पिष स्रावी अमृत सुख का वर देते हैं।।8।।

जिस पात्र निलय आहार करें उसका अक्षय भंडार भरें।
अक्षीण महानस ऋद्धि धर दानी जन का उद्धार करें ॥
श्री वर्धमान ऋद्धिधारी गुरुवर के चरण जहाँ पड़ते।
सौभाग्य पुण्य ज्ञानादि सभी निश्चय से भव्यों के बढ़ते ॥9॥

गुरु नाम सदा सुखदायी है उनके बिन शरण नहीं दूजा।
अतएव गुरु गुण पाने को करते हम गुरु गुण की पूजा ॥
दीक्षा लेकर हम भी गुरुवर तुम सम चर्या को पालेंगे।
त्रय गुप्ति का पालन करके हम 'राज' मुक्ति का पायेंगे ॥10॥

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री गणधरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा— क्षमा करो गुरुदेवजी, कर न सकूँ गुणगान।
'राजश्री' गुरु पाद में, पूर्ण करे अभियान ॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चौंसठ ऋद्धि सम्पन्न श्री चौबीस तीर्थंकरों के गणधरों की पूजा

(गीता छन्द)

चौबीस जिन के गणधरों की, आज हम अर्चा करें।
सुरभित सुमन ले साथ में, उनकी परम अर्चा करें॥
गणधर गुरु सब आईए, हममें भरें तप ज्योत्सना।
उन सम विरागी हम बने, इस हेतु यह आराधना॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

नीर भरे घट से करें, गणधर पद प्रक्षाल।
जन्मादिक त्रय रोग हर, पायें सुख त्रय काल॥
चौबीसों जिनराज के, गणधर का गुणगान।
सर्व रोग संकट हरे, करे अखिल उत्थान॥1॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल सुरभित गंध से, अर्चें श्री गुरु पाद।
नशें सकल संताप वा, राग-द्वेष अवसाद॥ चौबीसों...॥2॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः गंधं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत उज्ज्वल धवल ले, उत्तम पुँज चढ़ाय।
गणधर कृपा रहे जहाँ, अक्षय सुख मिल जाय॥ चौबीसों...॥3॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमलादिक बहु सुमन लें, जपें गुरु का नाम।
आत्म ब्रह्म में लीन हो, नशें अधम खल काम॥
चौबीसों जिनराज के, गणधर का गुणगान।
सर्व रोग संकट हरे, करे अखिल उत्थान॥4॥

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुड़ी इमरती आदि ले, पूजें गण अधिनाथ।
क्षुधा विजय क्षण में करें, बन जायें जगनाथ॥ चौबीसों... ॥5॥

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप आरती से करें, गणनायक गुणगान।
मोह तिमिर अज्ञान हर, पायें केवलज्ञान॥ चौबीसों... ॥6॥

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अनल में खेयकर, पूजें गुरु पद पद्म।
आठों कर्म विनाश कर, वरें सुखद शिव सद्म॥ चौबीसों... ॥7॥

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केलादिक बहु फल लिए, आये गणधर द्वार।
उनका शुभ आशीष ही, नाशे कर्म विकार॥ चौबीसों... ॥8॥

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल से फल तक द्रव्य ले, मनहर अर्घ सजाय।
विघ्न विनायक को भजें, पद अनर्घ मिल जाय॥ चौबीसों... ॥9॥

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदक ले कलश में, नित त्रय धारा देय।
पुष्पांजलि अर्पित करें, रत्नत्रय गुण लेय।।

शांतये शांतिधारा।। दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

चौंसठ ऋद्धि सम्पन्न गणधरादि ऋषियों के अर्घ

(चौपाई आँचली बद्ध)

बुद्धि ऋद्धि के अठदस भेद, अवधिज्ञान है पहला भेद।
वरें मुनिराय, मन हर्षे ऋषि के गुण गाय।।
चौंसठ ऋद्धि धरें मुनिराज, उनको पूजें भव्य समाज।
भजो मुनिराय, मन हर्षे ऋषि के गुण गाय।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अवधिज्ञान बुद्धि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनःपर्यय अति सूक्षमज्ञेय, इसके मूर्तिक द्रव्य प्रमेय।
वरें मुनिराय, मन हर्षे ऋषि के गुण गाय।। चौंसठ...।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मनःपर्ययज्ञान बुद्धि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब ज्ञेयों का युगपत् ज्ञान, करें मात्र इक केवलज्ञान।
वरें मुनिराय, मन हर्षे ऋषि के गुण गाय।। चौंसठ...।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री केवलज्ञान बुद्धि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संख्य शब्द के अर्थ अनंत, बीज पदों सह लिंग अनंत।
वरें मुनिराय, मन हर्षे ऋषि के गुण गाय।। चौंसठ...।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बीज बुद्धि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोष्ठ बुद्धि की महिमा भिन्न, मिश्रण बिन जाने गत खिन्न।
वरें मुनिराय, मन हर्षे ऋषि के गुण गाय।। चौंसठ...।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कोष्ठ बुद्धि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक पद सुन पावें सब ज्ञान, पदानुसारिणि बुद्धि महान।
वरें मुनिराय, मन हर्षे ऋषि के गुण गाय।। चौंसठ...।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पदानुसारिणी बुद्धि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभिन्न श्रोतृत्व बुद्धि महान, योगी जन का यह वरदान।
वरें मुनिराय, मन हर्षे ऋषि के गुण गाय।। चौंसठ...।।7।।

ॐ.ह्रीं अर्हं श्री संभिन्न श्रोतृत्व बुद्धि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

कायेन्द्रिय की सीमा आगे, दूरस्पर्श ऋद्धिधर लांघें।
उन मुनियों को अर्घ चढ़ायें, ऋषि पूजाकर ऋषिगुण पायें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दूरस्पर्शित्व ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसनेन्द्रिय का क्षेत्र अपारा, दूरास्वादी उसके पारा।
नाना रस स्वादों को जाने, ऐसे गुरु को हम श्रद्धानें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दूरास्वादित्व ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घ्राणेन्द्रिय का विषय विशाला, दूर घ्राण ने उसे संभाला।
दूरघ्राण ऋद्धिधर पूजें, भव-भव के अघ से हम छूटें।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दूरघ्राणत्व ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज दर्शन से कर्म नशाया, दूरदर्शी ऋद्धि को पाया।
ऐसे गुरु को अर्घ चढ़ायें, उन सम रत्नत्रय गुण पायें।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दूरदर्शित्व ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दूर श्रवण ऋद्धि जब आये, असंख्य योजन पार सुनाये।
नर पशु खग[1] आदिक की वाणी, जाने ऋषिवर आतम ध्यानी॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दूरश्रवणत्व ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश पूर्वित्व ऋद्धि जब आये, सब विद्यायें आ ललचायें।
पर जिन गुरु को लोभ न आवे, उनको हम सब अर्घ चढ़ावें॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दश पूर्वित्व ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानी गुरु की सेवा पायी, चौदह पूर्व ऋद्धि विकसायी।
द्वादशांग सर्वागम जाना, उन ऋषिवर को अर्घ चढ़ाना॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्दश पूर्वित्व ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योतिष सामुद्रिक शकुनादी, जानें ऋषि जिन आगमवादी।
महा अष्टांग निमित्त के ज्ञाता, हरें भक्त की सर्व असाता॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अष्टांग महानिमित्त ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(काव्य छंद)

बिन आगम अभ्यास, द्वादशांग गुरु जाने।
कर निज कर्म विनाश, चौदह पूर्व बखाने॥
प्रज्ञाश्रमण सुऋद्धि, ऐसे ऋषिवर पावें।
उनका चिन्तन मात्र, ज्ञानावरण नशावें॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रज्ञाश्रमण ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिन गुरु के उपदेश, क्षयोपशम तप बल से।
ऋद्धि बुद्धि प्रत्येक, परम श्रमण के विकसे॥

1. पक्षी।

ऋषि इसका उपयोग, आत्मध्यान में करते।
हम इनके पद पूज, निज भव वर्तन हरते॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रत्येक बुद्धि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय शत त्रैसठ पंथ, आदि अनेक प्रवादी।
वाद कुशल मुनिराज, हरते इनकी व्याधी॥
पर मत के गुण दोष, आप निमिष में जाने।
हम इनके पद पूज, तत्त्व कुतत्त्व पिछाने॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वादित्व ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सूक्ष्म अणु छिद्र, उसमें श्रमण प्रविष्टे।
करें विक्रिया आप, सब भवि के मन तिष्ठे॥
अणिमा ऋद्धि महान, तप बल से ऋषि धारें।
उनको पूजें भव्य, निज भव भ्रमण निवारें॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अणिमा विक्रिया ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू तुल्य ऋषिकाय, महिमा ऋद्धि करावें।
विष्णु मुनीश समान, धर्म प्रभाव बढ़ावे॥
महिमा ऋद्धि महान्, तप बल से ऋषि धारें।
उनको पूजें भव्य, निज भव भ्रमण निवारें॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महिमा विक्रिया ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायु से लघु देह, लघिमा धर कर लेते।
करके सद्उपयोग, कर्म भार हर लेते॥
लघिमा ऋद्धि महान्, तब बल से ऋषि धारें।
उनको पूजें भव्य, निज भव भ्रमण निवारें॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री लघिमा विक्रिया ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू तुल्य बहु भार, श्रमण करें निज तन का।
कर्म शैल[1] को चूर, रूप बढ़े आतम का।।
गरिमा ऋद्धि महान्, तप बल से ऋषि धारें।
उनको पूजें भव्य, निज भव भ्रमण निवारें।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गरिमा विक्रिया ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूमिस्थित ऋषिराज, शशि[2] दिनकर[3] को पावें।
कर अंगुलि विस्तार, मेरु चूल[4] पर जावें।।
प्राप्ति विक्रिया ऋद्धि, तप बल से ऋषि धारें।
उनको पूजें भव्य, निज भव भ्रमण निवारें।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्राप्तिविक्रिया ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल सम पृथ्वी बीच, डुबकी श्रमण लगावें।
भू सम जल के बीच, सहज गमन कर जावें।।
यह ऋद्धि प्राकाम्य, तप बल से ऋषि धारें।
उनको पूजें भव्य, निज भव भ्रमण निवारें।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्राकाम्य विक्रिया ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग पर अमिट प्रभुत्व, गुण ईशत्व कराता।
श्रेष्ठ ऋद्धि ईशत्व, वरें श्रमण सुख दाता।।
महा ऋद्धि ईशत्व, तप बल से ऋषि धारें।
पूजा करते भव्य, निज भव भ्रमण निवारें।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ईशत्व विक्रिया ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. पहाड़, 2. चन्द्रमा, 3. सूर्य, 4. पहाड़ की चोटी।

वश में हो त्रयलोक, गुरु के तप गुण गावे।
कर गुरु का जयघोष, परम पुण्य उपजावे।।
ऋद्धि वशित्व महान, तप बल से ऋषि धारें।
पूजा करते भव्य, निज भव भ्रमण निवारें।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वशित्व विक्रिया ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्र-पटल-शिल[1]-शैल, वृक्षादिक पर चलते।
छेदन प्राणविघात, किये बिना अघ टलते।।
ऋद्धि अप्रतिघात, तप बल से ऋषि धारें।
पूजा करते भव्य, निज भव भ्रमण निवारें।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अप्रतिघात विक्रिया ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो ऋषि अंतर्धान, धर्म प्रभाव बढ़ावें।
रह सब जग के बीच, सबको ना दिख पावें।।
ऋद्धि अंतर्धान, तप बल से ऋषि धारें।
पूजा करते भव्य, निज भव भ्रमण निवारें।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अंतर्धान विक्रिया ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक क्षण में बहु रूप, प्रकट करे अभिरामा[2]।
अनुपम रूप निहार[3], हारे मन्मथ[4] रामा[5]।।
काम रूप शुचि ऋद्धि, तप बल से ऋषि धारें।
पूजा करते भव्य, निज भव भ्रमण निवारें।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कामरूप विक्रिया ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. चट्टान, 2. सुन्दर, 3. देखकर, 4. कामदेव, 5. स्त्री।

(नरेन्द्र छंद)

नभ तल गामी चारण ऋद्धी, तप बल से ऋषिवर धारें।
बैठे या खड्गासन विचरें, रागद्वेष दुःख परिहारें।।
परम शुद्ध निर्ग्रन्थ श्रमण को, नभ चारण ऋद्धी होवे।
उन ऋषियों को अर्घ चढ़ा हम, सर्व कर्म बंधन खोवें।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नभस्तल गामित्व चारण ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल में चले धरावत मुनिवर, जल जीवों का घात न हो।
जल जीवों से ऋषिवर का भी, किंचित् प्रत्याघात न हो।।
परम शुद्ध निर्ग्रन्थ श्रमण को, जल चारण ऋद्धी होवे।
उन ऋषियों को अर्घ चढ़ा हम, सर्व कर्म बंधन खोवें।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जलचारण ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पृथ्वी से चतुरंगुल ऊपर, नभ तल में गुरु अधर चले।
जंघा पर द्वय हाथ रखे वे, निराघात निर्बाध चले।।
परम शुद्ध निर्ग्रन्थ श्रमण को, ऋद्धि जानु चारण होवे।
उन ऋषियों को अर्घ चढ़ा हम, सर्व कर्म बंधन खोवें।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जंघाचारण ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपानीति स्वाहा।

वनस्पति फल फूल पत्र पे, पदयुग धर गुरुदेव चलें।
जीव घात पर रंच न होवे, दयामूर्ति निजकर्म दलें।।
पत्र-पुष्प-फल-चारण ऋद्धि, महाश्रमण को ही होवे।
उन ऋषियों को अर्घ चढ़ा हम, सर्व कर्म बंधन खोवें।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री फल-पुष्प-पत्र चारण ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्निशिखा पर चले श्रमण जब, रंच जीव बाधा ना हो।
धूम[1]श्रेणी पर श्रमण गमन लख, जग जीवों को अचरज हो॥
अग्नि–धूम चारण यह ऋद्धि, श्रमण मात्र को ही होवे।
उन ऋषियों को अर्घ चढ़ा हम, सर्व कर्म बंधन खोवें॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अग्निधूम चारण ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेघ[2]पटल पर चले श्रमण वर, जल कायिक हिंसा ना हो।
कोई नीर[3] धार पे चलते, फिर भी पूर्ण अहिंसा हो॥
मेघचरण–धारा–चारण यह, ऋद्धि श्रमण को ही होवे।
उन ऋषियों को अर्घ चढ़ा हम, सर्व कर्म बंधन खोवें॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मेघचारण ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मकड़जाल हल्के तंतु पर, सरल सहज गुरु गमन करें।
जिनकी निर्मल चर्या लखकर, जीव मोह का वमन करें॥
शुद्ध पुण्य निर्ग्रन्थ श्रमण को, ऋद्धि तंतु चारण होवे।
उन ऋषियों को अर्घ चढ़ा हम, सर्व कर्म बंधन खोवें॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तंतुचारण ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रवि–शशि आदिक की किरणों के, आश्रय श्री मुनिराज चलें।
उसमें रंच न जीव घात हो, जिससे वे निज कर्म दलें।
ज्योतिश्चारण ऋद्धि पुण्य से, तपनिधि श्रमणों को होवे।
उन ऋषियों को अर्घ चढ़ा हम, सर्व कर्म बंधन खोवें॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्योतिश्चारण ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मारुत्चारण वायुश्रेणि पर, सुन्दर रीत विहार करें।
रंच न वायुकायिक घाते, सर्व पाप परिहार करें॥

1. धुआँ, 2. बादल, 3. बारिस की धार।

मारुत चारण पूत[1] ऋद्धि भी, तप निधि श्रमणों को होवे।
उन ऋषियों को अर्घ चढ़ा हम, सर्व कर्म बंधन खोवें॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मरूच्चारण ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(कुसुमलता छन्द)

सप्त भेदयुत तपऋद्धि में, पहला उग्र तपस्या जान।
व्रत उपवास आदि से भूषित, करें सर्व पापों की हान॥
ऋद्धि उग्र तपधर हम पूजें, विनशे कर्मज सर्व विकार।
सर्वश्रमण का आराधन कर, पायें रत्नत्रय संस्कार॥39॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उग्रतप ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु विध उपवासों के बल से, ऋद्धि दीप्त तप का हो लाभ।
निराहार बल तेज वृद्धि नित, क्षुत तृष्णा कृत नहिं संताप॥
ऋद्धि दीप्त तपधर हम पूजें, विनशे कर्मज सर्व विकार।
सर्वश्रमण का आराधन कर, पायें रत्नत्रय संस्कार॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दीप्ततप ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप्त लोह पर नीर विलय सम, हो अहार पर नहीं निहार।
सप्त धातु भी बढ़े न जिससे, विकसे तप बल वीर्य अपार॥
ऋद्धि तप्त तपधर हम पूजें, विनशे कर्मज सर्व विकार।
सर्वश्रमण का आराधन कर, पायें रत्नत्रय संस्कार॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तप्ततप ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अणिमादिक चारण ऋद्धी युत, करते नानाविध उपवास।
चार ज्ञान के धारी होंवे, करें निरन्तर आत्म प्रवास॥
ऋद्धि महा तपधर हम पूजें, विनशे कर्मज सर्व विकार।
सर्वश्रमण का आराधन कर, पायें रत्नत्रय संस्कार॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महातप ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. पवित्र।

उग्र-उग्र तप में तत्पर हो, धरें भयानक वन में योग।
व्याधि ग्रस्त तन से निर्मोही, करें वृक्षमूलादिक योग।।
ऋद्धि घोर तपधर हम पूजें, विनशे कर्मज सर्व विकार।
सर्वश्रमण का आराधन कर, पायें रत्नत्रय संस्कार।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री घोरतप ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ऋद्धि से लोक दहन, सागर शोषण में पूर्ण समर्थ।
परम दया धर निर्मल साधक, किन्तु न करते यह दुष्कृत्य।।
घोर पराक्रम तपधर पूजें, विनशे कर्मज सर्व विकार।
सर्वश्रमण का आराधन कर, पायें रत्नत्रय संस्कार।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री घोर पराक्रम तप ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांत श्रमण जो समिति गुप्तिधर, पंच व्रतों का कर प्रतिपाल।
कलह रोग दुर्भिक्ष नशायें, आत्म ब्रह्म में करें विहार।।
ऋद्धि अघोर ब्रह्मचारी को, पूजें विनशे कर्म विकार।
सर्वश्रमण का आराधन कर, पायें रत्नत्रय संस्कार।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अघोर ब्रह्मचारित्व तप ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

बल ऋद्धि के त्रय भेद हैं, उसमें प्रथम मनबल बना।
अन्तर्मुहूरत में करें सम्पूर्ण श्रुत की वाचना।।
बलऋद्धि धर ऋषिराज को पूजें यहाँ हम भाव से।
त्रय रत्न के शुभ लाभ हित हम भक्ति करते चाव से।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मनोबल ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घटिका युगल में जो श्रमण सम्पूर्ण श्रुत उच्चारते।
द्वादश जिनागम ज्ञान को निर्दोष वे आचारते।।

वचऋद्धि धर ऋषिराज को पूजें यहाँ हम भाव से।
त्रय रत्न के शुभ लाभ हित हम भक्ति करते चाव से ॥47॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वचनबल ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋतु मास वा इक वर्ष तक दुर्धर विषम आसन धरें।
तन से जगत कम्पा सके किन्तु परम करुणा धरें॥
तनऋद्धि बल निर्मद वरें ऋषिवर निराकुल भाव से।
त्रय रत्न के शुभ लाभ हित हम भक्ति करते चाव से ॥48॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कायबल ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अठ भेद औषधि ऋद्धि के आमर्श औषधि आदि हैं।
मुनि तन विसर्जित आम भी हरती जगत की व्याधि है॥
आमर्श औषधि ऋद्धिधर को अर्चते अघ शांत हो।
सब व्याधियाँ क्षण में नशें मम वास फिर लोकांत हो ॥49॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आमर्शौषधि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिराज के तप तेज से कफ क्ष्वेल औषधि बन गये।
सर्वांग के दुःखद भयानक रोग संकट हन गये॥
श्री क्ष्वेलऔषधि ऋद्धिधर को अर्चते अघ शांत हो।
सब व्याधियाँ क्षण में नशें मम वास फिर लोकांत हो ॥50॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्ष्वेलौषधि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन स्वेद जल्लौषध बने ऋषि की तपस्या त्याग से।
सब व्याधि दारुण नाश हो ऋषि के चरण अनुराग से॥
ऋद्धीश श्री जल्लौषधि को अर्चते अघ शांत हो।
सब व्याधियाँ क्षण में नशें मम वास फिर लोकांत हो ॥51॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जल्लौषधि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन साधु के कर्णादि के मल औषधि बन शोभते।
आरोग्य या रोगार्त जन द्वय विध जगत को लोभते॥

मलौषधि ऋद्धीश ऋषि को अर्चते अघ शांत हो।
सब व्याधियाँ क्षण में नशें मम वास फिर लोकांत हो।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मलौषधि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ऋद्धिबल से श्रमण के मलमूत्र औषध हो गये।
जिसको लगे शुचि वायु कण भी रोग संकट नश गये।।
विड् औषधि ऋद्धीश ऋषि को अर्चते अघ शांत हो।
सब व्याधियाँ क्षण में नशें मम वास फिर लोकांत हो।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विडौषधि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन साधु को छूकर चली वह वायु औषधि रूप हो।
ऐसे श्रमण को पूजकर भवि कामदेव स्वरूप हो।।
सर्वौषधि ऋद्धीश ऋषि को अर्चते अघ शांत हो।
सब व्याधियाँ क्षण में नशें मम वास फिर लोकांत हो।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वौषधि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके वचन आशीष से सब द्रव्य निर्विषता धरें।
सब रोग पीड़ित जीव को वे पूर्णतम निर्विष करें।।
आशीषनिर्विष ऋद्धिधर को पूजते अघ शांत हो।
सब व्याधियाँ क्षण में नशें मम वास फिर लोकांत हो।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुख निर्विष ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि के नयनगोचर हुए सब जीव निर्विष स्वस्थ हो।
विष युक्त मारी भी नशे सब व्याधि संकट अस्त हो।।
श्री दृष्टिनिर्विष ऋद्धिधर को पूजते अघ शांत हो।
सब व्याधियाँ क्षण में नशें मम वास फिर लोकांत हो।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दृष्टिनिर्विष ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपानीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

आशीर्विष ऋद्धीश मरो यदि वच कहें।
साधु वचन से जीवों की आयु दहे।।
किन्तु कभी ना ऋषि मारक वच बोलते।
उनको पूजत हम भी शिवपट खोलते।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आशीर्विष ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टिविष ऋद्धीश कुपित हो देख लें।
सर्व जीव आयु तज पर भव को चलें।।
किन्तु श्रमण ना ऐसी दुर्जनता करें।
उनको पूजें हम निज आतम सुख वरें।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दृष्टिविष ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रमण हस्तगत रुक्ष[1] विरस आहार हो।
ऋद्धि पुण्य से शीघ्र क्षीर[2]रस युक्त हो।।
इस विध क्षीरस्रावी मुनि जगख्यात हो।
हम भी उनको पूजें तप निष्णात हों।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्षीरस्रावी ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि की अंजलिपुट में रूखा भोज्य हो।
ऋद्धि तेज से मिष्ट मधुरतम योग्य हो।।
मधुस्रावी धर मुनि के वचन सुहावने।
उनको पूजत यह जीवन उन सम बने।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मधुस्रावी ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. रूखा, 2. दूध।

ऋषि के करपुट में विष मिश्रित अन्न हो।
ऋद्धि तेज से वह अमृत बन धन्य हो।।
अमृतस्रावी ऋषिवच अमृत रूप हो।
उनको पूजें पायें आत्म स्वरूप को।।61।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमृतस्रावी ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरस भोजन यति के कर पुट में रखा!
सर्पिषस्रावी ने उसको घृत[1]मय भखा[2]।।
सर्पिष[3]मय श्रुतसार युक्त उनके वचन।
उनको पूजें पायें उन सम आचरण।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्पिषस्रावी ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि अक्षीण महानस[4] जहाँ आहार लें।
चक्रि सैन्य व अन्य मनुज तहँ जीमलें।।
संध्या पूर्व वहाँ ना अन्नाभाव हो।
उनको पूजत नहि दुष्काल प्रभाव हो।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अक्षीण महानस ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षीणालय ऋषि के पड़ें जहाँ चरण।
तहँ निर्बाध रहें सुर चक्रि सैन्य नर।।
अल्प क्षेत्र में जीव असंख्यों तिष्ठते।
उनको पूजत हम भी शिवपुर तिष्ठते।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अक्षीण आलय ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. घी सहित, 2. खाया, 3. घी सहित, 4. अक्षय रसोई।

पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)

बुध्यादिक् चौंसठ ऋद्धीधर, मुनि तीर्थद गणधर होते हैं।
कुछ और श्रमण सब ऋद्धी में, कुछ-कुछ ऋद्धीधर होते हैं।।
हम उनके तप गुण मन में रख, पूर्णार्घ पवित्र चढ़ाते हैं।
त्रय रत्न श्रमण सम धारण कर, शि पथ पर कदम बढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुःषष्टि ऋद्धिधारक परम ऋषिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा।। दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चौबीस तीर्थंकरों के गणधरों के अर्घ

(नरेन्द्र छंद)

आदिनाथ के धर्म सूत्र को, जिनने उर में धारा।
'वृषभसेन' आदिक चौरासि, गणि को नमन हमारा।।
चौदह सौ बावन गणधर की, भक्ति आपदा नाशे।
ऋद्धि-सिद्धि वा सौख्य दिलाये, केवलज्ञान विकासे।।1।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री वृषभनाथस्य 'वृषभसेनादि' चतुरशीति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ के अजित त्याग को, 'सिंहसेन' गणि धारें।
उन युत नब्बे गणधर मुनिवर, क्रम से मोक्ष सिधारें।। चौदह..।।2।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री अजितनाथस्य 'सिंहसेनादि' नवति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभव जिन के सह भव नाशे, 'चारुदत्त' गण स्वामी।
इक सौ पाँच गणेश्वर जिनवर, बने परम शिवगामी।। चौदह..।।3।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री संभवनाथस्य 'चारुदत्तादि' पंचोत्तरशतम् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदन का वंदन करते, इक सौ तीन गणेशा।
गुरु 'व्रजादि' गणधर जिन को, नमते सर्व सुरेशा।।
चौदह सौ बावन गणधर की, भक्ति आपदा नाशे।
ऋद्धि-सिद्धि वा सौख्य दिलाये, केवलज्ञान विकासे।।4।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री अभिनंदननाथस्य 'व्रजादि' त्रयाधिक शतं गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिनाथ ने इक सौ सोलह, गणधर रत्न बनाये।
'तौतक' आदिक गण के नायक, तीर्थंकर गुण गायें।। चौदह..।।5।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री सुमतिनाथस्य 'चमरादि' षोडशाधिक शतं गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वज्रचमर' आदिक इक सौ दस, पद्मप्रभु के चेले।
उनके गणधर बनकर वे सब, शिवरमणी संग खेलें।। चौदह..।।6।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री पद्मनाथस्य 'वज्रचमरादि' दशाधिक शतं गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्व के समवशरण में, 'बलदत्तादि' गणेशा।
एक शतक कम पाँच कहाये, श्रमण संघ के ईशा।। चौदह..।।7।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री सुपार्श्वनाथस्य 'बलदत्तादि' पंचनवति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रनाथ हैं पूर्ण चंद्र सम, गणधर बने सितारे।
'दंतादि' त्रय नब्बे गणधर, उनके चरण पखारें।। चौदह..।।8।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री चंद्रप्रभस्य 'दंतादि' त्रिनवति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत की वाणी झेलें, अट्ठयासी गुरु न्यारे।
'संघातिक' गण के अधिनायक, अपना संघ सम्हारें।। चौदह..।।9।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री पुष्पदंतस्य 'संघातिकादि' अष्टाशीतिः गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल जिन के 'अनगारादिक', इक्यासी गण इन्द्रा।
जिनके चरण कमल को पूजें, नर सुर इन्द्र मुनीन्द्रा॥
चौदह सौ बावन गणधर की, भक्ति आपदा नाशे।
ऋद्धि-सिद्धि वा सौख्य दिलाये, केवलज्ञान विकासे॥10॥

ॐ ह्रीं ह्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री शीतलनाथस्य 'अनगारादि' एकाशीतिः गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सौधर्मादि' सतत्तर गणधर, श्री श्रेयांस जिनवर के।
चरम शरीरी गुरु मुद्रा को, भव्य जीव अवलोके॥ चौदह..॥11॥

ॐ ह्रीं ह्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री श्रेयांसनाथस्य 'सुधर्मादि' सप्तसप्तति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु 'वरांश' ने वासुपूज्य से, रत्नत्रय ०२ पाया।
उन संग छ्यासठ गणधारी ने, जीवन अमर बनाया॥ चौदह..॥12॥

ॐ ह्रीं ह्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री वासुपूज्यस्य 'वरांशादि' षट्षष्टिः गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलनाथ की जय-जय बोलें, श्री 'जय' गणधर स्वामी।
पचपन गुरु भी प्रभु को ध्याकर, बने सुखद शिवगामी॥ चौदह..॥13॥

ॐ ह्रीं ह्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री विमलनाथस्य 'जयादि' पंचपंचाशत गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत जिन ने भव अनंत की, अन्त्य विधि सिखलाई।
गुरु 'अरिष्टादिक' पचास ने, वही विधी अपनाई॥ चौदह..॥15॥

ॐ ह्रीं ह्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री अनन्तनाथस्य 'अरिष्टादि' पंचाशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ की धर्म ध्वजा को, धर 'अरिष्टसेनादि'।
तैंतालिस गणनायक सम्मुख, हारे परमत वादी॥ चौदह..॥15॥

ॐ ह्रीं ह्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री धर्मनाथस्य 'अरिष्टसेनादि' त्रिचत्वारिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ के धर्मचक्र को, 'चक्रायुध' गुरु धारें।
छत्तिस गणपतियों ने अपने, कर्म चक्र परिहारे।।
चौदह सौ बावन गणधर की, भक्ति आपदा नाशे।
ऋद्धि-सिद्धि वा सौख्य दिलाये, केवलज्ञान विकासे।।16।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री शांतिनाथस्य 'चक्रायुधादि' षट्त्रिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंथुनाथ की अमृतवाणी, 'अमृतसेन' धरे हैं।
उन युत पैंतिस गणधर स्वामी, अमृत पान करें हैं।। चौदह..।।17।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री कुंथुनाथस्य 'अमृतसेनादि' पंचत्रिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहनाथ की वृष श्रेणी पर, 'श्री सुषेण' ले जायें।
तीस गणीन्द्रों को नित ध्याकर, हम भी वह सुख पायें।। चौदह..।।18।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री अरहनाथस्य 'कुंथ्वादि' त्रिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ के शिष्य 'विशाखा', कर्म मल्ल को मारें।
अट्ठाइस गुरुओं के सम्मुख, कर्म शत्रु खुद हारे।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री मल्लिनाथस्य 'विशाखाचार्यादि' अष्टाविंशति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपानीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत से दिव्य महाव्रत, 'धारिण' गुरु ने धारा।
ऋद्धि प्रदाता अठदस गुरु ने, उसको ही स्वीकारा।। चौदह..।।20।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री मुनिसुव्रतनाथस्य 'धारिणादि' अष्टादश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमि जिनवर की धर्म सुधा को, 'सोमादि' गुरु पीते।
उसको पीकर सतरह गुरु भी, यम वैरी को जीते।। चौदह..।।21।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री नमिनाथस्य 'सोमादि' सप्तदश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमीनाथ की धर्म धुरा को, धारें 'वरदत्तादी'।
सिद्धी विधाता ग्यारह गुरु भी, हरते आधि उपाधी।।
चौदह सौ बावन गणधर की, भक्ति आपदा नाशे।
ऋद्धि-सिद्धि वा सौख्य दिलाये, केवलज्ञान विकासे।।22।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री नेमीनाथस्य 'वरदत्तादि' एकादश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वयंभवादि' पार्श्वनाथ संग, स्वयं सिद्ध पद पायें।
उन युत दस गुरु विघ्न विनायक, प्रभु को शीथ नवायें।। चौदह..।।23।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री पार्श्वनाथस्य 'स्वयंभवादि' दश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'इन्द्रभूति' जिन इन्द्र युक्ति से, वीर शरण में आये।
ग्यारह गणधर परम पुण्य से, वीर वचन अपनायें।। चौदह..।।24।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री महावीरनाथस्य 'इन्द्रभूत्यादि' एकादश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

आदिनाथ से महावीर तक तीर्थंकर सुखकारी।
उनके चौदह सौ बावन हैं, गणधर ज्ञान प्रचारी।।
वृषभसेन से इन्द्रभूति तक, सब गणधर को ध्यायें।
मनहर अर्घ चढ़ाकर हम सब, रत्नत्रय गुण पायें।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां श्री वृषभसेनादि एक सहस्र चतुर्शतक द्विपंचाशत गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- क्षीरोदक ले कलश में, गुरु पद धारा देय।
पुष्पाञ्जलि अर्पित करें, रत्नत्रय गुण लेय।।

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- ऋद्धि-सिद्धि दातार हैं, श्री गणधर भगवान।
उनकी जय गुण मालिका, करें स्वपर उत्थान॥

(शंभु छंद)

जय-जय गणधर गुणमणि आकर, तुम तीर्थंकर पथधारी हो।
चौंसठ सुऋद्धि के धारक तुम, द्वादश अंगों के धारी हो॥
निज-निज तीर्थंकर जिन सम्मुख, तुमने मुनि पद को पाया है।
तप त्याग विशुद्ध भावना से, सब ऋद्धि-सिद्धि को पाया है॥1॥

पूर्वार्जित निज अति सुकृत से, तुम मुनि गण के आचार्य बने।
जिन रवि किरणों के धारक हो, गुरु सर्वोत्तम श्रमणार्य बने॥
गणधर-गणीन्द्र-गण के नायक, मुनि गणपति-विघ्न विनायक हो।
अघ रोग-शोक संकटहर्त्ता, भव्यों के भाग्य विधायक हो॥2॥

तीर्थंकर जिन की धर्मसभा, द्वादश कोठों में भाजित है।
उसमें मुनिगण के कोठे में, गणनायक नित्य विराजित हैं॥
तीर्थंकर दिव्य वचन पावन, ओंकार रूप में आते हैं।
दिनकर की किरणों के जैसे, गणधर में आन समाते हैं॥3॥

जिन वचन महोदधि गूढ़ सरस, शत इन्द्र समझ नहीं पाते हैं।
द्वादश अंगों व पूर्वों में, गणि उनको सुमन बनाते हैं॥
गणधर गुंथित जिन आगम ही, बहु प्रज्ञादीप जलाता है।
निज-निज भवांत कर भवि प्राणी, इससे रत्नत्रय पाता है॥4॥

फिर कर्म नशा गणधर स्वामी, अरिहंत सिद्ध पद पाते हैं।
तब त्रिभुवन वासी उत्सव से, अतिशायी भक्ति रचाते हैं।।
हे जिन यती ! 'गुप्तिनंदी' भी, तव गुण में ध्यान लगाता है।
शिव राज आप सम पाने को, उत्तम जयमाला गाता है।।5।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः सर्व गणधर परमेष्ठिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

जिनभक्त निर्मल भाव से 'गणधर वलय' पूजन करें।
त्रैलोक्य सुख पा जाये वो सुर-नर उन्हें वन्दन करें।।
फिर धर क्षमादिक् धर्म को शिवराज वे पा जायेंगे।
त्रय 'गुप्ति' का व्रत पूर्णकर भवदुःख कभी ना पायेंगे।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

प्रशस्ति

(शंभु छन्द)

मैं पंच परम परमेष्ठी वा, श्री श्रुतदेवी को नमन करूँ।
गणधर वा पूर्वाचार्यों को, नित नमन करूँ अघ वमन करूँ।
इस भरत क्षेत्र में इस युग में, वृषभादि वीर तीर्थेश हुए।
उनके कुल चौदह सौ बावन, ऋद्धिधर श्रेष्ठ गणेश हुए।।1।।

महावीर प्रभु के शासन में, श्रुत लेखक बहु आचार्य हुए।
श्री भद्रबाहु, धरसेनादिक और कुन्दकुन्द आचार्य हुए।।
उनकी परम्परा अक्षयशः, महावीर कीर्ति गुरु तक आयी।
उनने बहु दीक्षायें देकर, मुनिद्रुम की शाखा फैलायी।।2।।

उनके अनुचर कुन्थुसिन्धु, मम दीक्षा गुरु आचार्य बनें।
उनसे दीक्षित श्री कनकनन्दी, मम शिक्षा गुरु आचार्य बनें।।

द्वय गुरु की दीक्षा शिक्षा ने, मेरा निश्चय उद्धार किया।
निज सम आचार्य बना गुरु ने, पुनि-पुनि मुझ पर उपकार किया॥3॥

गणिनी राजश्री अम्ब रचित, श्री गणधर वलय महापूजा।
अतिशीघ्र जगत् विख्यात हुआ, उसके सम ग्रन्थ नहीं दूजा॥
उसके सम्पादन का सुयोग, मुझ अल्प बुद्धि मुनि ने पाया।
निज संघ सृजन कुछ ग्रन्थ सृजन, उस शुभ फल से ही कर पाया॥4॥

श्री रत्नत्रय विधान वृहत्, श्री नवग्रह शांति विधान रचा।
श्री मज्जिन पंचकल्याणक शुभ, लघु गणधर वलय विधान रचा॥
गणिनी राजश्री माता ने, इसका सम्पादन सरल किया।
रस-छन्द-अलंकारों द्वारा, हर कृति को सुन्दर सरल किया॥5॥

रवि-शशि जब तक नभ में विचरे, तब तक यह श्रेष्ठ विधान रहे।
निर्विघ्न सुसंयम साधन हित, हर दीक्षुक आद्य विधान करें।
निज कर्म नाश, शिव सदन वास, बोधी समाधि का लाभ मिले।
मुझ 'गुप्तिनंदी' की आस यही, जिन भक्ति में यह कलम चले॥6॥

दोहा

अल्पबुद्धि मुझको नहीं, छन्द काव्य का ज्ञान।
भक्तिभाव के वश लिखा, गणधर वलय विधान॥
रत्नत्रय विधान सम, है इसका इतिहास।
शोध-बोध जिन भक्ति कर, पाओ मोक्ष निवास॥

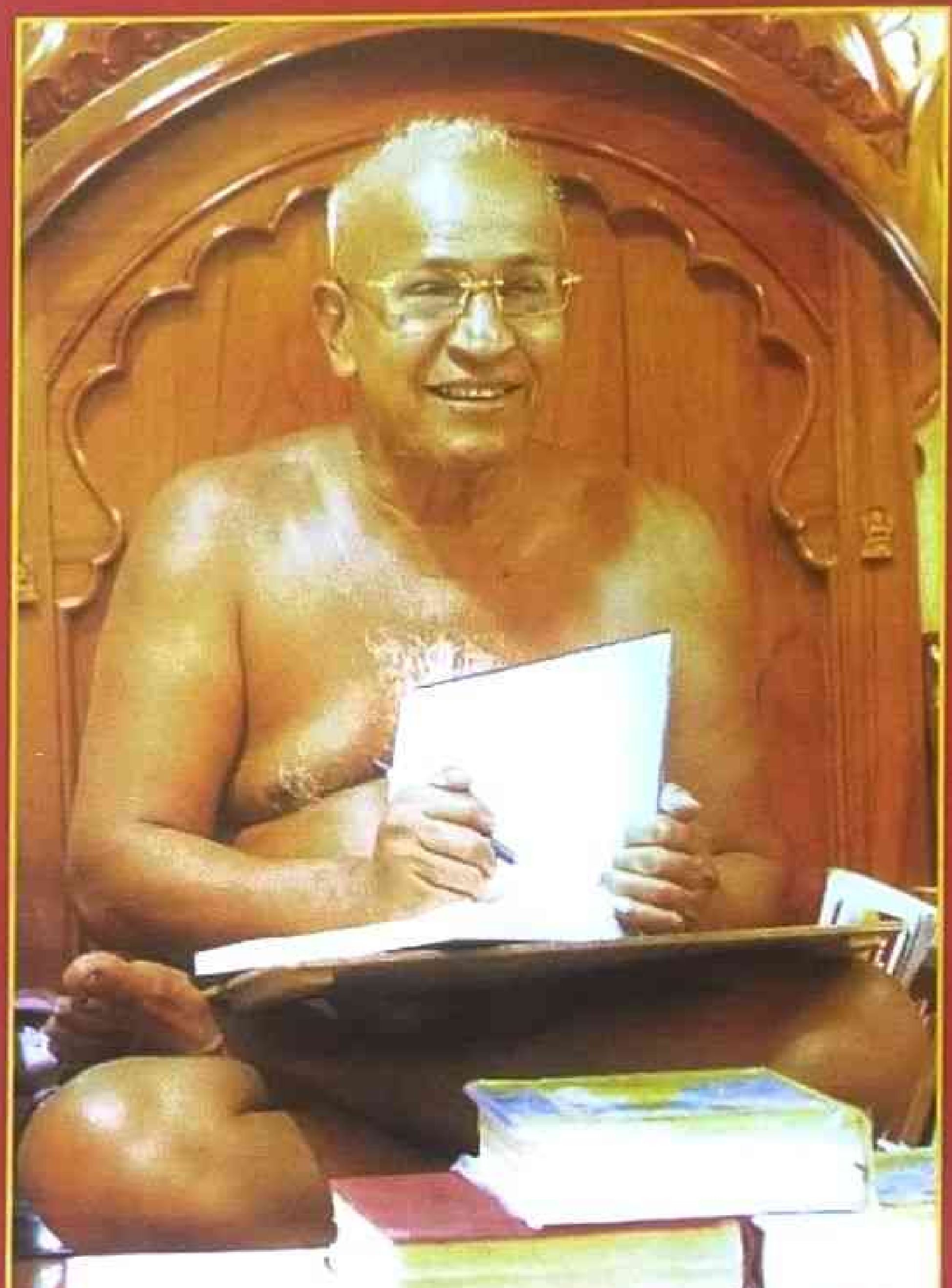

गणाधिपति गणधर
आचार्य श्री 108 कुंथुसागर जी महाराज